DUE DATE SLIP

GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for tw
weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE

गान्धीसूक्तिमुक्तावली

Selected Sayings of

MAHATMA GANDHI

in

Sanskrit Verse with the original

चिन्तामण द्वारकानाथ देशमुख
इत्येतैर्गुम्फिता

Rendered by
Chintaman Dwarkanath Deshmukh

Foreword by
C. RAJAGOPALACHARI

प्रकाशक
गान्धी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली–१

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली-१

पहली बार : १९६०
अल्पमोली-संस्करण
मूल्य : अढ़ाई रुपये

मु
हिन्दी प्रिंटिंग प्रे
दि

INTRODUCTION

A few years ago Shri M. K. Krishnan of Coimbatore kindly sent me a copy of 'Thus Spake The Mahatma (III Series)' a collection of Gandhiji's 'Worthy Words of Wisdom', compiled 'For the Love of Him', with, 'the kind permission of the Navajivan Trust, Ahmedabad'. I often carried the booklet in my pocket, and about a year ago, during my journeys, which have grown more numerous of late, the idea occurred to me that a translation in Sanskrit verse of selected sayings out of this labour of love would be worthwhile. The first attempts were regarded as worthy of encouragement by friends competent to judge translation into Sanskrit verse. I, therefore, completed a Satak (a hundred stanzas) and thought that this form and size would not be unwelcome to the public.

I owe a deep debt of gratitude to Shri C. Rajagopalachari, for his Foreword. The seal of his approval means much for any writing. The suggestion that I should offer the collection to the Gandhi Smarak Nidhi (Gandhi Memorial Trust) is also his.

प्रकाशकीय

डा. सुशीला नैयर को वर्षों बापू के साथ रहने और उनका स्नेह एवं विश्वास पाने का दुर्लभ अवसर मिला था। आगाखां महल के बन्दी-काल में भी वह बापू के साथ थीं। महादेवभाई के देहावसान के बाद बापू ने उनसे कहकर प्रतिदिन की छोटी-बड़ी घटनाओं की डायरी रखवाई। कारावास के उन इक्कीस महीनों की कहानी भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंग है और हम बापू के आभारी हैं कि उन्होंने उन पौने दो वर्षों की अनेक शिक्षाप्रद और, हृदय-ग्राही घटनाओं को विस्मृति के गर्त्त में विलीन होने से बचा दिया। पुस्तक के अधिकांश भाग को स्वयं देखकर उसमें संशोधन करके उसकी प्रामाणिकता पर उन्होंने अपनी मोहर भी लगा दी।

अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद ने इस पुस्तक की भूमिका लिख देने की कृपा की, तदर्थ हम उनके आभारी हैं। बापू ने लेखिका को वचन दिया था कि वह स्वयं भूमिका लिख देंगे, लेकिन ईश्वर को वह मंजूर न था।

पुस्तक को 'मण्डल' द्वारा प्रकाशित कराने का श्रेय भाई श्यामलालजी (कस्तूरबा, ट्रस्ट वाले) को है। अतः हम उनका तथा पुस्तक को आद्योपांत ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन करने के लिए श्री प्यारेलालभाई का विशेष रूप से आभार स्वीकार करते हैं। डायरी की प्रतिलिपि करने और सम्पादन में योग देने के लिए हम अपने स्नेही मित्र श्री काशिनाथ द्विवेदी तथा श्री भास्करनाथ मिश्र को भी धन्यवाद देते हैं।

चित्रों के लिए हम सर्वश्री वीरेन गांधी, कनु गांधी, ललितगोपाल प्रभृति बन्धुओं और बंबई के 'सेंट्रल फोटोग्राफ्स' व 'इंटरनेशनल बुक हाउस' तथा लंदन की 'दी एसोशिएटेड प्रेस ऑव ग्रेट ब्रिटेन लिमि.' के अनुगृहीत हैं।

पुस्तक इतनी उपयोगी है कि वह अधिक-से-अधिक पाठकों के हाथों में पहुंचनी चाहिए। इसी उद्देश्य से पुस्तक का यह इतना सस्ता संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

हमें विश्वास है कि इस लोकोपयोगी पुस्तक का व्यापक प्रसार होगा।

FOREWORD

This is a 'string of pearls' gathered from the inspired utterances of the saint of our time, *the Father of the Nation, Mahatma Gandhi* of beloved memory. The Sanskrit rendering is as beautiful as it is faithful to the original. The casing of verse that has been given to the precious substance fits it with aesthetic perfection as a pomegranate holds its ruby seeds.

Shri Chintamani Deshmukh has done most valuable service to the cause of religion and the moral law by this Sanskrit metrical rendering of Mahatma Gandhi's words of wisdom. Translation is always a difficult art but Shri Deshmukh has achieved remarkable success and has made a substantial contribution to Sanskrit literature in a form which places it along with the classics of that type.

C. Rajagopalachari.

Madras,
30-1-1957.

प्रस्तावना

१५ अगस्त की रात को महादेवभाई की मृत्यु के बाद एक मेज के खाने में से मुझे चंद कागज के पुर्जे मिले। उनपर महादेवभाई ने ६ अगस्त से लेकर रोज दिन की मुख्य घटनाएं अपनी याद ताजी करने के लिए दो-दो चार-चार लाइनों में लिखी थीं। उसी कागज पर १४ तारीख के नीचे मैंने १५ अगस्त को, महादेवभाई के महाप्रयाण की, घटना के बारे में मुख्य बातें नोट कर डालीं।

महादेवभाई के एकाएक चल देने के बाद सारी रात आंखों में कटी। बापू भी रातभर सो नहीं सके। १६ की सुबह की प्रार्थना के समय उन्होंने मुझसे कहा "महादेव का जितना बोझ उठा सकती है, उठा ले। आज से तुझे नियमित डायरी रखना होगा। याद रख, एक दिन ये डायरियां छपनेवाली हैं।"

नियमित डायरियां रखने का मैंने प्रयत्न किया। जो भी लिखती थी वह बापू पढ़ जाते थे। जो सुधारने-जैसा लगता सुधार डालते थे। कई बार मुझे बापू का इतना समय लेना खटकता था। मगर उनकी उदारता और प्रेम का पार न था।

दिल्ली में आखिरी दिनों में सुबह प्रार्थना के बाद वह अक्सर हम लोगों से चिट्ठियों का जवाब लिखवाते या लिखने को कहते। एक दिन मुझे कुछ पत्र दिये। एक पत्र था बापू के पुराने साथी के पुत्र का। उन्होंने पूछा था कि अब हिन्द आजाद होगया है। अब खादी पहनने की जगह विलायत से लाये कपड़े पहनने में क्या हर्ज? इत्यादि। वह विलायत से कुछ कपड़े लाये थे। नये खादी के कपड़े खरीदने की जगह विलायत से लाये कपड़े पहनें तो कपड़े की बचत होगी। देश में कपड़े की कमी है, वगैरा-वगैरा। बापू कहने लगे, "इसे लिखो कि मुझसे पूछ-पूछकर कबतक चलोगे? मैं तो कभी नहीं कहनेवाला कि खादी छोड़ो। सच्ची आजादी तो आई भी नहीं। मगर आजादी आ जाने पर खादी को छोड़ना, जिस सीढ़ी से ऊपर चढ़े, उसे फेंक देने जैसा होगा। मगर मैं कहूं, वह मेरा धर्म है, तुम्हारा नहीं। अपना पिता कहे" "वह धर्म पुत्र भी स्वीकार करे, यह आवश्यक नहीं है। अपने-आपको सूझे, वही व्यक्ति का धर्म है। हां, अपवाद एक है, गुरु। अगर गुरु कहे तो वह धर्म-पालन आवश्यक है।" मैंने कहा, "बापू, आप तो सबके लिए गुरु के स्थान पर हैं न, इसीलिए सब आपको पूछते हैं।" बापू बोले, "ऐसा हो तो गुरु के साथ दलील नहीं करनी पड़ती। उसका कहना अपने-आप हृदय में उतर जाता है।"

इतना कहकर बापू लेट गये। साढ़े तीन बजे उठकर प्रार्थना के बाद कुछ समय काम करके वे आधा-पौना घंटा फिर आराम लिया करते थे। मैंने उन्हें कम्बल ओढ़ाया और पीठ और पांव दबाने लगी। उनकी आंखें बन्द थीं। सिर पर सफेद खादी का रूमाल ओढ़े थे। मैं समझी, सो गये हैं, मगर उनके मन में यही विचार-धारा चल रही थी। क्षणभर बाद धीमे-से बोले :

"तने एकलव्य नी वार्ता याद छे (तुझे एकलव्य की कथा याद है?)" इस

गान्धीसूक्तिमुक्तावली

GANDHISUKTIMUKTAVALI

तब सत्ताधारी राजा हो या पूंजीपति, विदेशी सरकार हो या देशी सरकार, उसे वह पूरी करनी ही पड़ती है। जो कानून प्रजा की मांग से बनते हैं उनका बोझ प्रजा पर नहीं पड़ता। जब कानून ऊपर से बनाये जाते हैं तब उनका बोझ प्रजा को कुचल सकता है। मगर प्रजा की मांग सच्ची होनी चाहिए। प्रजा को अपना धर्म समझना और उसका पालन करना चाहिए। वह मानते थे, अपना धर्म पालन करनेवालों को ही हक मांगने का अधिकार है।

बापू की कल्पना के आदर्श सत्ताधीश कैसे होने चाहिए, यह विषय भी अत्यन्त रोचक है। बापू की कल्पना में सत्ताधीश लगभग पूर्ण पुरुष होना चाहिए। उसे सर्वथा निःस्वार्थ, सत्यमय, अहिंसामय, सततजाग्रत, संयमी, अपरिग्रही, प्रात्म-त्यागी, सांसारिक लोभ और सत्ता-मोह से मुक्त, विनम्र और प्रजा का मुख्य चाकर बनकर रहनेवाला होना चाहिए। ऐसे सत्ताधीश को सत्ता खोजनी नहीं पड़ती, सत्ता अपने-आप उसे खोज लेती है।

दिल्ली में आखिरी दिनों में एक दिन सुबह घूमते समय बापू से मैंने पूछा, "बापू, आपने कहा है, आप दरअसल समाज-सुधारक हैं। विदेशी राज में आप अपना काम नहीं कर सकते थे, इसलिए आपको राजनीति में पड़ना पड़ा। अब विदेशी राज चला गया है। क्या अब आप अपना समय रचनात्मक कार्य में लगा-येंगे? समाजसुधार में अपनी सारी शक्ति खर्च करेंगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "अगर मैं इस अग्नि-परीक्षा में से निकला तो मुझे पहले राजनीति की सुधारना होगा।" राजनीति सत्य और अहिंसा के आधार पर चल सकती है। धर्म से वह अलग या भिन्न नहीं, यह बापू की सबसे बड़ी खोज रही।

मगर जीवन का आधार सत्य और अहिंसा बनाना है तो बचपन से ही बच्चे की तालीम उसी तरह की होनी चाहिए। सो उन्होंने नई तालीम हमारे आगे रखी। जनसाधारण को आबाद होना है, लूट से, शोषण से बचाना है तो विकेन्द्री-करण का सिद्धान्त स्वीकार करना होगा। छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों को बढ़ाना होगा। बड़ी-बड़ी फैक्टरियां बनाने से सत्ता थोड़े लोगों के हाथों में चली जाती है, वे सत्ताधारी भले ही पूंजीपति हों या सरकार। बापू को वह स्वीकार न था। सो उन्होंने हमारे सामने ग्राम्य जीवन, ग्राम्य उद्योग का आदर्श रखा, चर्खा रखा, सारा-का-सारा रचनात्मक कार्यक्रम रखा।

बापू की तपश्चर्या हमारी मार्गदर्शक बने! ईश्वर हमें उस महापुरुष के देश-वासी होने के लायक बनावे! उनके बताये मार्ग पर चलने की शक्ति दे, यही प्रार्थना है।

बाल्टीमोर, मेरीलैण्ड,
अमरीका

—सुशीला नैयर

उत्कटोऽय विमलो मनोरथो
यो भवेत्स परिपूर्यतें सदा।
शश्वदस्य नियमस्य सत्यतां
दृष्टवाननुभवेऽहमात्मनः ॥१॥

मतयोर्न विसंवादो
मन्तव्यो वैरसन्निभः।
नो चेद् भार्या ममाहं च
स्यावान्योन्यस्य वैरिणो ॥२॥

४३. अहिंसा का बाह्य चिह्न : चरखा २७१
४४. हिंसा के बीच अहिंसा २७३
४५. जेल में बापू का दूसरा जन्म-दिन २८५
४६. सच्चा धर्म २९६
४७. भाभी का आपरेशन और मृत्यु ३०५
४८. बा के बारे में चिंता ३११
४९. अहिंसा में विचार-शुद्धि ३२१
५०. बा की हालत बिगड़ी ३२५
५१. अंतिम रात्रि ३३७
५२. बा का देहावसान और अंत्येष्टि ३४३
५३. वियोग-वेदना ३५१
५४. फिर अपने-अपने कर्त्तव्य पर ३५८
५५. मीराबहन की आश्रम-योजना ३६४
५६. अंग्रेजों की नीति ३६५
५७. बा की स्मृति ३६९
५८. असंतोष और प्रगति ३७१
५९. बा के बारे में सरकार की सफाई ३७३
६०. जेल में दूसरा राष्ट्रीय सप्ताह ३७६
६१. बापू को मलेरिया ३८४
६२. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ३८८
६३. सरकार की चिंता ३९३
६४. रिहाई की खबर और रिहाई ३९७

न बुद्बुदसमाः स्वप्ना
अकिंचित्सदृशा मम ।
उदर्कंपरमार्थास्तां–
श्चिकीर्षामि यथाबलम् ॥३॥

महात्मत्वात्प्रेयो भवति मम सत्यं न्वतितमां–
न तद्धाराद्भिन्नं मम निजविशून्यत्वपरिघेः ।
स्वकीयानां सीम्नामथ परिचयो मे विहितवान्
महात्मत्वोत्पीडाभरपरिहृतिं यावदधुना ॥४॥

लेखिका बापू के साथ

मां श्रीकृष्णप्रतिम इव ये भासयन्ते मता मे
ते पाखण्डा, ननु लघुतमः कार्यवाहोऽहमस्मि ।
कार्ये तस्मिन्महति बहवः सन्ति तेष्वस्मि चैकः–
स्तश्रेतॄणां महिमकथनाल्लाभतो हानिरेव ॥५॥

न वेद जगतो कियन्महिमतो ममालम्बते
तथाकथिततः कदाप्यविरतान् श्रमान् दासवत् ।
विशुद्धमनसां क्रियारतिमतां नृणां योधितां
स्वकार्यपटुतावतां निभृतकार्यचिन्ताभृताम् ॥६॥

बापूजी के कमरे में घुस गई। मेरे पांवों में जूते थे। भाई मुझे भगा देना चाहते थे, मगर बापूजी ने रोका और जूते निकालकर आने की आज्ञा दी। आई, तो उन्होंने अपनी गोद में बिठा लिया। वह मां से कह रहे थे कि तुम भी अपने लड़के के पास क्यों नहीं आ जातीं? मां ने कहा, "घर-बार छोड़कर कैसे आ सकती हूं?"

बापू ने हंसते-हंसते, मगर करुण स्वर में, उत्तर दिया, "मेरा भी घर था।" फिर मेरे सिर पर हाथ रखकर कहने लगे, "यह लड़की मुझे दे दो।" मां बोलीं, "यह तो मुझसे न हो सकेगा।" फिर बापू मेरे मिल के कपड़े की हंसी उड़ाने लगे। बोले, "देखो न, इस छोटी-सी लड़की को भी विदेशी कपड़ा पहनाया है! क्या बात है?" मां बचाव करने लगीं, "नहीं, स्वदेशी है।" उससे बापू को संतोष होनेवाला नहीं था। मैं यह संवाद सुन रही थी। उस समय खद्दर की मीमांसा मेरी समझ से बाहर थी, मगर न पहनने योग्य कपड़ा पहना है, यह समझकर मुझे अंदर-ही-अंदर बड़ी शरम-सी लग रही थी।

जब मैं बारह साल की हुई, तो मैट्रिक की पढ़ाई के लिए माताजी के साथ लाहौर चली आई। स्कूल में भर्ती हुए बिना मैट्रिक पास करके मैं कालेज में इंटर (सांइन्स) में दाखिल होगई। भाई ने कई बार चाहा कि मुझे अपने साथ साबरमती-आश्रम ले जायं; लेकिन माताजी राजी न होती थीं।

किन्तु प्रारब्ध के आगे किसीकी नहीं चलती। १९२९ की गरमी की छुट्टियों में हम दिल्ली गये हुए थे। भाई वहां आये और फिर मुझे अपने साथ ले जाने की अपनी पुरानी बात चलाई। इस बार माताजी मान गईं। उस समय से लेकर मैं कभी-कभी गरमी की छुट्टियों में भाई के पास आश्रम में चली आया करती थी।

लेडी हार्डिंग कालेज से डाक्टरी का इम्तहान पास करके मैं शिशु-पालन और प्रसूति-विषयक विशेष शिक्षा के लिए कलकत्ता चली गई। इत्तफाक से बापूजी उस समय बंगाल के नजरबन्दियों को छुड़ाने के लिए कलकत्ते आये। श्री शरद बोस के यहां वुडबर्न स्ट्रीट पर उन्हें ठहराया गया था। वहां कांग्रेस महासमिति (ए. आई. सी. सी.) की बैठक भी थी। बापू को रक्तचाप बढ़ने की शिकायत तो रहती ही थी, ए. आई. सी. सी. की बैठक में उन्हें बहुत थकान लगी। उसी रोज वर्धा वापस जा रहे थे। सामान वगैरा स्टेशन पर जा चुका था। बापूजी बैठक से बाहर आये। गद्दी पर बैठे, फल के रस का गिलास हाथ में लिया, इतने में उन्हें चक्कर-सा आ गया। मैंने तुरन्त डा. विधान राय वगैरा को बुलाया। मैंने मां से सुना था कि लहू का दबाव बढ़ने पर भी मेरे पिताजी बाहर चले गये थे। रास्ते में उनकी नस फूट गई थी और वह चल बसे थे। सो मैं समझी कि बापूजी इतने थके हैं, जरूर लहू का दबाव बढ़ा होगा। उन्हें आज सफर नहीं करना चाहिए। डा. विधान राय ने देखा, तो सचमुच लहू का दबाव बहुत बढ़ा था। सो उस दिन बापूजी का जाना रुक गया। कुछ दिनों बाद जाने का समय आया, तब भी उन्हें अकेले सफर करने की इजाजत

एतन्मामकगौरवस्य शिखरं स्निग्धैः कृतस्यास्ति मे
यत्ते स्वार्थाय योजयेयुरचलाः कार्यक्रमान्यानहम् ।
संसेवे, यदि नो भवेयुरथवा तत्र प्रदत्तादरा
यावच्छक्ति विरोधिभिर्मम सदा संवर्तितव्यं
हि तैः ॥७॥

सीमानामात्मनो ह्यस्ति
संविन्मामकमानसे ।
हृदिस्था सैव संविन्मे
केवला शक्तिशालिता ॥८॥

: २ :

'भारत छोड़ो'-प्रस्ताव और गिरफ्तारियां

बिड़ला-हाउस, बम्बई
८ अगस्त, १९४२

८ अगस्त की शाम को करीब ५॥ बजे जब बॉम्बे सेंट्रल पर गाड़ी से उतरी तो स्टेशन पर मुझे लिवाने के लिए कोई आया नहीं था।

मैं स्टेशन से बाहर आई। दो टैक्सियां खड़ी थीं। टैक्सीवालों ने किराये पर तंग करना शुरू किया। आखिर एक शरीफ आदमी ने स्टेशन के बाहर जाकर मीटर के हिसाब से टैक्सी ला दी।

बिड़ला-हाउस पहुंचीतो भाई बापू, महादेवभाई–सब कांग्रेस महासमिति की बैठक में थे। बा वगैरा यहां थे। यहां मेरा तार नहीं पहुंचा था, इसलिए मुझे देखकर सबको आश्चर्य हुआ।

मैंने बैठक में जाने की इच्छा प्रकट की। झटपट स्नान किया। खाना परोसा ही गया था कि मोटर लेने को आ गई। दो केले हाथ में लेकर मोटर में जा बैठी। पंडाल में पहुंची तो 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर मत लिये जा रहे थे। 'वोटिंग' पूरा हुआ। बापू का भाषण शुरू हुआ। बापू पूरे २। घंटे एक सांस में बोले। अद्भुत भाषण था और बापू की वाणी में और दलील में अद्भुत शक्ति थी। भाषण पूरा हुआ। बापू उठे। मैंने प्रणाम किया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई। बोले, "तो तू ठीक मौके पर पहुंची।" वल्लभभाई मिले। कहने लगे, "कल आती तो एक और काम का भाषण सुन सकती थी।" पिछले दिन बापू का जो भाषण हुआ था, उसीकी ओर सरदार का यह इशारा रहा होगा।

बापू, वल्लभभाई, महादेवभाई और मणिबहन के साथ में मोटर में बैठी। भाई दूसरी मोटर में आये। बापू समय पूछने लगे। उस समय रात के सवा दस बजे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ। उनको कल्पना तक नहीं थी कि वह सवा दो घंटे बोले हैं। कहने लगे, "जब मैं बोलने को उठा था, मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कहनेवाला हूं। अब मेरी समझ में आ रहा है कि कल रात मैं क्यों नहीं सो सका। मेरे मन पर बोझ था कि इतना कहना है, कैसे कह पाऊंगा। मगर मैंने सोचा, अगर ईश्वर को मुझसे कुछ कहलाना होगा तो वह मेरी जबान खोल देगा, वरना मैं तो इस बात के लिए भी तैयार था कि सिर्फ यही कहकर बैठ जाऊं कि 'मुझे कुछ सूझता नहीं, मैं आपसे क्या कहूं?' लेकिन ईश्वर ने मेरी जबान खोल दी। मैं मानता हूं कि ईश्वर ही मुझसे बुलवा रहा था। क्षण-भर के लिए तो मुझे यह भी डर लगा कि कहीं आज मेरा खातमा तो नहीं हो जायगा! लेकिन फिर सोचा, ईश्वर को मुझसे काम करवाना है तो वह खुद शक्ति देगा और उसने दी भी। आज मैंने करीब-करीब सभी मतलब

न यज्ञबलितां प्रति प्रयतते मनो मे हठात्
परन्तु पथवर्तिनी यदि भवेत् समाराधने ।
स्वधर्मपरिरक्षणे परतमस्य कार्यस्य सा
जनो गणयतां मया यदियमस्ति साभ्यर्जिता ॥९॥

निवार्यन्ते सद्यः परिहरणकामेऽपि न जने
भवेत्स्येतादृक्षा जगति तु पदार्थाः कतिपये ।
इयं कारारूपा जनिविषसमा पार्थिवतनुः
परन्त्वस्यां क्षान्तिर्ह्यपि च मम
तुष्टिर्गतवशम् ॥१०॥

एक बजे मैं अपने बिस्तर पर गई। भाई महादेवभाई के साथ कुछ देर बातें करते रहे। शहर में बहुत जोरों की अफवाह थी कि बापू को सुबह ही पकड़ लेंगे। फोन-पर-फोन आ रहे थे। भाई ने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, कल हम क्या करेंगे ?" महादेवभाई बोले, "फिकर क्यों करते हो, हाथ-में-हाथ मिलाकर हम एक साथ बाहर निकल पड़ेंगे और भगवान हमको कुछ-न-कुछ करने की शक्ति दे ही देगा।"

बिड़ला हाउस, बम्बई
९ अगस्त '४२

सुबह चार बजे जब सब प्रार्थना में आये तो महादेवभाई ने कहा, "रात दो बजे तक फोन मुझे सताता रहा। दो बजे बाद में सोया। बस, यही चल रहा था कि गिरफ्तारी का सारा इंतजाम हो गया है। वे पकड़ने आ रहे हैं, वगैरा।" इसपर बापू कहने लगे, "नहीं, कल के मेरे भाषण के बाद तो मुझे गिरफ्तार कर ही नहीं सकते। मैं उनको इतना मूर्ख नहीं मानता।" फिर बोले, "अगर इसके बावजूद भी मुझे पकड़ें तो इसका मतलब यह होगा कि उनके दिन पूरे हुए हैं।"

प्रार्थना के बाद मैं आकर बिस्तर पर लेट गई। तीन रात से रात को दो-एक घंटे की नींद मिली थी। बापू शौच को गये। मैंने भाई से कहा, "जब बापू घूमने को तैयार हों, मुझे जगा दीजिये।" मैंने अभी चादर ओढ़ी ही थी कि महादेवभाई अन्दर आये और बोले, "बापू, बापू, पकड़ने आ गये!" बापू को गुसलखाने में ही खबर दी गई। उन्होंने पुछवाया, "तैयारी के लिए कितना समय देंगे ?" पुलिस कमिश्नर ने कहा, "आध घंटा।" बापू ने वारंट देखे। महादेवभाई, मीराबहन और बापू के नाम भारत-रक्षा कानून के मातहत नजरबन्दी के नोटिस थे। भाई और बा के लिए लिखा था कि वे भी चाहें तो बापू के साथ उन्हीं शर्तों पर चल सकते हैं। बापू ने बा से पूछा, "तू न रह सकती हो तो चल। लेकिन मैं खुद तो यह चाहता हूं कि तू बाहर रह, सेवाग्राम जा, मेरा काम कर।" भाई से भी यही कहा। बोले, "मैं तो यह कहूंगा कि योंही मत आओ। काम करते-करते पकड़ लें तो बात अलग है।" फिर एक सूचना की, "हरएक सिपाही अपने कंधे पर 'करो या मरो'[1] का बिल्ला लगा ले, ताकि आजादी का एक-एक सिपाही, जो अहिंसात्मक रूप से मरे, उसपर निशानी के तौर पर ये शब्द मौजूद हों।"

बापू ने नाश्ता किया। बिड़लाजी वगैरा ने कुछ सवाल पूछे। बापू ने कहा, "इन सवालों का उत्तर कल शाम के भाषण में धनिकों के लिए मैंने जो कहा है, उसमें आ जाता है।" बाद में घनश्यामदासजी ने कहा, "बापू, उपवास की जल्दी न कीजियेगा।" बापू ने कहा, "नहीं, मैं जल्दी करना ही नहीं चाहता। जहांतक हो

[1] Do or die.

न कोप्याशास्तेऽहं मयि वसति दर्पः परमहं
निजं दौर्बल्यं यत्सकलमवगच्छामि ननु तत् ।
ध्रुवा मे श्रद्धेशे दयनसहिते तस्य च बले
कुलालस्यामुष्याहमपि करयोरस्मि मृदिव ॥११॥

तथा शरीरं मम दोषपात्रं
यथाऽत्यलिष्ठस्य नरान्तरस्य ।
तस्मादियं मे प्रतिपत्तिरस्ति
यथापरो भ्रान्तिपरस्तथाहम् ॥१२॥

चलते समय बिड़लाजी ने कहा, "ये लोग बकरी का आध सेर दूध मांगते हैं।" बापू ने हँसकर जवाब दिया, "चार आने रखवालो और दे दो।"

जब पुलिस आई थी, सन्नाटा था। मगर कौन जाने कहां से बात-की-बात में वहां एक हुजूम इकट्ठा हो गया। जब मोटर चली तो बिड़ला-हाउस के रास्ते पर लोगों की खासी भीड़ मौजूद थी। टेलीफोन कटे पड़े थे। रात को दो बजे से ही काट दिये गये थे। इसीलिए महादेवभाई दो बजे के बाद सो सके थे। फिर भी बापू की गिरफ्तारी की खबर शहर में बिजली की तरह फैल गई। बिड़ला-हाउस पर दस-के-दस लोग इकट्ठा होने लगे। कार्यकर्ता, मित्रगण, अखबारों के संवाददाता वगैरा सब चले आ रहे थे।

हम लोग किसी भी वक्त पकड़े जा सकते हैं, इस खयाल से हमने भी अपना सामान बांधना शुरू किया। मैंने थोड़ा-सा जरूरी सामान अपने बिस्तर में और अटैची केस में रख लिया। मेडिकल बैग (दवाओं की संदूकची) भी साथ में रख ली। मगर भाई को सामान बांधने की फुरसत कहां! मिलनेवाले आ रहे थे। मुश्किल से शाम तक वह अपना सामान बांध सके।

निश्चय हुआ कि बा भी आम सभा में भाषण करें। बा ने एक संदेश[1] बहनों के नाम और एक भाइयों और बहनों के नाम मुझे लिखवाया। भाई ने भी अपना एक छोटा-सा भाषण लिख डाला। उसमें आज सवेरे की घटना का वर्णन था और जनता से यह प्रार्थना की गई थी कि अब बापू को जेल से वापस लाना उसके हाथ में है। इतना सब याद रखें कि बापू दो चीजें अपने जीते-जी बरदाश्त नहीं कर सकेंगे—एक यह कि हिन्दुस्तान के लोग नामर्द बनकर बैठ जायं और दूसरे यह कि वे पागल बनकर अंग्रेज मर्दों, औरतों और बच्चों को काटना शुरू कर दें।

कोई दस बजे टेलीफोन आया। वर्धा का 'ट्रंक कॉल' था। भाई फोन पर बात करने लगे। किशोरलालभाई के साथ बात हो रही थी। भाई ने शुरू किया; "आज सवेरे...।" बस, सेंसर ने लाइन काट दी। बाद में दोपहर को फिर फोन मिला। वर्धा में पुलिस भाई की राह देख रही थी। विनोबा गिरफ्तार किये जा चुके थे। दूसरे भी, जिन्होंने पिछले सत्याग्रह में कुछ भी भाग लिया था, पकड़ लिये गये थे। भाई के नाम वारंट तैयार था। हमारा इरादा था कि आज यहां न पकड़े गये तो कल शाम को वर्धा जायंगे। माताजी वहां हमारी राह देख रही थीं। इस खबर ने जरा सोच में डाला। मगर सोच करने के लिए भी ज्यादा वक्त नहीं मिला। शाम को सरकार

---

[1] संदेश इस प्रकार था—"महात्माजी तो आपसे बहुत-कुछ कह गये हैं। कल उन्होंने ढाई घंटे तक महासमिति की बैठक में अपने दिल की बातें कहीं। उससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो उनकी सूचनाओं पर अमल ही करना है। बहनों को अपना तेज दिखाना है। सब कौमों की बहनें मिलकर इस लड़ाई को सफल बनायें। सत्य और अहिंसा का मार्ग न छोड़ें।"

वात्याहतास्वपि न्यक्कृतिमध्ये चाजये तथाकथिते
अलमहमात्मन्यवितुं शान्तिमान्तराद्दृतेश-
विश्वासात् ॥१३॥

मदीयमायुर्ह्यविभाज्यमेकं
मिथःप्रसारप्रवणाः क्रियाश्च ।
प्रीतिर्नृवंशे मम या न शाम्या
सा मत्क्रियाणां च निसर्गमूलम् ॥१४॥

करने लगा। बोला, "माजी, आपको घर में बैठना चाहिए। बहन, आपको सभा में नहीं जाना चाहिए," वगैरा। व्रजमोहन बिड़ला से न रहा गया। बोले, "क्या यह शिष्टाचार आवश्यक है?" इसपर वह हंसने लगा। बोला, "आप जाती ही हैं तो मैं आपको गिरफ्तार करता हूं।" बिड़लाजी की जो मोटर हमें सभा की जगह ले जानेवाली थी, उसीमें जेल के लिए हमारा सामान रख दिया गया। श्रीमती बिड़ला ने फिर आरती संजोई और हम दोनों के टीका निकाला।

मोटर चलने ही वाली थी कि पुलिस अफसर ने हममें से किसीकी बात को इधर-उधर से सुनकर अंदाज लगा लिया कि हमारे बाद भाई (प्यारेलालजी) सभा में जा रहे हैं। फिर क्या था! तुरन्त बोला, "तो आप भी आ जाइये।" भाई का सामान भी मोटर में रखा गया। चम्पाबहन ने उनके टीका निकाला और हम तीनों चले। घनश्यामदासजी भाई से कहने लगे, "अच्छा है, अब हमें तुम्हारे हाथ-पैर टूटने की फिकर नहीं रहेगी।" लेकिन हमारे मन में निराशा थी। तीनों में से एक भी सभा में पहुंच पाता तो अच्छा होता।

बाबला और कनु ने प्रणाम किया। आवला भाई सुबह ही कह रहा था, "प्यारेलाल काका, काका महादेवभाई अपना दुशाला भूल गये हैं। आप अपने साथ ले जाइये। उन्हें दे दीजियेगा।"

भाई से दोनों लड़कों ने पूछा कि ये क्या करें? भाई ने उनको सलाह दी कि वे जरूरी कागजात लेकर वर्धा चले जायं। कनु ने चलने से पहले मुझे और भाई को 'करेंगे या मरेंगे' का मंत्र लिखकर दिया। कहने लगा, "बस, मैं तो सैकड़ों-हजारों ऐसे कागज बाटूंगा। हनुमान की तरह लंका को सर करके पकड़ा जाऊंगा, यों ही नहीं।" बाबला भी उत्साह से भरा था। इस उत्साह से भरे वातावरण को लेकर वे दोनों हमारी गिरफ्तारी के बाद दूसरे दिन सेवाग्राम गये।

मोटर चली तो बा की आंखों में पानी था। सुबह भी जब बापू पकड़े गये, ऐसा ही हुआ था। उस समय भी मैंने बा को समझाकर आश्वस्त किया था। अब भी समझाया। बा को मैंने छुआ तो उनका शरीर गरम लगा। इस बीच मोटर आर्थर रोड जेल पर आ पहुंची। हम उतरकर नीचे खड़े हुए। सड़क पर कुछ मजदूर जा रहे थे। उन्होंने योंही झांककर देखा और अपनी राह चले गये। मैंने सोचा—क्या ये बा को नहीं पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

अहं मार्गाभिज्ञो भवति स ऋजुः किञ्च तनुरप्य-
सैर्धारिवेयं समुदमहमस्यां हितपदः ।
स्खलन्रोदिम्यैवं वचनमिदमाश्वसयति मां
कदाचिन्नश्येन्नाचरितदृढयत्नो ह्यवितयम् ॥१५॥

च्युतिर्यद्यप्यास्तां दशशतमिता मेऽवशतनोर्
न मे श्रद्धानाशो भवति परमाशासमुदयः ।
यदन्यस्मिन्कस्मिन्नपि नियतमहि्न प्रभुरहं
भवेयं देहस्य प्रतिनयनमेयान्मम महः ॥१६॥

और बा का घर का बिस्तर लगवाया।

बा को ९९.६ बुखार था। उन्हें बिस्तर पर लिटाया। ममा खाने को पूछने आई। बा को कुछ नहीं चाहिए था। मगर मुझको काफी भूख थी। दोपहर में तो दौड़-धूप की वजह से नहीं-जैसा ही खाया था, उससे अगले दिन भी ट्रेन में खाने का ठिकाना न था। मगर जेल में हमें खाना नियम के मुताबिक दूसरे दिन ही मिल सकता था। मैंने सोचा, इस वक्त इन्हें रोटी बनाने में कष्ट होगा। चलो थोड़ा दूध पीकर ही सो जायंगे। मुझे क्या पता कि जेल में दूध कितना दुर्लभ होता है! सो मैंने एक प्याला दूध मांगा। कुछ देर बाद एक छोटी-सी कटोरी में पानी-सा पतला कोई तीन औंस ठंडा दूध आ गया। बेचारे जेलर ने अपने घर से भेजा था। मैं उसी को पीकर लेट गई। बा सो गई थीं। शाम के साढ़े छः बजे होंगे, अन्धेरा होने लगा था। मैंने सोचा, बा उठें, तो प्रार्थना करें। किताब लेकर पढ़ने लगी और मैं भी सो गई। तीन रात से पूरी नींद नहीं मिली थी। रास्ते की थकान, तिसपर आज सुबह से वातावरण खूब उत्तेजित रहा था, उसकी भी थकान थी, लेटते ही नींद आ गई। रात में बा तीन-चार बार पाखाने गई। दूसरी या तीसरी दफा जब वह पाखाने से आ रही थीं, उनकी आहट से मेरी नींद खुली। वह लड़खड़ाकर चल रही थीं। मैं झट से उठी। उन्हें सुलाकर पढ़ने की कोशिश की मगर ए. आर. पी.[1] की वजह से बत्ती पर काला कागज चढ़ा था, जिससे खाट पर लेटे-लेटे पढ़ा ही नहीं जाता था और उठकर बैठने की इच्छा नहीं होती थी। सो मैं पड़ी रही। पहली रात ममा आई होगी। हमें सोता देखकर हमारे कमरे की बत्ती बुझा गई थी और हमें ताले में बन्द भी कर गई थी।

आर्थर रोड जेल
१० अगस्त '४२

सबेरे सात-साढ़े सात बजे ममा ने दरवाजा खोला। उससे पहले मैंने और बा ने हाथ-मुंह धोकर प्रार्थना कर ली थी। बा को आज भी बुखार था। कमजोरी भी बहुत थी। पतले दस्त हो रहे थे।

हम लोगों ने कल ही बापू की गिरफ्तारी के बाद उपवास करने का विचार किया था। मगर फिर तय हुआ कि उपवास अगले दिन किया जाय; क्योंकि कल-ही-कल सबको खबर नहीं दी जा सकती थी। सो आज मैंने उपवास किया। बा को उनकी 'वेजिटेबल टी' (खास जड़ी-बूटियों की चाय) का काढ़ा बनाकर दिया। उनके स्नान के लिए गरम पानी मांगा तो उसे आने में दो घंटे लगे। स्नान वगैरा से निबटकर बैठी थीं कि जेलर आया। बोला, "अभी मैं आपको अखबार भेजूंगा। जरा खुद देख लूं, ताकि कसम खाकर कह सकूं कि सेंसर करके दिये थे।" थोड़ी

[1] हवाई हमले से बचाव के निर्देश।

अपकर्षति मामान्तर एकत आत्मान्यतश्च जडदेहः ।
एतच्छक्तिद्वितयक्रियाप्रभावान्ममास्ति निर्मुक्तिः ।
सा निर्मुक्तिः परमधिगम्या संवर्तते न मार्गेण ।
अन्येनोज्झित्वा तानतिमन्दान् दुश्चरांश्च च
विच्छेदान् ॥१७॥

संन्यासेन न कर्मणामुपरितोनिर्मुक्तिमाप्स्याम्यहं
सामासंगविवर्जिता पटुकृतिः संसाधयेत्केवलम् ।
शूलार्तो परिणामवानविरतं संघर्ष एवं वपुष्वन्ते
यच्च्युतबन्धनः सकलतो भूयात्स आत्मा मम ॥१८॥

संभाल के लिए ज्यादा समय मिलता था, इसलिए दो-तीन साल से यही नौकरी कर रही थीं। पति मिल में नौकर थे। जेल की नौकरी में वेतन तो करीब ७५) मासिक या ऐसा ही कुछ था, लेकिन रहने को घर मिला हुआ था और काम हल्का था। इसलिए यह नौकरी उन्हें पसन्द थी।

दोपहर बारह बजे मेट्रन अपने घर चली गई, बा भीतर जाकर लेट गईं। मैं वहीं बरामदे में बैठकर पढ़ती रही। कोई चार बजे फिर दरवाजा खुला। मेट्रन थी। सिपाही किसीका बक्स और बिस्तरा ला रहा था। मैं उत्सुक होकर उठी। एक और बहन आई थी, नाम था श्रीमती सीतलदास। मैंने साथ जाकर उनका सामान रखवाया। फिर हम दोनों बा के पास जा बैठीं। शामको चार बजे मेरा और बा का खाना आया। मैं और श्रीमती सीतलदास दोनों खाने बैठीं। बा ने कुछ नहीं लिया। मेरे लिए थोड़ा-सा उबला साग आया था। बा के लिए जेल की मोटी रोटी, दाल, चावल, दूध और डबल रोटी आई। मक्खन भी था। हम दोनों ने बहुत कोशिश की, मगर वह खाना गले से उतारना कठिन था। एक-दो निवाले से ज्यादा निगल नहीं सकीं। थोड़ा-सा दूध ले लिया। उपवास के बाद ऐसी लूट से,मुझे तो मतली होने लगी।

मैंने मेट्रन के जाने से पहले ही अपना और श्रीमती सीतलदास का बिस्तर बरामदे में जमीन पर लगवाया। बा का खाट पर। जब मेट्रन आई, हमने कह दिया कि हम ताले में बन्द होकर नहीं सोयेंगी। वह बेचारी घबराई। जेलर के पास गई। उसने कहलवाया, "भले बरामदे में सोवें।"

करीब पौने नौ बजे मेट्रन आई। कहने लगी, "मैं तो जल्दी आई थी कि सोने से पहले आपको खबर दे दूं, लेकिन आप तो सो ही गई।" खबर यह थी कि बा को और मुझको रात को कहीं ले जानेवाले हैं। हमसे कहा गया कि ग्यारह बजे तक अपना सामान तैयार रखें। मैंने उठकर अपना बिस्तर बांधा, दूसरा सामान ठीक किया।

इतने में बा जागीं, मैंने उनका बिस्तर बांधा। फिर हमने बैठकर प्रार्थना की। रामधुन चल रही थी कि पैरों की आवाज सुनाई पड़ी। प्रार्थना पूरी हुई। जेलर और मेट्रन हमें लेने आये थे। हम तैयार ही थीं। चल दीं। बाहर दफ्तर में एक आदमी बैठा था, जो हमारे साथ जानेवाला था। मैंने पूछा, "कहां ले जाओगे?" कहने लगा, "बापूजी के पास।" साढ़े बारह बजे जाती थी। अभी ग्यारह ही बजे थे। दफ्तर में जेल की सख्त कुर्सी पर बैठे रहने में बा को तकलीफ हो रही थी। बा की तबीयत भी अच्छी नहीं थी। दस्तों की वजह से वह बहुत कमजोर हो गई थीं। मैंने कहा, "आराम-कुर्सी मंगा दीजिये।" इसपर हमारे रखवाले ने कहा, "स्टेशन पर चलिये। वहां वेटिंग रूम में आप आराम से बैठ सकेंगी।" फिर कहने लगा, "बापूजी से हमारा प्रणाम कहिये। मैं सन '३२ में उनके साथ था।" मैंने

जगति तमसां वार्धौ भग्नो महः प्रति संचरन्
मुहुरवपतन् भ्रान्तो ह्येकं तमीश्वर माश्रितः ।
जगदधिपतेः प्राप्तालम्बः प्रमाणितमानवः
प्रभुशरणता नो चेद्द्वेषोभवेत्स्वजनाहितः ॥१९॥

अवेक्षणीयो मम वर्तमानो
भविष्यकालं न दिदृक्षुरस्मि ।
आगामिनि स्वाम्यमहो क्षणे न
प्रादायि मह्यं परमेश्वरेण ॥२०॥

दर्दी खो बैठेगी और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभी को कांग्रेसपरस्त बना देगी। मैंने विद्यार्थियों के लिए बेंत मारने की हल्की सजा सुझाई थी। लेकिन किसीने मेरी सुनी नहीं और गोलियों व लाठियों से काम लिया। नतीजा यह है कि हालत बद-तर हो गई है।" इसपर बम्बईवाला साथी बोला, "हां, बेंत मारना ग्रादर्श चीज होती है।" मुझे इस वाक्य पर हंसी आई। वह बोला, "डाक्टर हमसे सहमत नहीं।" मैंने कहा, "आपका यह सुझाव कि छोटे बच्चों के लिए बेंत की सजा ग्रादर्श चीज है, मुझको कुछ अनोखा-सा लगा; क्योंकि ग्राज हर ग्रादमी यह जानता है कि छोटे बच्चों को कभी शारीरिक सजा देनी ही नहीं चाहिए और अच्छे मदरसों में तो बेंत की सजा कतई मना है।" ये दोनों बोले, "हां, लेकिन ग्राप तो सभ्य समाज की बात कर रही हैं और यहां हमें बर्बरता से काम है। यह न समझिये कि हमें बेंत मारना या इसरा ऐसा कुछ करना पसन्द है, लेकिन हमें जो हुक्म दिया जाता है, उसकी पाबन्दी तो करनी ही पड़ती है।" इसके बाद बातचीत बन्द हो गई। पहले वे दोनों ग्रापस में कह रहे थे कि किसीको इस दमन-नीति में रस नहीं है। कोई नहीं चाहता कि वह गोली चलाये, लाठी चलाये या गिरफ्तारियां करे, वगैरा-वगैरा।

पन्द्रह-बीस मिनट में मोटर एक सूनी-सी सड़क के किनारे एक बड़े फाटक पर ग्राकर खड़ी हो गई। फाटक बन्द था। मोटर दूसरे फाटक पर गई। सामने फौजी पहरा था। फाटक खुला। हम अन्दर घुसे, पीछे फाटक बन्द हो गया। थोड़े फासले पर कंटीले तार लगे थे। वहां भी फाटक था और फौजी पहरा। यह दूसरा फाटक खुला और हमारे ग्रन्दर आने पर फिर बन्द हो गया। मोटर संगमरमर की सीढ़ियों के सामने जाकर खड़ी होगई। बा और मैं दोनों उतरीं और ऊपर चलीं। बरामदा लम्बा था। सामने के ग्रोर बगीचे की तरफ के बरामदे का शुरू का ग्राधा फर्श संगमरमर का था और आगे जाकर आधा मामूली पत्थर का। एक कैदी भाड़ू लगा रहा था। उससे मैंने बापू का कमरा पूछा। वह बोला, "ग्रागे इसी लाइन में है।" बापू का कमरा आया। उसका बिछौना एक कोने पर था। वह उसपर बैठे एक कागज पर गौर कर रहे थे। महादेवभाई उसी कागज को हाथ में पकड़े पास खड़े थे और बापू से कुछ कह रहे थे। हमें ग्राया देख सब चकित-से रह गये। बापू के चेहरे पर एक तनाव की रेखा खिंच गई। बा से बोले, "तूने यहां ग्राने की मांग की थी, या वे ही तुझे ले आये?" बा बेचारी चुप रह गई। कुछ समझ ही नहीं सकीं कि क्या पूछ रहे हैं। बापू की भवें और तन गईं। मैंने उत्तर दिया, "पकड़कर लाई हूं, बापू।" तब कहीं बापू की चिन्ता मिटी। मैंने प्रणाम किया। हँसने लगे। बोले, "तू आ पहुंची।" मैंने बताया, "बा की तबीयत अच्छी नहीं है।" तुरन्त ही उनके लिए खाट मंगवाई गई। बापू और महादेवभाई उनको संभाल में लग गये।

बा की बीमारी अधिकतर मन के बोझ की वजह से ही थी। यहां ग्राने पर

न वेत्स्यत्यन्तवान्सत्यं नरः कृत्स्नं कदाचन ।
न चैव प्रीतिमेते स्तः स्वयमेवान्तवर्जिते ॥२१॥

पुरो मे यत्कार्यं तदनुचरणात्तुष्टहृदयः
कुतः कस्माद्वस्तुष्वथ न गणये चिन्तनपरम् ।
स्थितास्मासु प्रज्ञा विशदमिदमाख्यापयति नो
न यद्वस्तुष्वास्तां नृभिरनवगाह्योऽप्यभिरुचिः ॥२२॥

घड़ी देखी और हँसने लगे। शाम का और सुबह का खाना एक होगया था! शायद सरकार ने सोचा होगा कि गांधीजी तो इस बार उपवास करने ही वाले हैं, फिर खाना पकाने के इन्तजाम की मेहनत क्यों की जाय! या कैदियों के लिए खाना तैयार करने का रिवाज ही नहीं रहा होगा।

आज हम लोगों ने तो खाना कोई एक बजे ही खाया होगा। खाना खाने के बाद महादेवभाई सब प्लेटें उठाकर उन्हें धोने चले गये। मैं भी उनके पीछे गई और थोड़ी मदद की। तीन बजे महादेवभाई नीचे रसोईघर में पहुंचे। बापू के लिए सब्जी काटी और चढ़ाई। उसके बाद उनके लिए मौसम्बी का रस निकाला। नीचे गये, रसोईघर से सब्जी लाये। मीराबहन को दूध निकालने में देर हुई थी। इसलिए शाम का खाना आज भी बापू को देर से मिला।

मैंने देखा, यहां भी इन लोगों को अखबार वगैरा कुछ नहीं मिलते थे। महादेवभाई को यहां मैंने एक बिलकुल नये रूप में देखा। खाना पकाने और बरतन धोने जैसे कामों में उनकी दिलचस्पी देखने की चीज थी। शाम को प्रार्थना के बाद वह पलथी मारकर बरामदे में बैठ गये और रात को खाने के लिए सबके लिए टोस्ट बना डाले। खाना खाते समय ···की बातें करने लगे। और-और लोगों की चर्चा भी उन्होंने की। जबतक किसीकी तारीफ की कोई बात न आती, महादेवभाई अन-मने-से होकर सुनते रहते। लेकिन किसी अच्छी बात को सुनकर, जिससे वह सहमत हो सकें, वह उत्साह के साथ उसकी दाद देते थे।

दिन में बापू ने लार्ड लमली (बम्बई के गवर्नर) के नाम अपने पत्र की कच्ची नकल में काट-छांट करके उसे महादेवभाई के हवाले किया और बोले, "मुझे ऐसा लगता है कि यह तो आज जाना ही चाहिए।" इस पत्र में बापू ने एक घटना का उल्लेख किया था, जिसमें मेहता नाम के किसी कार्यकर्ता को स्टेशन पर पशु की तरह घसीटकर लारी में डाला गया था। इसी पत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल और मणिबहन को यहां भेजने की दरख्वास्त भी की गई थी। बापू ने लिखा था कि सरदार तो उनकी (बापू की) चिकित्सा में थे, मणिबहन सरदार की नर्स थीं, सो दोनों को उनके पास भेज देना चाहिए। तीन-तीन मसविदों के बाद यह खत तैयार हुआ था। हम सब ऐसा मानते थे कि सरदार वल्लभभाई और मणिबहन जल्दी ही यहां आ जायंगे। उन्हें किस कमरे में रखेंगे यह चर्चा हुई। हम मानते थे वल्लभ-भाई और मणिबहन दोनों यरवदा में हैं। भाई को भी जल्दी बापू के पास ले आयेंगे, ऐसी हमारी मान्यता थी।

यहां अभी बरसात शुरू हुई है सो बरामदे में घूमना पड़ता है। मगर बरामदा बहुत लम्बा है। मकान के चारों तरफ बना है। एक चक्कर में एक-तिहाई मील की घुमाई हो जाती है। मकान की निचली मंजिल में हमें रखा गया है, ऊपर हमारे जेलर मि० कटेली रहते हैं। नीचेवाला भाग भी सब नहीं खोल रखा। एक बड़े

ईशं सत्यमिवैव केवलमहं ह्यर्चामि नाद्याप्यसौ
लब्धो मे परमस्य मार्गगपरो भूम्यानुसारोत्सुकः ।
सन्नद्धोऽस्मि विहातुमात्मकलितं प्रीत्यास्पदं कृत्स्नम-
प्यायुस्त्यागपदं भवेदपि तदा दित्सुस्तदाशा मम॥२३॥

वेत्तुं नार्हति मानवो हि सकलं सत्यं परन्त्वस्ति तत्
कर्तव्यं निजजीवनेऽनुसरणं सत्यस्य यद्दृष्टवान् ।
एवंवृत्तिरपाश्रयेत्स पुरुषस्तं मार्गमेकं जनै
र्यो मार्गेष्वखिलेषु पावनतमोऽहिंसाभिधानो
मतः ॥२४॥

सब्जी चढ़ाने गई तो वहां भी पीछे से आ पहुंचे। साग काटने और चढ़ाने में मदद की। मैंने कहा, "आप क्यों अपना समय ऐसे कामों में खोते हैं ?" बोले, "यहां और काम ही क्या है ? अबके मैं अपने साथ कोई सामान ही नहीं लाया, नहीं तो लिखने का काफी काम हो सकता था। तीन-चार लेखों की सामग्री के सिवा मैं कुछ लाया ही नहीं।" मैंने कहा, "तो वे तीन-चार लेख तो लिख ही डालिये।" बोले, "लिख लूंगा। बात यह है कि इस समय मेरा तो मन ही नहीं होता कि कुछ करूं। जबतक बापू की उपवास की तलवार मेरे सिर पर लटक रही है, मैं कुछ कर ही नहीं सकता। सन् '३२ में बापू के छः दिन के उपवास में मैंने दस पौण्ड वजन खोया था, हालांकि उन दिनों मैं बराबर भोजन करता था। तभी छः दिन में बापू बेहाल हो गये थे तो अब क्या होगा ?"

बापू ने वाइसराय के नाम जो खत लिखना शुरू किया था, आज दिन में उसमें फिर सुधार किये गए और मुझे उसकी नकल कर देने का काम मिला। यहां मच्छरों और मक्खियों की वजह से दिन में भी कुछ काम करना हो तो मच्छरदानी में बैठकर ही करना पड़ता है। मैं अपनी खटिया पर जा बैठी, मच्छरदानी डाल दी। खत लम्बा था, नकल करने में दो घंटे लगे होंगे। बापू ने महादेवभाई से कहा, "अब तुम इसे पढ़ जाओ, बुढ़िया (सरोजिनी नायडू) को भी पढ़ाओ और कुछ सुझाव देना हो तो दो।" इसके बाद बापू उर्दू के अभ्यास में लग गये। वह कहने लगे, "अगर सरकार मुझे फिर छः साल की सजा सुना दे तो मैं बहुत काम कर दिखाऊं।" सुनकर महादेवभाई के मन में फिर वही विचार आ गया, बापू छः साल तक हमारे साथ रहेंगे सही ? सत्यमूर्ति का वाक्य याद आया, "गुलाम हिन्दुस्तान की अपेक्षा आजाद हिन्दुस्तान में आपकी ज्यादा जरूरत रहेगी।"[1]

रात: बापू मुझसे कहने लगे, "तुझे लिखने-पढ़ने का काम करने की इच्छा थी न। देख, कैसा खत तेरे हाथ आया है !" इसपर महादेवभाई कहने लगे, "अबकी दफा बाबला हमारे साथ बम्बई आया तो रास्ते में मैंने उसे 'टु अमेरिकन्स' (अमेरिकनों के प्रति) नामक बापू का लेख टाइप करने को दिया। वह तो नाचने लगा। बोला, "काका, कितने दिनों के बाद आज मैं टाइप करने लगा हूं और पहली ही बार यह कितनी बढ़िया चीज मेरे हाथ लगी है !" महादेवभाई को अपने लड़के की बहुत याद आ रही थी। कल मुझसे पूछा, "दोनों लड़कों का क्या हुआ ?" मैंने कहा, "भाई की सलाह से वर्धा जाना तय हुआ था।" कहने लगे, "मैं तो चाहता था कि दोनों बम्बई से ही पकड़े जाते। मगर ठीक है, मेरी गैरहाजिरी में उन्हें भाई की ही आज्ञा का पालन करना था। उन्होंने सोच-समझकर ही वर्धा जाने की सलाह दी होगी।"

---

[1] 'Free India needs you more than subject India.'

हृदि प्रत्येकस्य प्रतिवसति सत्यं तनुभृत-
स्ततस्तत्रैवास्यास्त्युचितमनुसन्धानमपि तत् ।
यथादृष्टं सत्यं भवतु पथदर्शि स्वकलितं
परं सत्यं नान्यः प्रसभमनुसार्योऽधिकृतितः ॥२५॥

स्वायुष्याशयभिन्नरूपवचनव्याहार-दोषो मम
नासीत्कर्ह्यपि सार्जवं प्रकृतितः संस्पृष्टहृद्भावनः
कंचित्कालमनाप्तसिद्धिरसकृद्बेध्यन्ततः सत्यमे
वाविर्भावयिता स्वरूपमनुभूत्यां मे यथानेकदा ॥२६॥

देवभाई के मोती-जैसे अक्षरों को देखा, फिर उन्होंने उसमें एक-दो जगह अपने हाथ से छोटे-छोटे सुधार किये और दस्तखत कर दिये। रात को पत्र कटेलीसाहब को दिया गया। बापू पूछ रहे थे, "नकल करने में कितना वक्त लगा?" महादेवभाई ने कहा, "दो घंटे।" फिर बोले, "सुशीला ने सरकारी वक्तव्य में से अवतरण लेते समय एक जगह एक शब्द छोड़ दिया था। इसलिए मैंने सारा पत्र ध्यान से देखा। इस कारण भी वक्त कुछ ज्यादा लगा।" बापू मेरी तरफ देखकर बोले, "ऐसा क्यों हुआ? यह तो नहीं होना चाहिए।" मेरा मुंह फक हो गया। बापू के काम में तनिक-सी भी भूल हो जाय तो वह असह्य लगता है। बापू भी इन छोटी-छोटी भूलों को बहुत महत्व देते हैं। कहा करते हैं, "मुझे यह भरोसा होना चाहिए कि जो काम तुम्हें सौंपा वह सम्पूर्ण होगा। मुझे उसमें पूछने और फिर से देखने जैसा नहीं रहना चाहिए।" महादेवभाई बाद में मुझसे कहने लगे, "इस तरह की नकल करते समय ऐसा हो ही जाता है।" मैं समझ रही थी कि मुझे आश्वस्त करने के लिए ही वह ऐसा कह रहे हैं। उन्हें अफसोस हो रहा था कि बापू के सामने मेरी शिकायत क्यों की। आजकल उनकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी बन गई है कि किसीको या किसीके बारे में कोई अच्छी बात कह सकें तो कहें, वर्ना चुप रह जायं। कोमलता उनके स्वभाव में हमेशा [illegible] रही है। वह किसीका भी दिल दुखाना नहीं चाहते थे। इससे उनपर कभी-कभी यह इल्जाम आता था कि वह सबको सदा मीठी लगनेवाली बातें कहा किया करते हैं। इसलिए उनके कहे पर बहुत आधार नहीं रखा जा सकता। लेकिन इस बार की उनकी कोमलता तो पराकाष्ठा को पहुंच गई थी। उनके मन में एक ही विचार था: बापू के आदर्शों का—एकादश व्रतों का—जितना पालन हम कर सकेंगे, उतनी ही बापू के महान यज्ञ में हम उनकी सहायता कर सकेंगे।

सरोजिनी नायडू ने कल महादेवभाई से कढ़ी बनाने को कहा था। आज उन्होंने कढ़ी बनाई। बहुत अच्छी बनी थी। मैंने और महादेवभाई ने तीन बार ली। रोटी यहां कैदी बनाते हैं। चपातियां अच्छी नहीं बनतीं। महादेवभाई कहने लगे, "अगर दुर्गा यहां होती तो हमें ऐसी रोटी हरगिज न खानी पड़ती।" खाना पकाने के बारे में इधर-उधर की बातें होती रहीं। दोपहर खाने के बाद प्लेटें धोते समय महादेव-भाई मुझसे बोले, "ये लोग खाने-पीने की बातें करते हैं! मैं इन्हें कैसे बताऊं कि मेरे मन में क्या चल रहा है? अगर मैं और तुम दो ही यहां होते तो बापू के लिए जो सब्जी बनती है, उसके सिवा मैं तो और कुछ भी न बनाता।"

खाने के बाद मैंने एक मोसम्बी उठाई। महादेवभाई ने लेने से इन्कार किया। बोले, "तुम खाओ।" मैंने आग्रह किया। पूछा, "आप क्यों नहीं खाते हैं?" तो कहने लगे, "असल में यह बापू के लिए है। अपने हिस्से की जो खूराक हमें मिलती है, उससे ज्यादा मैं कुछ नहीं लेना चाहता। मैं बापू के साथ कई बार जेल में रहा हूं, मगर फलों को कभी छुआ भी नहीं था; क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं

नम्रोऽपि मार्गणविधावतितत्परोऽहं
सत्यस्य तत्र सहकार्यकृति प्रकाण्डम् ।
विश्रब्ध एमि सकलेऽपि यथा प्रमादान्
ज्ञात्वात्मनस्तदनुतानऽनुशोधयेयम् ॥२७॥

स्वाध्यायमग्नोऽस्मि न वर्तते मे
स्वार्थोऽप्रमासादयितुं समीहे ।
सत्यं प्रपश्यामि च यत्र यत्र
यतेऽनुसर्तुं तदुपागृहीतम् ॥२८॥

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने मराठी का तुकाराम का अभंग गाया—'भक्त ऐसे जाणा जे देहीं उदास।' प्रार्थना के बाद मैंने उनसे इस भजन का अर्थ समझाने को कहा। उन्होंने समझाया। मेरे आने के बाद प्रार्थना में रामायण की गायन शुरू हुआ है। उत्तरकांड का जो भाग जिस जगह से आश्रम में छूट गया था, वहीं से आगे शुरू किया गया है। ताल देने के लिए मंजीरा नहीं है, सो बापू ने मीराबहन से चम्मच और कटोरी का उपयोग कर लेने को कहा है। उन्होंने कटोरी-चम्मच बजाकर भी दिखाया।

कल सुबह घूमते समय हम लोग बगीचे में मकान के सामने की तरफ चले गये थे। चारों ओर कंटीले तारों का एक अहाता खींच दिया गया है, जिसमें से हमें बगीचे का थोड़ा ही हिस्सा मिला है। बाहर की दीवार से कंटीले तारों का करीब ५० या ७५ गज का फासला रखा गया है, ताकि कहीं दरवाजे में से झांककर हम बाहरवालों के साथ सम्पर्क स्थापित न कर लें। मगर कंटीले तारों में जगह-जगह इतने बड़े-बड़े रिक्त स्थान हैं कि आदमी भागना चाहे तो आसानी से भाग सकता है। इन कंटीले तारों के अंदर छः सिपाही हमारी रखवाली के लिए रखे गये हैं। वे सेवा भी करते हैं। करीब एक दर्जन सजायाफ्ता कैदी सवेरे छः बजे से शाम के छः बजे तक यहां सफाई इत्यादि करते हैं। करीब पंद्रह या बीस कैदी बगीचे में काम करने आते हैं। कंटीले तारों के बाहर ७२ फौजियों का पहरा रहता है।

महादेवभाई तो हमेशा जिसके सम्पर्क में आते हैं, उसका मन हरण कर ही लेते हैं। मि० कटेली के साथ भी उसकी खूब बन गई है। जब पहला पत्र तैयार हुआ तो महादेवभाई उसे लेकर ऊपर मि० कटेली को देने चले गये। खत के लेने के बाद बातों-ही-बातों में मि० कटेली ने कहा, "आप लोगों को ऊपर आने की इजाजत नहीं है। आपके यहां आने से पहले एक पुलिस अफसर आकर मुझसे कहने लगा कि इस जीने के सामने यह नोटिस लगादो कि कोई ऊपर न आये। मैंने इन्कार किया। कहा, 'उनमें कोई ऐसा है ही नहीं, जो खुद ऊपर आये। नोटिस लगाने की जरूरत नहीं।' " इसपर महादेवभाई ने कहा, "बस, हमें पता चल गया, अब नहीं आवेंगे।" और उस दिन से उन्होंने ऊपर जाना बंद कर दिया। महादेवभाई विवेक की मूर्ति थे।

मि० कटेली भले आदमी हैं, ईमानतदार हैं। सरकार के प्रति अपना फर्ज पूरी तरह अदा करते हैं। उनकी पत्नी मर गई है। घर पर बूढ़ी मां और बच्चे हैं। मां को बहुत याद किया करते हैं। बापू के प्रति भक्ति रखते हुए भी वह सरकार के प्रति अपना फर्ज अदा करने में कभी चूक नहीं सकते। बेचारों ने पहले तो बाहर से खाना मंगवाना शुरू किया था, लेकिन वह सब ठंडा हो जाता था। इसलिए सरोजिनी नायडू ने उन्हें अपने साथ खिलाना शुरू किया है। खाने के लिए चुपचाप आते और खाकर चुपचाप ही चले जाते हैं। सारा दिन उनसे कोई बात करने-

स्पष्टा भ्रान्तिर्भातिकस्मिंचिदन्य-
स्तामेवाच्छां मन्यते प्राज्ञदृष्टिम् ।
कामं सा स्यात्तस्यचित्तावभासो
नासौ तस्मादीश्वरः स्वीयमुक्तौ ॥२९॥

याथार्थ्येनाह वाचं ननु कवितुलसीदास एवं नजातु
रश्मिण्वर्कस्य विद्मः सलिलमपि न वा मौक्तशुक्तौ-
च रूप्यम् ।
रौप्यो भासो न मावरयजति रुचिमतीं शुक्तिमापो-
न रश्मीं
स्तावन्मोहस्य कोऽपि प्रभुपरहरणे
मन्त्रमुग्धस्य नेह ॥३०॥

जिले में आपके घर आयंगे।"

महादेवभाई कहते, "हां भाई, जरूर आना।"

कैदियों के साथ अपनी सम्पूर्ण एकता सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने लिए जेल के कपड़े मंगाने और पहनने का इरादा भी कर लिया था। एक दिन भूरा कहने लगा, "मैं छूटनेवाला हूं, कोई चिट्ठी देना हो तो देना। मैं ले जाऊंगा।" मैंने कहा, "तुम्हारी तलाशी नहीं होगी ?" उसने तुरन्त एक अंडे की शकल की छोटी-सी डिब्बी निकाली, उसको खोला, अन्दर कागज का टुकड़ा रखकर बंद किया और झट-से मुंह में डाल गया। कहने लगा, "ले लो तलाशी।" कुछ दिखाई नहीं देता था। उसके गले में कोई पाकेट-सी बनी होगी, जहां डिब्बी छिपा रखता था। जब हमने हार मानली, उसने झट उबकाई-सी ली और डिब्बी निकालकर लोअवार कागज हमारे हाथ में दे दिया। महादेवभाई कहने लगे, "अगर बापू का उपवास वगैरा कुछ होगया और सरकार ने खबरें बाहर न जाने देने की नीति रखी तो इसके साथ में जरूर चिट्ठी भेजूंगा। तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं ?" मैंने कहा, "पांच रुपये हैं।" कहने लगे, "काफी हैं। बम्बई तक का किराया इसे दे सकें तो काम निपटा। पीछे वहां से मित्र लोग सब इन्तजाम कर लेंगे।"

यरवदा से आते-जाते दोनों वक्त इनसब कैदियों की तलाशी ली जाती है। यरवदा-जेल में इन्हें बाहर की तरफ अलग एक बारक में रखा जाता है, ताकि वे दूसरे कैदियों से मिल न पावें और इधर से उधर कोई खबर न पहुंचा सकें। फिर भी वे रोज सुबह हमें इतनी खबर तो देते ही थे कि आज इतने नये कैदी आये हैं और आज इतने। जेल के फाटक पर नये कैदियों की संख्या रोज लिखी जाती है। दूसरे राजनैतिक कैदियों के लिए जगह करने के खयाल से आम कैदियों को काफी तादाद में छोड़ा भी जा रहा है। उन बेचारों को इतना फायदा तो हुआ। अच्छा है।

वाइसराय के नाम खत पूरा करने के बाद आज दोपहर बापू 'पैसिफिक अफेयर्स' पढ़ने लगे। उसमें एक वाक्य आया—"Teleological connection between bourgeois democracy, revolution and industrialism." अर्थात् ऐतिहासिक विकास में मध्यमवर्गीय लोकतंत्र, क्रांति और मशीन-प्रथा इन तीनों में क्रमिक संबंध। बापू टीलियोलोजी (Teleology)[1] का अर्थ पूछने लगे। महादेवभाई से पूछा। शब्दकोश देखा। काफी चर्चा हुई। आखिर बापू बोले, "इसे तो 'Argument in a circle' अर्थात् जो चीज साबित करनी है उसे बहस का आधार मानकर चलना कह सकते हैं।" फिर चर्चा चली कि व्याकरण के अनुसार reck के साथ of आता है या with? बापू ने कहा, "बुढ़िया से पूछो न !" महा-

[1] एक दार्शनिक सिद्धान्त, विश्व का विकास निर्धारित दैवी उद्देश्य की सिद्धि के लिए हो रहा है।

अनिर्वर्णनीया रहस्यावृता च
स्थिता शक्तिरेकाखिलं व्याप्य वस्तु ।
न पश्याम्यहं तां परं भावयेऽन्ये-
न्द्रियज्ञातजातादतोवास्ति भिन्ना ॥
अतोऽदृष्टशक्तिः स्वयंभावमित्री
तथापि प्रमाणं तिरोधाय सर्वम् ।
व्यतीत्येन्द्रियाण्यस्ति किञ्चित् बुधा ॥
प्रतीतिः प्रभोः सत्वभावेऽस्ति शक्या ॥३१॥

श्रद्धा बुद्धिमतीत्य वर्तत इदं संप्लवपे केवलं
यन्नाशात्रयमतः प्रयत्नविषयं कार्यं कदाचिन्नरा ।
आख्यातुं न च पारयामि दुरितास्तित्वं विमर्शाध्वना
तत्कामः परमेश्वरस्य परमात्मानं समं मन्यते ॥३२॥

१४ अगस्त '४३

आज वाइसराय को पत्र गया। विचार हुआ कि पत्र के साथ बापू के भाषण का सार भी भेजना चाहिए। मगर वह तैयार नहीं था, इसलिए बापू ने पत्र तो भेज दिया और महादेवभाई से सार तैयार करने को कहा। नोट्स तो थे नहीं। सबकुछ जबानी तैयार करना था। शाम से पहले महादेवभाई ने वह बापू के सामने रख दिया।

बापू ने कर्नल भण्डारी से सरदार और भाई की खबर पुछवाई। उत्तर मिला कि सरदार के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं है, इसलिए तबीयत अच्छी ही होगी। भाई यहां हैं या नहीं, इसका उन्हें पता नहीं था।

महादेवभाई आज फिर कहने लगे, "अबकी मैं अपने साथ कुछ सामान ही नहीं लाया। दिल होता है कि गीतांजलि भी होती तो उसके अनेक गीतों का गुजराती अनुवाद ही कर डालता।" मैंने कहा, "चलिये, काम नहीं लाये हैं तो मुझको कुछ सिखा दिया कीजिये।" बोले, "मैं तुम्हें क्या सिखाऊंगा। तुम्हीं मुझे थोड़ी सी दवा-दारू सिखादो।" मैंने कहा, "अच्छी बात है, आप दवा-दारू सीखिये और मुझे दूसरी चीजें सिखा दीजिये।"

मुझे कल से थोड़ा जुकाम था और आज तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब थी। बुखार-सा लग रहा था। शाम को महादेवभाई बापू के लिए रस निकाल रहे थे। मुझसे कहने लगे, "तुम भी आज रस पीओ।" मैंने टालने की कोशिश की। कहा, "मुझे रस पीने की जरूरत नहीं मालूम होती।" मैं दूसरे कमरे में गई। लौटकर देखती हूं तो महादेवभाई ने रस का आधे से ज्यादा गिलास भरकर मेरे लिए तैयार रखा था। उसे गरम होने को रख दिया था। कहने लगे, "नमक और नीबू के साथ गरम रस गले को बहुत फायदा पहुंचाता है।" मैं रस पीने बैठ गई। अंगीठी जल रही थी। महादेवभाई ने भी अपने लिए टोस्ट सेंक लिये और उसी समय बैठकर खा लिये। घूमते समय आज महादेवभाई बापू से साबरमती-आश्रम की किताबों के सम्बन्ध में कुछ कहते रहे। बापू ने आश्रम की पुस्तकें महादेवभाई को सौंपी थीं और उन्होंने उनकी एक सुंदर लाइब्रेरी बनाली थी।

प्रार्थना में महादेवभाई ने आज तुकाराम का 'जे का रंजले गांजले, त्यांसी, म्हणे जो आपुले'—अभंग गाया और बाद में उसका अर्थ भी समझाया। उन्होंने बताया कि इसी अभंग के जरिये सबसे पहले उनका तुकाराम के साथ परिचय हुआ था। गोखले ने एक जगह लिखा है कि एक बार वह रानडे के साथ यात्रा कर रहे थे। सवेरे गाने की आवाज सुनकर जाग उठे। रानडे ध्यानावस्थित होकर 'जे का रंजले गांजले' अभंग गा रहे थे। प्रार्थना के बाद महादेवभाई ने 'रीडर्स डाइजेस्ट' में से 'द अमेजिंग मि० क्रिप्स' (हैरतअंगेज क्रिप्स) नामक एक लेख बापू को पढ़कर सुनाया।

सोने का समय हुआ। मीराबहन कहने लगीं, "तुम्हें सो जाना चाहिए। बापू के

अस्मास्वन्तरहर्निशं प्रचलितं सङ्गीतमेशं परं
दृष्टेर्वा श्रवणद्वयस्य किमु वा बाह्येन्द्रियाणां तथा ।
अर्यादाकलितादतीव सरसं भिन्नं च तत्पेशलं
सङ्गीतं रभसान्निमीलयति सा तारेन्द्रियाणां
क्रिया ।।३३।।

वयं सर्वे दूता भवितुमलमीशस्य कलये
यदि त्यक्त्वा नृभ्यो भयमनुसरेमेश्वरमृतम् ।
अयं मे विश्वासो यदहमनुगच्छामि ननु तत्
प्रभोः सत्यं त्यक्ताखिलमनुजजातेरपि भयम् ।।३४।।

: ६ :

महादेवभाई का निधन और अंत्येष्टि

१५ अगस्त '४२

प्रार्थना में बापू और मैं, दो ही सुबह उठा करते हैं। महादेवभाई उठना चाहते हैं, मगर रात में नींद टूट जाती है तो फिर चार बजे नहीं उठ पाते। आज सुबह भी मैंने और बापू ने प्रार्थना की। प्रार्थना पूरी करके हम लोग वापस अपने बिस्तरों पर गये, इतने में महादेवभाई उठे। बा से प्रार्थना के बारे में पूछने लगे। बा ने उत्तर दिया, "हां, अभी-अभी खतम हुई है।" आज महादेवभाई का विचार प्रार्थना में आने का था, मगर उन्हें कोई आध घंटे की देर होगई। इससे वह न आ सके। छः बजे बापू उठकर आये तो महादेवभाई ने उनके लिए रस निकालकर तैयार रखा था। बाद में जाकर टोस्ट सेंके, चाय बनाई। सरोजिनी नायडू स्नान करके निकलीं तो मेज पर चाय आदि सब चीजें सजी हुई थीं। टोस्ट को काट-सेंककर खूब सुंदर ढंग से लगा दिया था और खुद हजामत बनाकर वहां बैठे थे। एक दिन बापू मुझसे पूछ रहे थे, "तुम दोनों में कौन अच्छे टोस्ट बनाता है, तू या महादेव?" आज मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, उस दिन बापू के पूछने पर मैं यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी कि आप मुझसे ज्यादा अच्छे टोस्ट बनाते हैं। मगर आज मुझे यह स्वीकार करना ही होगा और आपके सामने हार माननी ही पड़ेगी। सेंक-साककर आपने तो आज इनको इतने सुंदर ढंग से सजा भी दिया है!" महादेवभाई कहने लगे, "मुझे समय मिले तो मैं सबकुछ कर सकता हूं; लेकिन रोज रात को नींद अच्छी नहीं आती। सुबह देर से उठता हूं तो समय नहीं रह जाता। आज जल्दी उठा था, इसलिए इतना सब काम कर सका।"

इतने में सरोजिनी नायडू आईं। वह भी महादेवभाई को शाबाशी देने लगीं। महादेवभाई हंसने लगे। बोले, "हां, अब मुझे आसानी से खानसामा की नौकरी मिल सकती है।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "हां, बापू की गृहस्थी में। इस गृहस्थी में तुम क्या नहीं हो?" महादेवभाई मेरे पास ही बैठे नाश्ता कर रहे थे। मैंने देखा कि उनकी प्लेट में एक टोस्ट पड़ा है, लेकिन उन्होंने बीच में जो प्लेट रखी थी, उसमें से एक टुकड़ा और उठा लिया। बापू महादेवभाई को कवि कहते हैं। मैं समझी, बातों में भूल गये होंगे कि उनकी अपनी प्लेट में भी टोस्ट पड़ा है। इसलिए वह टोस्ट मैंने उठा लिया। लेकिन महादेवभाई ने तो उसे खाने के इरादे से ही रखा था। मैं वापस रखने लगी तो मना किया। बोले, "नहीं, अब तुम्हीं खाजाओ!" कहावत मशहूर है कि दाने-दाने पर मोहर होती है। महादेवभाई का हिसाब खतम हो चुका था, सो उनकी प्लेट में सामने रखा हुआ टोस्ट भी उठ गया।

महादेवभाई की हजामत का जिक्र करते हुए सरोजिनी नायडू बोलीं, "आज जब

प्रभुं दिदृक्षे हि निजाभिमुख्ये
जानामि सत्यं प्रभुरस्ति चेति ।
ईशावबोधस्य समैकमार्गो-
ऽमोघो ननु प्रीतिरसार्वहिंसा ॥३५॥

हृदामन्वेष्टेशो वचनमतिगच्छत्यपि धियं
विजानीते ह्यस्मान् हृदयमपिनोऽस्मत् पटुतरम् ।
अजानद्भिः कैश्चिद्विदितचरमप्यन्यमनुजै-
रभिप्रेतं नास्ति प्रभुरिति वचो नो न मनुते ॥३६॥

चाप चले गये। यह कुछ असाधारण-सी बात थी, नहीं तो उनसे कहीं भी मिलें, कुछ तो वह कहते ही थे। उनका यह भी ख्याल रहता था कि भाई यहां नहीं हैं, इसलिए मेरेलिए भाई की कमी को जितना पूरा कर सकें, करें। खाने के समय भी हमेशा मेरी राह देखा करते थे।

मेरे आने से पहले बापू के खाने के बरतन और उनके कपड़े कैदी धोते थे। महादेवभाई कभी अपने कपड़े खुद धोते, कभी-कभी धुलवा लेते थे। मीराबहन अक्सर अपने कपड़े खुद धोती थीं। मीराबहन ने बताया कि कैदी लोग बापू का काम करते खुश होते हैं तो उन्हें करने देना चाहिए। बापू की बातों से मैं समझी कि उन्हें कैदियों और सिपाहियों से सेवा लेना पसंद न था। कहते थे, "मैं नहीं चाहता कि ये लोग हमें अपना सरदार समझें। हम भी उन्हींके जैसे कैदी हैं। मुझे तो अपना काम खुद कर लेना या अपने साथियों से करवा लेना ही प्रिय है।" इसलिए मैंने बापू के बरतन खुद साफ करने शुरू कर दिये। कपड़े तो अपने मैं धोती ही थी, बापू के भी धोने लगी। बापू स्नान करके निकल आते तब मैं कपड़े धोती और स्नान करती थी। महादेवभाई बापू को खाना लाकर देते और फिर मेरी राह देखते रहते।

दोनों गुसलखानों के बीच जो दीवार है, वह छत तक नहीं गई, इससे आवाज एक गुसलखाने से दूसरे में आसानी से साथ पहुंच सकती है। दाहिने हाथवाला गुसलखाना बापू इस्तेमाल करते हैं और दूसरे भी चाहें तो कर सकते हैं। इस गुसलखाने में कमोड के ऊपर बत्ती है। बापू हमेशा पाखाने के समय में पढ़ते हैं, इसलिए उन्होंने यह गुसलखाना पसंद किया है, वरना यहां एक आवश्यक आईना भी है, जो बापू के काम की चीज नहीं। दूसरे गुसलखाने का इस्तेमाल सरोजिनी नायडू करती हैं और प्रायः या और मीराबहन भी। करीब-करीब रोज ही मैं स्नान पूरा करते पर होती या कपड़े पहनती होती, तभी महादेवभाई सरोजिनी नायडूवाले गुसलखाने से निकलकर पुकारते, "ए सुशीला, कितनी देर है तुमको?" पहले ही रोज उन्हें बहुत भूख लग रही थी। बापू ने आग्रह करके मेरे निकलने के चार-पांच मिनट पहले उन्हें खाने के लिए भेज दिया। बाद में बापू ने मुझे पुकारा और कहने लगे, "तुम बहुत वक्त लेती हो। जानती हो, महादेव कबसे तुम्हारी राह देख रहा है?" मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई आप मेरी राह न देखा कीजिये। खाने के लिए समय पर चले जाया कीजिये। मैं आपके बाद आ जाया करूंगी।" दूसरे दिन बापू के स्नानघर से निकलने के समय मैंने खास तौर पर जाकर कहा, "आप खाना खाने जायं। मुझे देर लगेगी।" लेकिन मैं स्नान करके निकली तो देखा, महादेवभाई बैठे मेरी राह देख रहे थे। वह जानते थे कि मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगता। खाने की मेज सरोजिनी नायडू के कमरे में है और उनसे मेरा परिचय यहां आने से पहले नहीं के बराबर था। अतः महादेवभाई खाते समय मेरा

सारार्णां सार एवास्ति
विशुद्धः परमेश्वरः ।
येषां श्रद्धास्ति तेषां च
वर्तते केवलं हृदि सः ॥३७॥

वयं न स्मः सोऽस्ति स्फुरति यदि नोऽस्तित्वपरता
स्तवस्तस्यास्माभिः सततमपि गेयोऽनुचरणे ।
तदाज्ञायास्तस्माद् ध्वनितमनुनृत्याम मधुरं
वयं वंश्यास्तस्याखिलमनुसरेन्नः शिवतमम् ॥३८॥

होता तो मैं भण्डारी हरगिज न देने देता !"

महादेवभाई को उल्टी होने लगी। मगर उसे बाहर निकालने में मुश्किल पेश आई। मैंने जबड़े को सहारा दे रखा था। सिर एक तरफ कर दिया, ताकि हवा की नली में उल्टी का कोई हिस्सा न चला जाय। बापू तो मेरे बुलवाने के बाद दो-तीन मिनट में ही आगये थे। वह कभी महादेवभाई का हाथ पकड़ते, कभी सिर पर हाथ रखते। वह उनकी आंख की तरफ टकटकी लगाकर खड़े थे। कहते थे, "मुझे विश्वास था कि एक बार भी महादेव मेरी ओर देख लेगा तो उठकर खड़ा हो जायगा।"

जब सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा था तो बापू समझे थे कि भण्डारी से मिलने के लिए बुला रही हैं। जब वह बुलाने आईं तब भी बापू ने यह नहीं सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है। यह कुछ पढ़ रहे थे। यही समझे कि भण्डारी के कारण ही मुझे बुलाते हैं। फिर जब मेरे कहने पर उन्हें बुलाने गये तब भी वह यही समझे कि भण्डारी से मिलने के लिए ही उन्हें बुलाया जा रहा है। बाद में जब यह सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है, तब भी वह यह नहीं समझे कि कोई गंभीर घटना हुई है। यही खयाल रहा कि जैसे पहले कभी-कभी चक्कर आ जाता था, वैसे ही अब भी आया होगा, जरा देर में अच्छा हो जायगा।

सरोजिनी नायडू ने बापू को बताया कि कमरे के बीच में महादेवभाई खड़े थे। भण्डारी और सरोजिनी नायडू दोनों कुर्सियों पर बैठे थे। महादेवभाई कुछ बातें कर रहे थे। मजाक चल रहा था। सब-के-सब खूब हँस रहे थे। इसी हँसी की आवाज हमें बाहर सुनाई पड़ रही थी। कुछ देर बाद महादेवभाई ने भंडारी से मेरे लिए स्वास्थ्य-संबंधी अखबार मांगे और फिर एकाएक कहने लगे, "मुझे चक्कर आता है।" भण्डारी ने कहा, "बदहजमी होगी, लेट जाइये।" महादेवभाई चलकर तीन-चार गज के फासले पर पड़े पलंग पर जाकर लेट गये। भण्डारी ने नाड़ी देखी तो वह बहुत तेज और कमजोर थी। उन्होंने सरोजिनी नायडू से कहा कि वह मुझे बुलायें और खुद फोन करके सिविल सर्जन को बुलाने चले गये। महादेवभाई जब बात कर रहे थे, गरम वास्कट पहने हुए थे। खाट पर लेटते समय उन्होंने उसे निकाल डाला होगा। जब मैं पहुंची, वह आधी निकली हुई थी।

उल्टी होने के साथ ही वह कराहने भी लगे। भयानक कराह थी, मानो किसी गुफा में से निकल रही हो! कराहट न बापू से सही जाती थी और न हममें से किसी से। सांस रुक-रुककर चलती थी। ऐंठन तो जोर की नहीं थी, मगर कंपकंपी बीच-बीच में होती थी। एक बार तो चेहरा बिल्कुल टेढ़ा होगया, मानो एक हिस्से को लकवा मार गया हो। मेरे मन में आया—क्या इस फिट के कारण यह अपंग होकर रह जायंगे? किन्तु महादेवभाई के समान सुकृत आत्मा अपंग क्यों होने लगा! एकाएक फिर एक ओर का झटका-सा लगा। जबड़ा इतने जोर से भिड़ गया कि मुझे लगा कि हड्डी टूट जायगी। उस वक्त मैं जबड़े को पकड़े हुए थी। फिर वह

तं नापश्यं न च विदितवांस्तं प्रभुं लोकनाथ–
मीशेश्रद्धामखिलजगतो मामकीनामकार्यम् ।
सा मे श्रद्धा भवति नियतं सर्वथा चाविलोप्या
तस्माच्छ्रद्धामनुभवसमां तामहं भावयामि ॥३९॥

गन्तव्यमस्ति हि मया पथदर्शकश्च
ईशः स केवलमसौ ननु साम्प्रतं यः ।
स्वीये न कर्मणि कदाप्यनुमंस्यतेऽसा-
वान्यं विधातुमधिकारपदेऽशभाजम् ॥४०॥

सीधा किया। आंखें आधी खुली थीं, उन्हें बंद किया। क्या कभी स्वप्न में भी मुझे यह विचार आ सकता था कि महादेवभाई की आंखें मुझे बंद करनी पड़ेंगी? उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी, मानो कोई योगिराज समाधिस्थ होकर पड़े हों। पास ही उनका रूमाल तौलिया पड़ा था। उससे मैंने उनका मुंह साफ किया था। बापू कहने लगे, "महादेव की जेबें खाली करले।" मेरे लिए यह कठिन काम था। उनकी जेब में हाथ डाला तो मुझे लगा कि हाथ टूट जायगा। क्या महादेवभाई सचमुच चले गये! और मैं उनकी जेबें भी खाली कर रही हूं! कुर्ते की जेबें खाली थीं। वास्कट आधी उनके नीचे थी। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे उनके नीचे से निकाला। एक जेब में से पेन निकला, दूसरी से घोतावली। बापू कहने लगे—'वैष्णव जन' गाओ, रामधुन चलाओ। मैं अपनी भजनावली निकालकर लाई।

बापू ने कर्नल भण्डारी से कहा, "वल्लभभाई और डेर वगैरा की मददगार से मेरे पास भेज दीजिये। बाद में मैं विचार करूंगा कि मुझे शव किसके हवाले करना चाहिए।" भण्डारी चले गये। उन्हें जाकर सरकार को खबर देनी थी और इजाजत लेनी थी कि आगे क्या करना चाहिए।

बापू कहने लगे, "अब मैं जाकर स्नान करलूं। वल्लभभाई वगैरा के आने से पहले मैं तैयार हो जाना चाहता हूं।" यह स्नान करने गये, लेकिन फिर तुरंत वापस आ गये। बोले, "नहीं, मैं पहले महादेव को नहला दूं, फिर खुद स्नान करूंगा।"

मेजर भण्डवानी (जो कर्नल भण्डारी के साथ आ गये थे और अभीतक बैठे थे), मि० कटेली और कुछ सिपाहियों ने मिलकर शव को उठाया और गुसलखाने में ले जाकर बापू ने उसे टब के पास रखवा दिया। दैवयोग से महादेवभाई का सिर उत्तर की तरफ था। बाद में पता चला कि हिन्दू रिवाज के अनुसार शव का सिर उसी तरफ रखा जाता है। बापू ने उनके कपड़े उतारने को कहा। धोती तो आसानी से निकल गई, मगर कटेली और भण्डवानी कुर्ता नहीं निकाल सके। वे उसे इतने भद्दे ढंग से निकालने की कोशिश कर रहे थे कि मुझसे न रहा गया। मैं खुद जाकर मदद करने लगी और कुर्ता निकाला। शरीर इतना गर्म था कि मेरा सिर घूमने लगा। बोली, "बापू, महादेवभाई कहीं जिंदा तो नहीं हैं!" बापू बोले, "सो तो तू जाने।" मैं फिर से स्टेथोस्कोप उठाकर लाई। लेकिन यह सब मूर्खता थी। हृदय की धड़कन तो कभी की बंद हो चुकी थी। आईना लाकर महादेवभाई की नाक के सामने रखा। कुछ नहीं था। भण्डवानी से कहा, "आप भी जांच लें।" मगर वहां कुछ होता तब न! डॉक्टर होते हुए भी मैं अपनी ममता को बैठी थी। बापू कहने लगे, "जिंदा है, तो अभी गरमपानी डालने से उठ बैठेगा।" सिपाही तो चले ही गये थे। भण्डवानी और कटेली ने पूछा, "हम जायं?" बापू ने कहा, "हां, जाइये।" मैंने पूछा, "मैं भी?" बोले, "हां।" मैं बाहर कमरे में खड़ी हो गई। मगर मैंने देखा कि पानी का डिब्बा उठाते हुए बापू के हाथ जोर-

पृथिव्यां सर्वभर्तृणां
कठोरतम ईश्वरः ।
नान्यं जानामि तावद्यो
ऽस्यन्तं युष्मान्परीक्षते ॥४१॥

कयापि रीत्या भवतोऽभ्युपैति
साहाय्यमापत्सु विधातुमीशः ।
श्रद्धात्मनिष्ठा न कदापि हेया
भवद्भिरित्यातनुते प्रतीतिम् ॥
तथेङ्गिताह्वानवशंवदोऽपि
परं न युष्मन्नियमः [illegible] तस्य ।
अन्त्यातिकाले न कदाचिदस्मत्-
त्यागं कृतं तेन खलु स्मरामि ॥४२॥

"म्हारी नाड़ तमारे हाथे हरि संभालजो रे,
दिवस रह्या छे टांचा वेला वाल्वो रे।"

—हे हरि तुम सम्हालना, मेरी नाड़ी तुम्हारे ही हाथ में है। अब दिन थोड़े ही रह गये हैं।

इस कमरे की कुर्सियां वगैरा निकलवाकर महादेवभाई के शव को यहीं रखा गया। बापू ने जेल की एक चादर नीचे बिछवाई और एक ऊपर ओढ़वाई। बोले, "He is a prisoner and he must go as a prisoner."¹ उनका चेहरा शांत था, मगर बहुत ही गंभीर और विचारमग्न; आवाज धीमी थी, किंतु किसीके सामने उन्होंने अपनी आवाज में कंपन या आंखों में आंसू नहीं आने दिये।

लाहौर में गिरधारीभाई ने मुझे चंदन का एक टुकड़ा दिया था। उसे वह बारडोली से लाये थे और सबको बांटा था। तभीसे वह मेरे 'ईण्डयेन' में पड़ा था। मैंने उसे मीराबहन को दिया। उन्होंने घिसकर उसका लेप तैयार किया। बापू ने वह लेप महादेवभाई के माथे और छाती पर लगाया। बगीचे से फूल इकट्ठे किये गए। मीराबहन ने या किसीने एक हार बनाया। बापू ने वह महादेवभाई को पहनाया। मीराबहन शव पर फूल सजाने लगीं। बापू स्नान करने गये। स्नान के बाद शव के पास आकर बैठ गये। मुझसे कहने लगे, "अब तुम भी स्नान कर लो। महादेव के कपड़े तुम धोना। मैं किसी और से नहीं धुलवाऊंगा।" जिस तौलिये से उन्होंने महादेवभाई का शरीर साफ किया था, उसीसे अपना किया और फिर वह मुझे दे दिया। बोले, "इसे धोकर महादेव के कपड़ों के साथ आयला के लिए रख देना।"

मैं स्नान करके निकली तो मीराबहन फूल सजा चुकी थीं। उठाने पर ये फूल हिल जायंगे, इस ख्याल से मगन और मूरा अर्थी पर डालने के लिए फूलों की जाली बना रहे थे। बापू शव के पास बैठे गीता-पाठ कर रहे थे। बारहवें अध्याय से शुरू किया था। मैं आई तो गीताजी मुझे दी। अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा किया।

इतने में भण्डारी आये। उनका चेहरा सूखा हुआ था। मुंह से आवाज नहीं निकलती थी। बापू ने पुछवाया, "वल्लभभाई आते हैं क्या?" वह कहने लगे, "वह यहां नहीं हैं।" बापू ने फिर पुछवाया, "खैर?" वह भी नहीं आ सकते थे। किसी-ने कहा, "एक लॉरी आई है और एक ब्राह्मण।" बापू चौंके, "किसलिए?" किसीने उत्तर दिया, "यहां कुछ पूजा-पाठ कराना हो तो उसके लिए।" बापू कहने लगे, "यहां का पूजा-पाठ हो चुका है।"

भण्डारी बापू के पास आये। वह सरोजिनी नायडू को आगे-आगे धकेल रहे थे। बापू ने पूछा, "क्या खबर लाये हैं?" भंडारी हिचकिचाते हुए बोले, "मैंने सब इंतजाम

---

१ "वह कैदी है और उसे कैदी की तरह ही जाना चाहिए।"

निराशाया अन्धे ह्यपि तमसि दृष्टेरविषये
सहाये कस्मिंश्चिज्जगति विपुले संश्यरहिते ।
बलेनाध्मायास्मांज्जगदधिपतेर्नाम परितो
निराशासन्देहाद्यखिलमपि विद्रावयति नः ।।४३।।

प्रभो हृद्भयोऽस्माकं लघु-कृपणतां क्षालय तया
शठाचारांश्चेति प्रभुचरणयोः प्रार्थितवताम् ।
इमामस्माकं स प्रगतिमनुमन्येत नियतं
बलस्योत्सोऽमोघः सततमुपयातः स बहुभिः ।।४४।।

जगह बहुत पसंद आती। वास साफ करके ब्राह्मण ने यहां थोड़ा जल छिड़का, पूजा-पाठ किया। हमारी सीढ़ियों के पास नीचे बगीचे में दरख्तों की टहनियां तोड़कर उनकी अर्थी बनाई जा रही थी। बापू शव के पास बैठे-बैठे या तो खुद गीताजी का पाठ करते थे या मुझसे करवाते थे। बा बापू के पास बैठी थीं। मीराबहन ने एक कटोरी में धूप, चंदन वगैरा जलाकर सिर के पास रख दिया था और वहीं उसके पास बैठी-बैठी उसमें कपूर और चंदन डालती जाती थीं। महादेवभाई का शरीर तो विशाल था ही, लेकिन इधर कुछ अर्से से वह गरदन को एक तरफ थोड़ा टेढ़ा करके चलते थे। शव बिल्कुल सीधा पड़ा था इसलिए, और साथ ही शायद शरीर के स्नायुओं आदि के शिथिल हो जाने के कारण, वह जीते-जी जितने लंबे लगते थे, उससे ज्यादा लंबे इस समय लग रहे थे। चेहरे पर अपूर्व शांति थी, अपूर्व शोभा। बापू शव की दाईं ओर बैठे थे। मैंने देखा कि महादेवभाई की दाईं आंख थोड़ी खुली थी। यह अकस्मात ही हुआ होगा। मैंने तो मृत्यु के बाद दोनों आंखें बंद कर दी थीं। आंख फिर से कैसे खुल गई, मैं नहीं जानती। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपनी मृत अवस्था में भी महादेवभाई बापू के दर्शन करना चाहते हों।

बापू ने बारहवें से अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा होने पर फिर पहले अध्याय से शुरू करने को कहा। पहला अध्याय पूरा हुआ। दूसरा आधा हुआ था कि इतने में ब्राह्मण महाराज ने आकर कहा, "सब तैयार है।" गीता-पाठ बंद हुआ। मुख्य ब्राह्मण के सिवा चार और ब्राह्मण थे। सबने कुर्ते उतारे। जनेऊ दाहिनी तरफ किये और शव को मंत्र पढ़ते-पढ़ते अर्थी पर रखा। बाद में शव को रस्सी से बांधने लगे। मैंने कभी देखा नहीं था कि शव को अर्थी पर कैसे रखा जाता है। रस्सी से बांधना मुझे चुभा। मैं रोकने ही वाली थी कि बापू ने टोक दिया। बोले, "शव को बांधना ही पड़ता है।" ब्राह्मण ने एक शाल शव पर डाला, जो मिल का बना था। मैंने बापू से पूछा, "क्या मिल की चादर डालनी है?" कहने लगे, "बस चलने दो।" उन्होंने सोचा होगा कि कैदी की हैसियत से हमें इन बातों की नुक्ताचीनी करने का हक नहीं है।

अर्थी उठाकर सीढ़ी से नीचे लाये। अब उसे उठाकर कन्धों पर रखने लगे। छः आदमियों ने मुश्किल से उसे कंधों पर उठाया। बाकी सब पीछे चले। बापू ने आग की हंडिया उठाई। वह बा को संभाल रहे थे। शव चिता पर रखा गया। बा के लिए दूर एक कुर्सी रखी गई। उनके लिए अग्निदान की क्रिया को देखना असहनीय था। वह दुःख से पागल-सी हो रही थीं। आंसू-भरी आंखों से दोनों हाथ जोड़कर आकाश की ओर देखती थीं और बार-बार कहती थीं, "भाई तुं ज्यां जजे सुखी रहेजे। भाई, तुं सुखी रहेजे। तें बापुजी नी घणी सेवा करी छे। बधा ने सुख

कणे कणे च प्रभुरस्मदन्त-
स्तथा समीपे परितः स्थितोऽस्ति।
कस्मै प्रकाशं निजदर्शनं स्याद्
धृतं स्वनिर्धारण एव तेन ॥४५॥

नियमिततमे ऽर्थबोधे
मूलस्थो ह्रीश्वरः शिवाशिवयोः।
धातक-कौक्षेयकमपि
निर्दिशति तद्वच्चशल्यभृच्छस्त्रोम् ॥४६॥

बापू कहा करते हैं, "भावना तो महादेव की खूराक थी।"[१]

बापू के उपवास की चिंता तो उनके सिर पर हमेशा सवार ही रहती थी। उन्होंने मुझसे कई दफा कहा था, "मैं ईश्वर से एक ही प्रार्थना किया करता हूं कि मुझे बापू से पहले उठाले ! और साथ ही यह भी कह दूं कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना को कभी ठुकराया नहीं है। हमेशा पूरा किया है।"

भण्डारी के साथ बात करते समय कौन जाने उनका कौन-सा मर्म-स्थल छू गया होगा, क्या विचार मन में आया होगा कि जिससे एकाएक ऐसा होगया हो। और इंजेक्शन बेचारा तो न नुकसान कर सकता था, न फायदा। जब खून का दौड़ना ही बंद होगया था, तब नस में दिये हुए इंजेक्शन का कोई मतलब ही नहीं था। वह हृदय तक पहुंचे कैसे ? हृदय तक पहुंचने के लिए तो उसे सुई द्वारा सीधा हृदय की मांस-पेशी में दिया जाता, तो वह काम दे सकता था। फिर सिर पर भूत सवार हुआ। सीधा हृदय में इंजेक्शन दिया होता, तो वह उठ बैठते। इस विचार ने मुझे बहुत परेशान कर दिया। मैंने बापू से भी कहा। बापू कहने लगे, "होता भी, तो मैं तुम्हें देने नहीं देता। जितना करने दिया, उसपर भी मुझे अफसोस है। महादेव ने जीने का मोह छोड़ दिया था और मैंने तो हमेशा कहा है कि जो आदमी जीने का मोह छोड़ देता है, उसकी देह अपने-आप छूट जाती है।"

पहले भण्डारी वगैरा यहां दाहक्रिया करने का विरोध कर रहे थे। कहते थे, "कहीं पानी आ जायगा तो क्या करेंगे ?" आकाश में बादल थे जरूर, लेकिन अर्थी के उठाने तक ही थोड़ी बूंदें आती रहीं, मानो आकाश भी आंसू बहाता हो। चिता जलाने को गये, उसके बाद बारिश बिलकुल नहीं आई। जब चिता की जगह पहुंचे तो आकाश में अंधेरा-सा लगा। मैंने ऊपर सर उठाकर देखा तो ऐसा मालूम हुआ, मानो टिड्डी-दल आया हो ! लेकिन वह टिड्डी-दल नहीं था, जंगली मक्खियों का दल था। इससे पहले या इसके बाद यहां कभी इतनी मक्खियां देखने में नहीं आई थीं।

शव जलाकर लौटे। बापू ने सबको हुक्म किया कि अब खाना चाहिए। पांच बज चुके थे। दो घंटे पहले जहां शव पड़ा था; जहां बैठकर आज सुबह महादेवभाई ने बापू के लिए रस निकाला था, वहीं बैठकर अब मैंने मौसम्बी का रस निकाला। बापू ने दूध और रस लिया। हम लोग सरोजिनी नायडू के कमरे में खाने को गये। टोस्ट, दूध, चाय वगैरा लिया, चायदानी पर नई 'टी कोज़ी'—चायदानी का आवरण—पड़ी थी। महादेवभाई या कोई और सुबह चाय के लिए कभी ज़रा देर से पहुंचा करते थे। सरोजिनी नायडू ने मुझसे कहा कि एक 'टी कोज़ी' बना दो तो चाय ठंडी न हुआ करे। कल मैंने अपना एक पुराना रंगीन ब्लाउज फाड़कर

[१] "Mahadev lived on his emotions."

अनुभवविषयोऽयं श्रद्दधाम्येतदेव
प्रकटयति न रूपं स्वीयमीशः कदाचित् ।
भवति कृतिरसौ तद्रूपमेकैव या वो
निबिडतमसि काले कारणं भाति मुक्तेः ॥४७॥

नादत्तप्रतिवाचमीश्वरमहं प्रत्यायमन परं
नोर्दिष्टं ।क्षितिजे धृतोऽन्धतमसेऽत्यन्तमासादयन् ।
कारासु प्रतिरुद्धकार्यविषमास्वेवं च दिव्येषु मे
स्वायुष्युज्झितवान्स मामितिमया नैकः क्षणः
स्मर्यते ॥४८॥

मुझे लगा, आज शाम को सिविल सर्जन बापू को देख जायं, तो अच्छा हो, क्योंकि आज मैं इतना आत्मविश्वास खो बैठी हूं कि अपने-आपको निकम्मा महसूस करने लगी हूं। मैंने भण्डारी से यह कहा। उन्होंने सिविल सर्जन को भेजा। वह बेचारे आये। हाल-चाल पूछकर और नाड़ी देखकर चले गये।

आठ-साढ़े आठ बजे बापू बिस्तर पर पड़े। नौ बजे भण्डारी का संदेश मिला। महादेवभाई की पत्नी का पता पूछते थे। शव को स्नान कराने के बाद दोपहर को भण्डारी ने बापू से पूछा था कि क्या महादेवभाई के घर खबर भेजना चाहते हैं? बापू ने कहा कि सरकार भेजने दे, तो तुरन्त भेजना चाहते हैं, मगर उनका संदेश तुरंत सीधा और बगैर काट-छांट के जाना चाहिए। उन्होंने उसी समय तार का मजमून लिखा—चिमनलालभाई के नाम। शुरू किया—'Sorry, Mahadev died suddenly". (खेद कि महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई।) मगर फिर एक गये। खेद क्यों? महादेवभाई अपने धर्म का पालन करते हुए गये हैं। इसलिए काट-कर यह तार लिखा :

"Mahadev died suddenly. Gave no indication. Slept well last night. Had breakfast. Walked with me. Sushila jail doctors did all they could, but God had willed otherwise. Sushila and I bathed body. Body lying peacefully covered with flowers incense burning. Sushila and I reciting Gita. Mahadev has died yogi's and patriot's death. Tell Durga, Babla and Sushila no sorrow allowed. Only joy over such noble death. Cremation taking place front of me. Shall keep ashes. Advise Durga remain Ashram but she may go to her people if she must. Hope Babla will be brave and prepare himself fill Mahadev's place worthily. Love—BAPU"[1]

[1] महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई। पहले जरा भी पता नहीं चला। रात अच्छी तरह सोये। नाश्ता किया। मेरे साथ टहले। सुशीला और जेल के डाक्टरों ने जो कुछ कर सकते थे, किया; लेकिन ईश्वर की मर्जी कुछ और थी। सुशीला और मैंने शव को स्नान कराया। शरीर शांति से पड़ा फूलों से ढका है, धूप जल रही है। सुशीला और मैं गीता-पाठ कर रहे हैं। महादेव की योगी और देशभक्त की भांति मृत्यु हुई है। दुर्गा, बाबला और सुशीला से कहो, शोक करने की मनाही है। ऐसी महान् मृत्यु पर हर्ष ही होना चाहिए। अंत्येष्टि मेरे सामने ही हो रही है। भस्म रख लूंगा। दुर्गा को सलाह दो कि आश्रम में रहे, लेकिन अगर वह जाना ही चाहे, तो घरवालों के पास जा सकती है। आशा है, बाबला बहादुरी से काम लेगा और महादेव का सुयोग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए अपनेको तैयार करेगा। स्नेह—बापू

तादात्म्यं यदि भारते
लघुतमेनार्तेन सार्धं मया
साध्यं स्यात् क्षमता च मे यदि
तदा तादात्म्यसिद्धिर्मम ।
पात्यैरल्पतमैर्भवेदघवशै-
रेवं विनम्रश्चरन्
नाशासे प्रभु-सत्य-सम्मुखमुप-
स्थास्येऽह्नि कस्मिंश्चन ॥४९॥

प्राणी सम्भवविभ्रमो हि मनुजो
नात्माध्वनिर्णायको
नान्तःस्फूर्तिदमप्रभावकरम-
प्यादेशवं मामकम् ।
अहंत्युज्झितविभ्रमं नियमनं
ह्येकः पुमानेनसो मुक्तं
पूर्णतयास्ति यस्य हृदयं
साध्ययंना नास्ति मे ॥५०॥

: ७ :

विषाद की छाया

१६ अगस्त '४२

२।। बजे बापू उठे। मैं तो जागती ही थी। बापू क्षणभर भी नहीं सोये थे। मैं भी नहीं। बापू ने उठकर दतौन की। गरम पानी पीया। हमने प्रार्थना की। आज रविवार था। आठवें अध्याय में पढ़ा कि जब सूर्य उत्तरायण होता है और शुक्ल-पक्ष होता है, तब पुण्यात्मा देह छोड़ते हैं और फिर इस लोक में नहीं आते। आज-कल शुक्ल पक्ष है और सूर्य भी उत्तरायण है।

प्रार्थना के बाद बापू आध घंटे तक मुझसे बातें करते रहे। वह हमें शांत कर रहे थे और विपक्तियों का सामना करने की तैयारी करवा रहे थे। मृत्यु के बारे में ज्ञान-वार्ता कर रहे थे। शायद भाई भी जायं, तो उसके लिए मेरी मानसिक तैयारी करवा रहे थे। मैंने कहा, "भले हम सब एक-एक करके चले जायं, पर आप अच्छे रहें और विजयपताका फहराते हुए यहां से बाहर जायं, यही प्रार्थना आज तो हृदय से निकलती है।"

३।।। बजे बापू वापस बिस्तर पर गये। थोड़ी नींद ली। आज रातभर में उन्हें दो घंटे की भी नींद नहीं मिली। मैं भी प्रार्थना के बाद थोड़ी सोगई।

नाश्ते के बाद बापू चिता-स्थान पर गये। चिता अभी जल रही थी। अंगारे धधक रहे थे। यह है हमारे प्रियतमों का अंत!—मुट्ठीभर राख और अंगार! प्रभु, धन्य हो तुम! और धन्य है तुम्हारी लीला! एक सप्ताह पहले आज ही के दिन बापू और महादेवभाई आजादी की लड़ाई शुरू होने से पहले ही बम्बई में पकड़ लिये गये थे और आज महादेवभाई तो आजाद भी होगये। कौन कैद कर सकता है अब उनको?

बापू के कहने से चिता-स्थान पर खड़े होकर बारहवें अध्याय का पाठ किया। 'तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी' (निंदा और स्तुति को एक समान माननेवाला, मौन रखनेवाला) पढ़ते समय आंख के सामने तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी महादेवभाई का शव पड़ा था। उस शव के चेहरे की अपूर्व शांति और कान्ति सामने मौजूद थी।

पाठ करके हम लोग वापस आये। बापू के लिए सुबह का साग बनाने का काम मीराबहन ने ले लिया, साग का मैंने। रस निकालने का काम मेरा था। दोपहर को शाम के लिए साग चढ़ाने नीचे रसोईघर में गई तो भूरा और मगन मेरे पास आकर खड़े होगये। बोले, "बहन, गजब होगया! हममें से कल किसीने खाया नहीं। जब कल फूल इकट्ठे करने को कहा गया तो मैंने सोचा, माताजी बीमार थीं, वह गई होंगी। लेकिन जब हमें ऊपर बुलाया तो सच्ची बात का पता चला। बड़ा जुल्म हुआ है, बहन! सभी कैदी और सिपाही कांपते हैं।"

ईशोऽकार्षीन्मदीयं सदवनमखिले सम्परीक्षाप्रसङ्गे
रक्षामीशो व्यधान्मे वहति वच इद मत्कृतेऽर्थं प्रगाढम् ।
जानाम्येतत्तथाप्याशयमविकलमस्याविदं नेति भाति
द्राघीयान्केवलं मेऽनुभव उत्तरोद्बोधदाने
क्षमःस्यात् ॥५१॥

या प्रार्थनाहोस्विदुपासना वा
सा वाग्मितौघो न पुनः प्रशंसा ।
न वर्तते केवलमोष्ठसंस्था
हृदिद्वयं तल्लभते निसर्गम् ॥
प्रेमेतरोद्वेवितनिर्मलं हृत्-
तन्त्रीश्च संवादसहा यदा स्युः ।
तत्कम्परागः परनेत्रगः स्यात्
न प्रार्थनावश्यकवाक्प्रयुक्तिः ॥५२॥

नाटक, 'सिलवर स्ट्रीम', 'ए चाइनीज प्ले' और कुछ कपड़े, बस इतनी चीजें थीं।

बापू कहने लगे, "इसमें तो छः महीने के अभ्यास का सामान है।" बाइबिल पढ़ना शुरू किया। 'बैटिल फॉर एशिया' भी निकाली। 'मुक्तधारा' भी पढ़ना प्रारंभ किया।

बापू मुझसे कहने लगे, "आज से, या जबसे आई हो, तबसे डायरी लिखना शुरू करदो।" मैंने कहा कि कल से मैं लिखने लगी हूं। महादेवभाई की लिखी कुछ चीजें भी दिखाईं—नोट्स थे। बापू ने मेरी डायरी लेकर पढ़ी—एक-आध बात लिखना मैं भूल गई थी, उसकी ओर मेरा ध्यान खिंचाया। जैसे, गीताजी का कितना पाठ किया था, वगैरा।

१७ अगस्त '४२

आज तीसरा रोज है। बापू अच्छी तरह सोये। मैं आज भी नहीं सो सकी। मि० कटेली भी नहीं सोये। रात को ऊपर उनके टहलने की आवाज आ रही थी।

५ बजे बापू उठे। प्रार्थना की। नाश्ते के बाद चिता-स्थान पर गये। रात वाली की बूंदें आई थीं। राख का रंग काला पड़ गया था।

मृत्यु के एक-दो दिन पहले महादेवभाई बकरी का एक चितकबरा बच्चा उठाकर बापू के पास लाये थे। वह उसे बहुत प्यार कर रहे थे। उसका मुंह चूम रहे थे। बच्चा बहुत सुन्दर है। वह कुछ तो समझता होगा। जब हम चिता की जगह जाने के लिए नीचे आते हैं, वह आकर पांवों में लिपटने लगता है। मैं उसे उठाकर चिता-स्थान पर ले गई। वहां मुझे बारहवें अध्याय का पाठ करना था (यह रोज सुबह का नियम बन गया है)। बकरी का बच्चा भी जरा चिल्लाने लग गया था। मैं उसे छोड़ने लगी, मगर मीराबहन ने उसको मुझसे लेलिया। बाद में उन्होंने बताया कि पाठ शुरू होते ही वह इतना शांत होगया था, मानो ध्यान लगाकर सुन रहा हो।

स्नान के बाद बापू ने फिर महादेवभाई की राख का टीका लगाया। कह रहे थे, "यह राख में कुर्ता के पास ले आऊंगा। वह अबसे रोज इसका टीका लगाया करेंगे।"

ब्राह्मण आया हुआ था। बापू से पूजा, पिण्ड-दान, तर्पण इत्यादि करवाया। शांति-पाठ किया। सरोजिनी नायडू ने बाद में मुझे बताया कि पूजा करते समय बापू का चेहरा इतना गंभीर और तना हुआ था कि देखा नहीं जाता था। मैं तो पूजा के समय पूजा की क्रिया को ही देख रही थी और शांति-पाठ को समझने की कोशिश कर रही थी। मैंने बापू की ओर ध्यान से नहीं देखा। २० मिनट में पूजा पूरी हुई। एक पिता के लिए अपने पुत्र की उत्तर-क्रिया करना बड़े-से-बड़े दुख की बात होती है और बापू के निकट तो महादेवभाई पुत्र से भी अधिक थे। लेकिन बापू कौन साधारण पिता हैं? कल कह रहे थे, "ईश्वर मुझे कैसा कसौटी पर कस रहा है! अगर मैं इन चीजों से विचलित होजाऊं तो मेरा काम कैसे चले?"

दोपहर को खाने के समय बम्बई के गवर्नर का उत्तर आया। बहुत खराब था।

इयं श्रद्धा मे यत् प्रभुचरणयोरर्चनमवाग्
दलीयःसामर्थ्यं स्फुटकृतिमतीत्यापि भवति ।
अदत्तप्रत्युक्तिर्भजति न कदाचिद्विफलता-
मिति श्रद्धां धृत्वा सततमहमभ्यर्चनपरः ॥५३॥

नेशोऽभियाचतेऽन्यल्लघुतरमात्मार्पणान्निरवशेषात् ।
मूल्यं खल्वादानोचितसत्यायाः स्वतन्त्रताया यत् ॥
एवं यदा जहाति स्वकीयतां मानवस्तदा सद्यः ।
पद्यज्जीवति तस्यात्मानं सेवापरायणं लभते ॥५४॥

गये ? कई लोग कहते हैं कि जब एक शरीर छूटता है, तो दूसरा तैयार ही रहता है।"

बापू कहने लगे, "नहीं, कहा यह जाता है कि स्थूल शरीर छूट जाने पर आत्मा लिंग शरीर लेकर इहलोक से अन्य लोकों में चला जाता है। बहुत अरसे तक वहां रहकर फिर समय आने पर जन्म लेता है।"

: ८ :

पुण्य-स्मरण

१८ अगस्त '४२

सुबह-शाम बापू महादेवभाई की समाधि पर जाते हैं। बापू इसे तीर्थ-यात्रा मानते हैं। न जायं तो बेचैन हो उठें। जब बारिश होती रहती है, तब छाता लेकर भी जाते हैं। मैं थोड़े फूल ले जाती हूं। आखिरी दिन घूमते समय महादेवभाई येलिया के पौधों को कलियों से लदा देखकर बोले थे, "अब फूल खूब आयेंगे।" ये फूल अब खिल रहे हैं। सो थोड़े ले जाते हैं। जीते-जी हम लोग इन्सान की कदर नहीं करते। मृत्यु के बाद सभी श्रद्धांजलि चढ़ाने को तैयार हो जाते हैं। महादेवभाई की कीमत तो हम सब उनके जीते-जी भी जानते थे, मगर उनके जाने के बाद पता चलता है कि शायद उनके जीवन-काल में हमने उनकी पूरी कीमत नहीं समझी थी।

हमारे पास कलेण्डर नहीं था। मगर बापू ९ अगस्त को रविवार के दिन पकड़े गये थे। उसपर से उन्होंने मुझे कलेण्डर बनाने को कहा था। आज दोपहर में बनाने बैठी। बापू ने भी मदद दी। मुझे तीन बार कलेण्डर बनाना पड़ा। कहीं-न-कहीं कोई भूल रह ही जाती थी। आखिर प्रार्थना के बाद कलेण्डर तैयार हुआ। कलेण्डर की खास जरूरत तो बा को एकादशी वगैरा बताने के लिए थी।

१९ अगस्त '४२

महादेवभाई की समाधि पर मैं रोज फूल ले जाती थी। आज मि० कटेली ने सिपाही से कहकर फूलों की एक पत्तल सजवाकर तैयार रखी थी। मि० कटेली पर श्री महादेवभाई के आकर्षक व्यक्तित्व ने खासा असर डाला था। बापू कह रहे थे, "महादेवभाई की मृत्यु के समाचार से बहुतों के दिल टूट जायंगे।"

यह अक्षरशः सच था। जो उनके संपर्क में इतने कम आये थे, उनको उनके जाने से इतना सदमा पहुंचा है तो उनके निकट के मित्रवर्ग का और सगे-सम्बन्धियों का क्या हाल हुआ होगा, कौन कह सकता है। बापू रोज स्नान करके महादेवभाई

लङ्घनं बहुशोऽवश्यं
देहं धर्तुमनामयम् ।
प्रार्थनालङ्घनं नाम
वस्तु किञ्चिन्न विद्यते ॥५५॥

शिक्षामनुभवो मेऽवाद्
यन्मौनमनुशासनात् ।
आध्यात्मिकाद्गृहीतोंऽशः
सत्यभक्तस्य वर्तते ॥५६॥

ही ढंग का है।' " बापू बोले, "हां, सो तो मैं जानता हूं। मैं आपको या भण्डारी को मुश्किल में नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर भण्डारी को आपत्ति न हो तो मैं इस बात को अवश्य ही आगे बढ़ाना चाहूंगा। जरा उल्लेख तो रह जाय कि वह किस हद तक जाते हैं। आपने इस समाधि के चारों ओर पत्थर रखवाये हैं, लेकिन इतना मैं आपसे कह दूं कि इसपर भी आपत्ति की जा सकती है।"

मि० कटेली चुपचाप सुन रहे थे। बापू फिर कहने लगे, "मैं तो यह मानता हूं कि मैं जो कुछ कर रहा हूं, सो ईश्वर मुझसे कराता है, नहीं तो मैं क्या हूं—एक दुर्बल आदमी! मेरी क्या शक्ति कि इतने बड़े साम्राज्य के विरुद्ध लड़ सकूं! और हिन्दुस्तान की प्रजा की क्या शक्ति, जिसके पास लाठी तक नहीं!"

२१ अगस्त '४२

आज बापू ने लिखकर बताया कि सोमवार छः बजे तक का मौन लिया है। सब मिलकर ६१ घंटे का मौन होगा। बुरा लगा, मगर कुछ कहना फिजूल था। प्रार्थना के बाद बापू सो गये।

नाश्ते के बाद हम रोज की तरह फूल लेकर चले। सारोंवाला दरवाजा खुला। मगर हम उसके बाहर नहीं गये। सिपाही फूलों का पत्ता ले गया। दरवाजे के इस पार खड़े होकर हमने गीताजी का पाठ किया। शाम को भी फूल लेकर गये। इस समय दरवाजा भी नहीं खुला। तार में से ही सिपाही फूल ले गया।

बापू के मौन से दम घुटने लगा है।

बा कह रही थीं, "देखो, महादेव गये। अब्राहम की मृत्यु हुई, मणिबहन है नहीं इतनी बड़ी ताकत के खिलाफ बापू लड़ रहे हैं। कैसे जीतेंगे!" बापू ने सुना तो कहने लगे, "मैं इसे शुभ शकुन मानता हूं। शुद्धतम बलिदान हुआ है। इसका परिणाम अशुभ नहीं हो सकता।"

२२ अगस्त '४२

आज महादेवभाई को गये हफ्ता पूरा हुआ। आज सरोजिनी नायडू भी तार तक आईं। उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती, इसलिए वह रोज नीचे नहीं उतरतीं। हफ्ते में एक बार उतरने का विचार किया है।

बापू का मौन था। मैंने आज २४ घंटे का उपवास किया। गीता का पारायण भी किया।

यशोसाहब का समवेदना का तार आया। बापू ने लिखकर बताया "हजारों तार और खत आये होंगे। उनमें से एक मथुरादास का खत और अणेजी का तार हमें दिया है, क्योंकि मथुरादास मेयर रह चुके हैं, बम्बई सरकार के सब लोगों को जानते हैं और अणेजी तो आज सरकार के ही हैं।"

बापू का मौन था। वातावरण बहुत ही दम घोटनेवाला-सा बन गया है। 'श्रीमैन कॉल्ड वाइल्ड' पढ़ रही थी। हार्लिदे हदीव का वर्णन बापू को पढ़कर

क्वचिद्भवेदल्पवचा विवेक-
भ्रष्टो ब्रुवाणः प्रतिशब्दमाता ।
भूयिष्ठसाहाय्यदमस्ति मौनं
त्वस्मादृशः सत्यगवेषणस्य ॥५७॥

काप्यापत्तिर्नास्ति सा चेदनेके
लोका वाणीमान्तरां भावयेयुः ।
आत्माचारे सत्यरूपां परन्तु
हन्तोपायो नास्ति दम्भस्य कश्चित् ॥५८॥

जानबूझकर मरना नहीं चाहता। लेकिन ऐसी कोई परिस्थिति आ ही जाय तो कहा नहीं जा सकता कि क्या करूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम कुछ विचार करो। लेकिन विचार को जबतक कार्यरूप में परिणत न किया जाय, वह निकम्मा है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम कुछ लिखो। मैंने पहले भी तुमसे एक बार कहा था कि एक दफा 'मा ने शिखामण' (मां को सीख) नाम की गुजराती की एक पुस्तक मेरे देखने में आई थी। अच्छी पुस्तक थी। उस तरह की कोई चीज तुम्हें लिखनी चाहिए, जिससे बहनों और लड़कियों को स्वास्थ्य का आवश्यक ज्ञान मिल जाय। मैं खुद भी लिखना शुरू करनेवाला हूं। नोटबुक मंगवा लेना।"

: ६ :

महादेवभाई के बाद

२६ अगस्त '४२

आज भण्डारी आये। कहने लगे, "आप लोग जो किताबें मंगवाना चाहें, मुझे बतायें। मैं खरीद लूंगा। बाद में वे जेल-लाइब्रेरी के काम में आजायंगी।" साथ में बहुत-सी किताबें और कुछ स्वास्थ्य-सम्बन्धी अखबार भी लाये थे।

शाम को बापू बिस्तर पर लेटे कि तभी मि० कटेली बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी का भेजा एक हुक्मनामा लाये। उसमें लिखा था कि बापू को अखबार मिल सकते हैं। वह फेहरिस्त भेजें, और हम लोग अपने घर के लोगों को घरेलू विषयों पर पत्र लिख सकते हैं।

बापू रात ठीक तरह से सो नहीं पाये। जिस शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत आई थी, वह उन्हें मंजूर नहीं है।

बापू ने आज 'आरोग्य नी चावी' की प्रस्तावना लिखी। यह बापू की पुरानी किताब 'गाइड टू हैल्थ' की नई आवृत्ति होगी।

आज महादेवभाई होते तो अखबार मिलने की खबर से और इस बात से कि बापू एक किताब लिखने लगे हैं, कितने खुश होते!

बा की तबीयत अच्छी है। बापू के साथ सुबह-शाम आधा-पौन घंटा तेजी से घूम लेती हैं, मगर दम फूलने लगता है। मैंने एक-दो बार कहा भी कि यह अच्छा नहीं। कम घूमें या धीमे घूमें, मगर बा या बापू कोई भी सुनने को तैयार नहीं।

२७ अगस्त '४२

आज बापू ने अखबारों की फेहरिस्त सरकार को दी। रोजाना, हफ्तावार और माहवार सब मिलाकर १६ अखबारों के नाम फेहरिस्त में थे। दोपहर को बम्बई

क्षमो न यावच्छ्रवणे गिरोऽस्या
नरोऽनुयायात्कठिनं सुदीर्घम् ।
शिक्षाश्रमं नोत्थितसंशया सा
यदान्तरा गीर्भवति स्फुटा या ॥५९॥

ईशो हि केवलात्मास्ति तस्माज्जातिश्च मानवी
इति श्रद्धा ममेशश्च निराकारः सदैव सः ॥
यामश्रौषं च सा वाणी दूरायातेव भाति मे
तथाप्येषा समीपस्थस्थलोद्भूतेव भासते ॥६०॥

टॉफी[1] बन गई।

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये दो हफ्ते पूरे हुए। मैं उपवास करना चाहती थी, मगर बापू ने रोक दिया। बोले, "ऐसा करके हम मृत व्यक्ति के साथ न्याय नहीं करते। एक तरह से हम उसे बांध लेते हैं।" बाद में महादेवभाई की मृत्यु के क्या-क्या कारण हो सकते थे, इसकी चर्चा करते रहे। इसलिए आज गीता का पाठ नहीं हो सका। मुझे याद आया कि ऐसे ही एक दिन जमनालालजी बैठे थे। कहने लगे, *"यह पुनर्जन्म की ही बात होगी; नहीं तो कहां तुम, कहां हम और कहां बापू!"* सच है। कैसे हम सब इकट्ठे हुए!

रातभर पानी बरसा था। सुबह भी थोड़ा बरसता था। फिर भी बापू महादेवभाई की समाधि पर पुष्पांजलि चढ़ाने गये ही। जाना तो कंटीले तारों की हद तक ही था। वहां छातों के नीचे खड़े-खड़े गीता का पाठ किया। फिर वापस आकर ऊपर बरामदे में घूमे।

आज रसोइया मगन और मूरा दोनों नहीं आये। उन्हें उनकी मुद्दत से पहले ही छोड़ दिया गया था। जेल में राजनैतिक कैदियों के लिए जगह की जरूरत थी।

२० अगस्त '४२

आज बापू को यहां आये तीन हफ्ते पूरे हुए।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "छः महीनों के अंदर हमें इस जेल से बाहर निकलना ही है। हमारी लड़ाई सफल हुई तो भी, और लोग हारकर बैठ गये तो भी। मैं नहीं जानता, लोग क्या करेंगे। लेकिन मैं यह जानता हूं कि लोग लड़ाई के लिए तैयार नहीं थे। हमने तैयारी की ही नहीं थी; लेकिन अहिंसा का काम करने का रास्ता दूसरा ही होता है। इसलिए हमें निराश होने का कोई कारण नहीं। हम नहीं जानते कि ईश्वर ने क्या सोच रखा है। जो हो, लेकिन जितने आप इस लड़ाई के लिए निकल पड़े हैं, उनकी मर मिटने की तैयारी होनी ही चाहिए। वे आजाद हुए बिना चैन नहीं लेंगे। अगर आजादी के लिए लड़ते-लड़ते वे खत्म भी हो गये तो खुद तो आजाद हो ही जायंगे।"

मैंने पूछा, "उस हालत में हम लोगों को सरकार का सामना किस तरह करना होगा, जिससे या तो उसे हिन्दुस्तान को आजाद कर देना पड़े, या हमीं को खत्म कर डालना पड़े?"

बापू कहने लगे, "सत्याग्रह करने के अनेक रास्ते हो सकते हैं। अगर सचमुच हम मुट्ठीभर लोग ही सत्याग्रह करनेवाले रह गये, तब तो वे लोग हमें चुन-चुनकर मार डालेंगे।"

मैंने कहा, "हां ठीक है, मगर यह सब तो छूटने के बाद की बातें हुईं न?"

---

[1] एक अंग्रेजी मिठाई

स्वप्नावस्था न हि मम पुराकर्णिता मे यदासीद्
वाणी यावच्छ्रवणमथ मे दारुणो विग्रहोऽभूत् ।
सद्यो वाणीं मयि निपतितां तां निशम्यावधार्यं
वाणी सैवं तदनु विरते विग्रहे शान्तिमापम् ।।६१।।

कल्पनायाः स्वकीयायाः
सृष्टिरेव स्वयं प्रभुः ।
मन्यन्ते केचिदेवं तु
सति सत्यं न किञ्चन ।।६२।।

दोपहर को बापू मुझसे कहने लगे, "तुम्हें अपने एक-एक मिनट का हिसाब रखना चाहिए। हिंसा के इस समुद्र में अहिंसा को अपना स्थान ढूंढ़ लेना है और यह हमारे जीवन को नियमित बनाने से ही हो सकता है।"

आज कृष्णाष्टमी है। बहुत दिन पहले बापू ने मीराबहन को हाथीदांत की बनी हुई बालकृष्ण की एक मूर्त्ति दी थी। किसीने वह बापू को भेंट की थी। मीराबहन पास में थीं। बापू ने वह उनको दे दी। कई वर्षों से वह उनके बक्स में पड़ी थी। आज उन्होंने उसे निकाला और उसकी पूजा की। बा की बिन्दी के बारे में बात हुई। बापू को पता ही नहीं था कि बा भी बिन्दी लगाती हैं, और बा दिन-रात बापू की आंख के सामने रहती हैं!

३ सितम्बर '४२

आज अखबार देर से आये। वर्षा के कारण लाइनें टूट गई हैं। इसलिए डाक देर से आई।

बापू ने वाइसराय के नाम एक तार लिखा। उसमें बताया कि अखबारों की खबरों का उनके मन पर क्या असर हुआ है।

४ सितम्बर '४२

आज वाइसराय को तार के बदले पत्र लिखने का विचार किया। मि० कटेली कहते थे कि तार यहां से नहीं जा सकेगा। बम्बई की सरकार शायद अपने 'कोड' शब्दों में भेज सके। पहले बापू ने विचार किया कि भण्डारी से कहें कि वह फोन पर बम्बई सरकार से पूछ लें। मगर बाद में विचार बदल गया। कहने लगे, "तार में सब विस्तारपूर्वक कह भी नहीं सकूंगा। इससे पत्र भेजना ही ठीक होगा।" दोपहर को पत्र पूरा करके सोये। मुझसे कहा कि उनके उठने से पहले उसकी एक साफ नकल तैयार करके रखूं। मैंने नकल तैयार की। उठने के बाद उसे फिर से पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते फिर विचार बदला और कुछ भी न भेजने का निश्चय किया। कहने लगे, "इस पत्र में मैं कोई नई चीज नहीं दे रहा हूं। इससे उन लोगों को चिढ़ ही आ सकती है। वाइसराय अगर मित्र है तो उसे चिढ़ाना नहीं चाहिए। और मित्र नहीं है, तो दुश्मन को लिखने से फायदा ही क्या? लोगों की हिंसा को देखकर यदि मैं आन्दोलन बन्द करने का निश्चय करता तो बात दूसरी थी। मगर आज तो मेरे सपने में भी यह चीज नहीं है। तो फिर लिखने से फायदा क्या?" इतने में सड़क पर से कुछ लोग जोरों के साथ 'महात्मा गांधी की जय' पुकारते हुए गुजरे। बापू बोले उठे, "इसके साथ मेरे पत्र का क्या मेल!"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। छाती में दर्द रहता है।

शाम को समाधि पर तार के इस पार खड़े होकर सिपाही को फूल देते समय मैंने कहा, "इस तरह यहां खड़े होने से खूब अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि हम कैदी हैं और कैद चुभने लगती है।"

वस्तूनि सत्यात्मतमानि तद्वत्
वर्तन्त एवं तुलनात्मदृष्टौ ।
वाणी मदर्थं खलु जीवनात्सा
मता मया सत्यतरा स्वकीयात् ॥
तया कदाचिन्न समुज्झितोऽहं
कथा तथा चान्यतरस्य नास्ति ।
शुश्रूषमाणो मनुजोऽखिलस्तां
वाणीं समाकर्णयितुं समर्थः ॥६३॥

ऐशीं वाणीं शृणोमि प्रथमसमुदिता नेयमभ्यर्थना मे
प्रामाण्यं किन्तु तस्याः परिणतिनिवहान्नान्यदस्ति
प्रकाशम्
दौर्भाग्यान्मामकीनाद् विभुरपि स विभुर्न-
भविष्यत्प्रजाभिः
स्वीयाभिः कर्तुमात्मप्रमितिविषयतां
यद्यनुज्ञामदास्यत् ॥६४॥

की झिल्ली का है। उसमें हृदय भी आंशिक कारण हो सकता है। हृदय में कोई विशेष विकार या दोष नहीं है।"[1]

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। बा के हृदय की स्थिति साधारण कहना कैसी अजीब बात है! बा को तो श्वांस की नली की सूजन और उसके कारण कफ इकट्ठा होने की पुरानी शिकायत है। इस वास्ते सांस लेने में कफ की घड़घड़ाहट होती है। उन्होंने कफ की आवाज को फेफड़ों की झिल्ली की रगड़ की आवाज समझा होगा, भगवान ही जाने। दिल की मांसपेशियों की कमजोरी है। हृदय का बायां किनारा अपनी जगह से बढ़ा हुआ है। दिल के परदे में सिकुड़न के समय स्पष्ट आवाज होती है। बात तो यह है कि जब वह मन में दिल की बीमारी की शंका रखते हैं तो उन्हें हृदय को जरा ज्यादा ध्यानपूर्वक देखना चाहिए था।

उन लोगों के जाने के बाद डा० शाह आये।

बा कल से बिस्तर पर हैं। डाक्टरों के आने का इतना फायदा हुआ कि बा समझ गईं कि सचमुच बीमार हैं और उन्हें खाट पर पड़े रहना चाहिए, नहीं तो पूरी कोशिश करने के बाद भी मैं उन्हें आजतक बिस्तर पर नहीं रख सकी थी।

७ सितम्बर '४२

आज सवेरे कर्नल शाह और भण्डारी आये। भण्डारी कहने लगे, "अबसे यह ही यहां आया करेंगे, सिविल सर्जन नहीं। मुझे इनपर बहुत विश्वास है। इनके हाथ में शफ़ा है।"

मैंने बा के दिल की धड़कन का ग्राफ—नक्शा—बनाने को कहा। दोपहर को डाक्टर कोयाजी आये और उन्होंने वह नक्शा उतारा। सामान्यतया ऐसा चार जगह बिजली के तार लगाकर किया जाता है, उन्होंने सिर्फ पहले तीन स्थानों से ही किया। मैंने चौथे स्थान से भी लेने को कहा, मगर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।

सड़क की ओर से 'महात्मा गांधी की जय' का नाद आ रहा था। आज कोई बड़ी सभा हुई होगी।

कैदियों से भरी तीन लारियां सड़क पर से गईं। मालूम होता है, सरकार खूब जुल्म कर रही है। मगर अभीतक तो लोग भी हिम्मत दिखा रहे हैं।

आज भण्डारी कह रहे थे, "एक-दो दिन में आप अपने लिए मदद की उम्मीद रख सकती हैं।" शायद भाई आनेवाले होंगे। बापू से मैंने जिक्र किया तो कहने लगे, "मुझे तो अब उसके आने की आशा बहुत कम है। जब सामने आकर खड़ा हो जायगा, तब मानूंगा कि आया।" उसके बाद बताने लगे कि उन्हें आज ही स्वप्न आया था कि भाई उनके सामने बैठे हैं। कहने लगे, "स्वप्न क्या, मैं तो आधे से ज्यादा

---

[1] "Pain is pleuritic. There may be some coronary element as well. Heart, n.a.d."

परित्यक्तो नाहं घनतिमिरकालेऽपि विभुना
परित्राणं मेऽसौ मुहुरननुकूलस्य कृतवान् ।
मदर्थे स्वातन्त्र्यं लवमपि न तेन प्रणिहितं
यथा भूयस्तस्मै शरणमधिका मे मुदभवत् ।।६५।।

न ते त्वत्तोऽन्यस्मिन् भवतु खलु विश्वासकरणं
प्रयासेनान्तर्वाग् मननविषयोऽसौ भवतु ते ।
परं चेदन्तर्वागनभिमतशब्दस्तवकृते
समावेशो बुद्धेरिति वचनमप्योजनसहम् ।।
सचावेशः पाल्यस्तव, यदि च साडम्बरपर-
स्त्वमीशो सन्देहो न मम परमाडम्बरपदम्
भविष्यत्यन्ते यत् प्रमितमनुदृश्येत विभुता
विभोरस्मिल्लोके न परमपि नान्यः

सुभगतः ।।६६।।

डाला। जिन्दा रहा तो किसी दिन मैं जरूर उन्हें यह सुनाऊंगा कि महादेव की मृत्यु का कारण आप हैं। मैं मानता हूं कि वह जेल न आते तो कम-से-कम इस वक्त तो हरगिज न मरते। बाहर वह कई तरह के कामों में उलझे रहते। यहां वह एक ही विचार में डूबे रहे, एक ही चिन्ता उनके सिर पर सवार रही। वह उन्हें खा गई। उन पर भावना का कुछ इतना जोर पड़ा कि वह खतम होगये। देश ने कुछ भी नहीं किया। बैकुण्ठ मेहता की श्रद्धांजलि तो आने ही वाली थी और बरेलवी की भी। मगर महादेव तो सारे देश के थे और देश के लिए वह गये हैं। भगतसिंह की मृत्यु के बाद जब मैं लॉर्ड अर्विन से समझौता करके कराची आ रहा था तो लोगों के झुंड-के-झुंड हर स्टेशन पर मेरे पास आते थे और चिल्लाते थे, 'लाओ भगतसिंह को!' इसी तरह पब्लिक भी ये सरकार को कह सकते थे, 'लाओ महादेव को!' सरकार लाती तो कहां से? कह देती कि जो लोग इतने भावुक, इतने विक्षुब्ध और इतने संवेदनशील हैं, वे जेल में आते ही क्यों हैं? न आयें—वगैरा।" फिर बापू कहने लगे, "मगर लोग शायद सोचते होंगे कि आज सरकार के साथ ऐसा घमासान युद्ध चल रहा है कि उसमें दूसरी किसी चीज का विचार करने का अवकाश ही कहां रह जाता है!" मैंने कहा, "और आपने भी तो तार में लिखा था न कि जो किया जा सकता था, किया गया! इसके कारण भी लोग शान्त रह गये होंगे। समझे होंगे कि यह तो स्वाभाविक मृत्यु थी, जो कहीं भी हो सकती थी।" बापू ने कहा, "सो तो है, लेकिन मृत्यु हुई तो सरकार के जेल में न?"

बा अच्छी हो रही हैं। बापू को आज एक पतला दस्त हुआ। दो-तीन दिन से आलू और शकरकंद खाना शुरू किया था। शायद उसका असर होगा।

११ सितम्बर '४२

आज दोपहर में खाना खाकर उठी तो किसीने कहा, प्यारेलाल आ गये। मैंने ऊपर देखा तो वह सामने बरामदे में खड़े थे। बापू उनके आने की आशा छोड़ चुके थे। महादेवभाई को गये चार हफ्ते होने आये। ऐसा लगता था कि भाई को आना होता तो जल्दी ही आते। सो बापू कल ही कह रहे थे, "अब तो मेरे सामने आकर वह खड़ा रहेगा, तभी मैं मानूंगा कि वह आया।"

महादेवभाई की मृत्यु से भाई को बड़ा धक्का लगा था। कहने लगे, "आने की बात तो मैं किया करता था और चले गये वह!"

भाई ने बताया कि जिस दिन महादेवभाई की मृत्यु हुई, उसी दिन सवेरे करीब साढ़े आठ बजे उन्होंने पता नहीं क्यों उपवास करने का विचार किया था। (यहां आगा खां महल में करीब साढ़े आठ बजे ही महादेवभाई की तबीयत बिगड़ी होगी। भाई को तब कुछ पता न था कि यहां क्या होगया है।)

चर्चिल के भाषण से बापू को और हम सबको बड़ा आघात लगा। मन पर यह भी असर हुआ कि ऐसा भाषण लोगों को और भड़कायेगा और कड़ा बना

यथान्यासौ शक्तिर्निभृततनुवाचः श्रवणगा
हृदन्तःस्यायाःप्राग्व्यवसितमघीतं च वनुते ।
कदाचित्तेऽन्यस्मादपरबलमूलाद्गुरुतरे
सहस्रेर्वाप्यव्यतिपरिमिताः सन्ति कृतिनः ॥
अध्ययनास्थापनसिद्धिमन्तः
कामं सहस्रेषु मिता भवन्तु ।
सन्निबंधयाऽचार्यकृतां सताम-
प्यभीष्टमेव व्यसनं तदाप्तौ ॥६७॥

अभ्यर्थितप्रह्वगवेषणत्वो
मादृग् नरः स्यादतिसावधानः ।
योगं विधित्सुर्मनसो लभेत
शून्यीकृतात्मैव विभोर्निदेशम् ॥६८॥

कहां से आ सकती है ? मैंने तो अपनी इच्छा को भी ईश्वर के अधीन कर दिया है न ! तो उसे जब जो मुझसे कराना होगा, करायेगा । यों कहो कि आज ईश्वर मुझसे कोई इच्छा नहीं करा रहा। ठीक है, ईश्वर को लगा होगा कि आंदोलन ऐसे ही चल सकता है ।"

१४ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। महादेवभाई की समाधि पर जो पत्थर रखे थे, उनका आकार कब्र का था। बापू को वह खटका। हम सबको भी। इस कारण दो रोज हुए उसे चौरस करवा दिया है। रघुनाथ वगैरा ने गोबर से वहां लीप भी दिया है। उसपर छेद करके फूलों का ॐ बनाया। और जगह भी फूलों के लिए छेद किये। सजाने पर बहुत सुन्दर लगता है। मैंने कहा, "बापू, महादेवभाई होते तो बहुत खुश होते और कहते, 'बापू, कैसा सुन्दर दीखता है!'"

आज अखबारों से पता चला कि बापू का तार दुर्गाबहन वगैरा को भेजा ही नहीं गया था। ४ सितम्बर को वह दिल्ली से डाक के जरिये भेजा गया। हम सबको इससे बहुत आघात लगा। सरकार ने दुर्गाबहन वगैरा से तो माफी मांगी है, मगर वह मांगनी तो चाहिए बापू से।

बा अच्छी हैं, बापू की तबीयत भी ठीक है। वर्षा खतम होगई। दिन में खूब धूप होती है। रात को आकाश तारों से भरा होता है। बापू रात में कहने लगे, "मैं इन तारों के नीचे सो सकूं तो नाचने लगूं।" मैंने कहा, "हमें भी आकाश-दर्शन करायें।" कहने लगे, "हां, जितना याद है, उतना तो करा ही सकता हूं। यरवदा में मैं बहुत आकाश देखा करता था।"

१५ सितम्बर '४२

आज समाधि पर गीता ले जाना भूल गई। बारहवां अध्याय कंठ हो गया है। इस कारण मैंने सोचा, उसके पाठ में कोई कठिनाई नहीं आयेगी, मगर पढ़ते-पढ़ते एकाध श्लोक आगे-पीछे हो गया। घूमते समय बापू इसपर कहते रहे, "पूरा बारहवां अध्याय तो तुम्हारे लिए एक श्लोक के जैसा हो जाना चाहिए, फिर उसमें भूल हो नहीं सकती। और फिर इस बात का घमंड नहीं होना चाहिए कि तुमको सारा याद है। पादरियों को तो बचपन से ही बाइबिल का अभ्यास कराया जाता है। तो भी वे किताब सामने रखकर प्रार्थना-समाज में बाइबिल पढ़ते हैं, क्योंकि कहीं भूल हो जाय तो सारे समाज का तार टूटता है।"

इसके बाद बातों-बातों में बाहर जाकर क्या होगा, इस बारे में मेरे मुंह से कुछ निकल गया। पर तुरन्त ही मैंने सुधार लिया, "मगर वह तो बाहर जायंगे तब न! कौन जाने महादेवभाई के साथ ही सबको यहीं रह जाना हो।" बापू बोले, "वह तो है; और मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि हम सब यहीं रह जायं।" मैंने कहा, "आप नहीं आपको छोड़कर बाकी हम सब।" बापू इस वाक्य से कुछ चिढ़-से गये। बोले,

मत्तस्तत्प्रतियोत्यमस्तुसकलं कामं तथाप्यादृता
ऽनर्घा सा प्रतिभा यया भवमहम् संसेवितो जीवने।
पंचाशद्व्यतिगायुषि प्रशबले सम्यग् यतोज्ञातवान्
प्राक् कैशोर्यविजृम्भणादपि विभोरालम्ब-
—विश्वस्यताम् ॥६९॥

वस्तूनां भवति द्विरूपमयतद् बाह्यं तथाभ्यन्तरं
बाह्यं नाशयमश्नुते यदि च तत् पुष्णाति
नाभ्यन्तरम्।
एवं कृत्स्नकला भवन्त्यवितथाः व्यक्तात्मताः
केवलं
सार्घा बाह्यतनूः खलु प्रकटनेनाध्यात्मताया
नृणाम् ॥७०॥

घूमने का वक्त पूरा होगया। भाई अब बापू की मालिश वगैरा करते हैं। मैं बा का काम कर देती हूं, सो खाने आदि का सब काम मिलाकर मेरा समय तो वैसा-का-वैसा ही भरा रहता है। दोपहर खाने के समय भाई के साथ बैठती हूं। वह बहुत धीरे-धीरे खाते हैं। मैं खाकर उतने समय में सात भी काट लेती हूं। आज भी ऐसा ही किया। इससे बापू के पैर मलने को जरा देर से पहुंची, तो डांट पड़ गई। कहने लगे, "हमारे पास अब काम पड़ा हो, तब हम खाना खाकर मेज पर बैठे नहीं रह सकते।"

शाम को घूमते समय बाहर की चल रहा है, उसकी बातें होती रहीं। बापू बाइबिल—ग्रोल्ड टेस्टामेंट—की बात कर रहे थे—"उसमें रक्तपात जगह-जगह आता है। ईश्वर की शरण जो लोग जाते हैं, मामूली भूलें करनेवाले लोग जब ईश्वर का आश्रय मांगते हैं, तब ईश्वर उन्हें बचा लेता है, उनके दुश्मनों को मार डालता है, प्लेग भेज देता है, इत्यादि। तो भी तो उसमें से इतना ही सार निकाल लेता हूं कि ईश्वर पर श्रद्धा बड़ी चीज है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसे जो करना है, वह किसीकी भी मार्फत करवा लेता है। हिन्दुस्तान में भी उसे जो करवाना होगा, करा लेगा।"

१६ सितम्बर '४२

आज घूमते समय फिर बाहर की बातें होने लगीं। भाई ने कहा, "जो फौज और पुलिस से आशा थी, वह तो कुछ फली नहीं। बाकी आम लोग आंदोलन चला रहे हैं।" बापू कहने लगे, "मैंने फौज और पुलिस पर कभी आशा रखी ही नहीं थी। रूस में बेशक फौज और पुलिस जनता से आ मिली; परन्तु वहां तो हिंसक क्रान्ति थी, हमारी अहिंसक क्रान्ति है। उसमें फौज, जो हिंसा की प्रतिमा है, कैसे आ सकती है? वे लोग तब जनता के साथ आयेंगे, जब सत्ता लोगों के हाथ में आ जायगी; क्योंकि पीछे तो कोई चारा ही नहीं रह जाता। वे लोग तो जब हैं। पढ़े-लिखे सुशिक्षित लोग कमीशन लेकर बैठे हैं; परन्तु किसीने अपना कमीशन छोड़ा? यह जड़ता की निशानी है।"

आज रामेश्वरी नेहरू की दोबारा गिरफ्तारी तथा अम्बालाल साराभाई की लड़कियों तथा और जगह दूसरी स्त्रियों की गिरफ्तारी की खबर पढ़कर बापू ने कहा, "इसका मैं यह नतीजा निकालता हूं कि भले कई जगह हिंसा की घटनाएं होते हुए भी सब मिलाकर आंदोलन अहिंसक है, वरना इस तरह इतनी स्त्रियां—और कुलीन स्त्रियां—इसमें हिस्सा नहीं ले सकती थीं।"

कातते समय बापू को बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—पढ़कर सुनाती हूं। ऐसा करने से मेरा भी बाइबिल का अभ्यास हो जाता है।

आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई। बापू के मन पर उसका गहरा असर पड़ा। शाम को मीराबहन से बोले—"'जब मैं अद्भुत सलीब की ओर निहारता हूं' (When

स्वीयाभिधानं बहवः कलाकृत्
पदेन कुर्वन्ति तथा प्रतीताः ।
जानामि तेषां कृतिषु प्रकाष्ठा-
लेशोऽपि नात्मोच्छलनाशमस्य ॥७१॥

कलाकृतो ये परमार्थतस्तै-
रात्मान्तरङ्गं परिचायनीयः ।
मदात्मनः सिद्धिविधौ न बाह्या-
कृतीरपेक्षेऽनुभवो ममायम् ॥७२॥

हूं कि वह मूर्खता थी। महादेव की मृत्यु से और कुछ नहीं तो इतना तो सीखते कि किसी चीज से परेशान होना ही नहीं चाहिए। बारहवां अध्याय रोज पढ़ने का क्या अर्थ है? स्थितप्रज्ञ के लक्षणों का पाठ करने का क्या अर्थ है?" मुझे बड़ी शर्म आई। पहले से ही झेंप रही थी, मगर इससे और बुरा लगा। कितना सोचा था कि अपने-आपको सुधारा है। छुई-मुईपन निकाल डाला है। मगर पहली ही परीक्षा में फेल होगई।

दोपहर बापू जो पुस्तक लिख रहे हैं, उसका कुछ तर्जुमा किया, फिर काता। आराम नहीं किया। इससे शाम को जल्दी नींद आने लगी। बापू की राह देखते-देखते सो गई, आधा घंटा तो सूनी थी, तब बापू आये। उन्हें उठने में देर हो गई थी। बोले, "तू वक्त पर उठाने क्यों नहीं आई? मुझे तो काम में वक्त का ध्यान न रहे, पर तुझे तो मुझसे कहना चाहिए था कि उठने का वक्त हुआ।" मुझे अपने सो जाने का अफसोस हुआ।

बाबला और दुर्गाबहन का बापू के नाम पत्र आया था। दुर्गाबहन का एक ही वाक्य उसके हृदय की स्थिति बताता था—"पत्थर की बनी हूं। सह रही हूं।" बाबला का सुन्दर पत्र था—"मेरे बारे में जो लिखा है, वैसा करने का प्रयत्न तो करूंगा, पर मैं तो बिल्कुल क्षुद्र हूं। वहां कैसे पहुंच पाऊंगा!" मैंने मन में कहा, "भगवान तुम्हें पहुंचायगा, तुम्हारे पिता की आत्मा तुम्हें पहुंचायगी।"

शाम को घूमते समय बापू बताते रहे कि कैसे वह एक बार कुतुबमीनार देखने गये थे। दिखानेवाला इतिहास का बड़ा विद्वान था। वह बताने लगा कि कुतुब के बाहर के दरवाजे की सीढ़ी से लेकर एक-एक पत्थर मूर्ति का पत्थर है। मुझसे यह सहन नहीं हुआ। मैं आगे बढ़ ही नहीं सका और मुझे वापस ले चलने को उनसे कहा और मैं वापस आ गया। पीछे इस्लाम के बारे में बातें होती रहीं। बापू जानते हैं कि मुसलमानों ने कितने अत्याचार किये हैं, फिर भी मुसलमानों के प्रति वह इतनी आत्मीयता और इतना प्रेम बताते हैं। मुसलमान उन्हें गाली देते हैं, तो भी उनकी खातिर वह हिन्दुओं से लड़ते हैं। यह चकित कर देनेवाली चीज है। उनकी अहिंसा की कसौटी है।

महादेवभाई ने मेरी भजनावली में कुछ भजन लिख दिये थे, उनमें से एक था—'जावे कि हो दिन आमार विफले चालिये।" आज वह मेरे कान में गूंज रहा था। मन में उठ रहा था, "क्या है हमारा जीवन!"

१६ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू फिर परसोंवाली घटना की बात करने लगे। पोलक की बात बताने लगे, "बहुत जल्दी चिढ़ जाता था। वह और श्रीमती पोलक पहले मित्र थे। थ्योसोफिकल सोसाइटी के सदस्य बने, वहां से मित्रता शुरू हुई, आखिर मैंने उनकी शादी कराई। वे सोचते थे कि कुछ पैसे हो जायं, तब शादी

कलानिर्मितयो नृणा-
मर्घवन्त्यस्तु केवलम् ।
यावत्प्रचोदयन्त्यध्व-
न्यात्मानं ह्यात्मसाधने ॥७३॥

सामान्यो न जनो निरूपयति यत् सत्यं च तत्सुन्दरं
सत्यान्तर्गतसुन्दरेऽन्धनयनो विद्रौति तस्मादसौ ।
सत्ये सुन्दरतानिवास इति यत्काले मनोर्धशंजा
द्रष्टुं दत्तपदा भवेयुरुदिता सत्या कला स्यात्तदा ॥७४॥

दोपहर बा से कह रहे थे, "तू मुझे अपनी मालिश करने दे। मैं सुशीला से अच्छी कर सकता हूं। इसका धंधा कहां मालिश करने का है! वह तो डाक्टर है। हुक्म कर देती है कि इस मरीज को मालिश हो। इसको बढ़ करो, उसको वह करो। यहांपर मालिश भी करे, सब्जी भी काटे, कपड़ा भी धोये!" मैंने कहा, "इस सब्जी-चौड़ी बात का अर्थ तो इतना ही है न कि आप मुझसे अच्छी मालिश जानते हैं! हम सब आपका यह दावा स्वीकार करते हैं।" बापू हँसने लगे। बोले, "मतलब यह है कि बा मुझे अपनी मालिश करने दे।" फिर दक्षिण अफ्रीका की बात बताते रहे कि कैसे १४ दिन के उपवास के बाद उन्हें स्मट्स ने बुलवाया था। चलकर गये और रास्ते में टांगों में इतना दर्द हुआ कि चिल्ला उठे। बा भी उनके साथ थीं। वह बीमार थीं, मगर तो भी पीछे रहने से ना करती थीं। कहने लगे, "तब मैं बा की सब सेवा किया करता था, मालिश भी करता था।"

शाम को महादेवभाई के समाधि-स्थान से लौट रहे थे, बापू कहने लगे, "यहां आ जाना मेरे लिए बहुत शांतिदायक है और उससे जो प्रेरणा मुझे मिलती होती है, मैं ले लेता हूं।" मैंने कहा, "अब आप महादेवभाई से प्रेरणा लेते हैं, कभी वह आपसे लेते थे!" कहने लगे, "क्यों नहीं! प्रेरणा तो एक बच्चे से भी ले सकते हैं, और बच्चा चला जाता है, तो भी क्या? उसका स्मरण तो २४ घंटे चलता ही है। जो राजाजी ने कहा है, वह बिल्कुल सही है। महादेव मेरा अतिरिक्त शरीर (Spare Body) था। कितनी दफा मैंने उसे मैक्सवेल के पास भेजा है, दूसरों के पास भेजा है। मान लेता था कि महादेव को काम सौंपा है, तो वह कर लेगा।" पीछे मि० कोटमैन के भाषण के विषय में बात करने लगे। कहने लगे, "पहले फिप्स बोला, फिर राइसमन और अब कोटमैन। एक-दो रोज में हैलीफैक्स भी ऐसी बात निकाले तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। ऐसा लगता है कि ये लोग मुझे बदनाम करने के लिए एक गंदा जाल रच रहे हैं। लुई फिशर अमरीका में मेरे पक्ष की बात कर रहा होगा। उसको जो डालने के लिए भी यह सब प्रचार इन लोगों को करना चाहिए न! इन्हें झूठ से कहां परहेज है? इनका काम तो चलता है धोखेबाजी, पशुबल, मद और चापलूसी (Fraud, Force, Falsehood and Flattery) से। कोई और ऐब हो, तो वह भी लगा दो। मैं, किस-किसको जवाब दूं? जो बातें मैंने खुली तरह से कही हैं, उन्हें ऐसा रूप दिया जाता है, मानो मैंने कोई खुफिया साजिश रची हो! उसका मैं क्या करूं? मगर ईश्वर है न; वह तो सच्ची बात जानता ही है!" मेरे मुंह से निकल गया, "मगर अभी तो ईश्वर भी हमारे ही विरुद्ध गया न! देखिये, कैसे महादेवभाई को ले गया!" बापू बोले, "यहां तेरी अश्रद्धा बुलवाती है। वह अपना काम पूरा कर गया। बुद्धिवाद से तू कह सकती है कि वह २५ वर्ष और जिन्दा रहता, तो ईश्वर का क्या जानेवाला था, हमें तो फायदा होता ही। मगर श्रद्धा से देखो, तो हम कहां ईश्वर की सब कृतियों को समझते हैं। महादेव ने अपना डेस्क

सत्यान्न सौन्दर्यमपेतमस्ति
तद्वैपरीत्ये स्वयमेव सत्यम् ।
आविर्भवत्याकृतितो बहिर्याः
सौन्दर्यभाजो न कदाचन स्युः ।।
आत्मीयकाले मनुजेषु सर्व-
श्चतप्रियः सुक्रसुरास चेति ।
पुराविदो नः कथयन्ति तस्य
छविः समस्ता विकृता किलासीत् ।
तथापि तं नागणयं तथावत्
परन्तु सौन्दर्यसुशोभनास्यम्
यतोऽखिले स्वायुषि वर्तते स्म
प्रयत्नवान्सत्यगवेषणायाम् ।।७५।।

अवितथसुषमाणामुद्भवो निर्मितीनां
भवति तदवबोधः सक्रियोऽभ्रान्तिमांश्चेत् ।
अथ तु विरलपाता जीवनेऽस्मो क्षणाश्चेत्
विरलतरनिपातास्तानवेमः कलायाम् ।।७६।।

हो गया। घूमते वक्त बताते रहे कि रात उनके मन में क्या विचार चलते थे। बाद में सूरदास और तुलसीदास की बातें करते रहे।

रामायण के एक-एक शब्द के अर्थ पर बापू किसी समय दस मिनट लगा देते हैं। कह रहे थे, "मैं ऊपर-ऊपर से कोई काम कर ही नहीं सकता।" यह बापू की विशेषता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति (जीनियस) की व्याख्या की बात होने पर एक दिन मैंने कहा, "मेरा चित्रकला का शिक्षक कहा करता था कि जीनियस (प्रतिभाशाली) वह है, जो कभी एक ही गलती दोबारा नहीं करता।"[1] बापू कहने लगे, "नहीं, प्रतिभाशाली की सच्ची व्याख्या है बारीक-से-बारीक विगत में उतरने की अपार शक्ति।"[2]

शाम को घूमते समय फिर कल की चर्चा आ गई।...के भाषण से बापू को भारी आघात पहुंचा है। दोपहर सरकार को पत्र लिखना शुरू किया था कि उनके लिए बापू के तथा कांग्रेस के सामने इतना झूठ चलाना ठीक नहीं है। मगर पीछे...के भाषण की बात सुनी, तो कहने लगे, "...ऐसा कह सकता है तो और किसीको मैं क्या कहूं? अंग्रेजों के दोष इससे धुल जाते हैं।...का और मेरा कितना सम्बन्ध रहा! वाइसराय को मैंने कहा था...को अपनी कौन्सिल में बुलाओ, वह बुद्धिशाली है, मेहनती है, विश्वासपात्र है। आज मैं कहूं कि वह झूठ बोलता है तो वाइसराय कहेगा कि तेरे पक्ष की बात कहे, तो वह भला, नहीं तो बुरा। मैं अपनों के बारे में कुछ कह ही नहीं सकता। मैंने कभी ऐसा किया ही नहीं है। अम्बेडकर-साहब से तो दूसरी आशा ही नहीं थी। वह मेरा हमेशा विरोधी रहा है। वह मुझे मार भी डाले तो मुझे अफसोस न होगा। फिरोज खां नून तो गाली ही दे सकता है। ये सब मेरे विरुद्ध भले कुछ कहें। मगर...ऐसे कहे, वह तो ऐसा ही हुआ कि राजाजी मेरे विरुद्ध इस तरह कहें, तो उन्हें मैं क्या उत्तर दूं?...मेरा मित्र रहा। उसे एक बार सत्याग्रह में मैंने डिक्टेटर भी बनाया था, मगर सरकार के घर बैठकर लोग पुरानी बातें भूल जाते हैं। सो सरकार को अब कुछ लिखने के लिए मेरी कलम नहीं चलती।" अतः बापू ने वह पत्र लिखना छोड़ दिया।

२१ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। दोपहर भारत-सरकार के गृह-मंत्री को उन्होंने पत्र लिखा। जो झूठ चल रहा है, उसका प्रतिवाद किया था। उन्होंने यह भी लिखा कि देश में जितनी बरबादी हुई है, उस सबकी जिम्मेदार सरकार है। वह कांग्रेस के लीडरों को इस तरह न पकड़ती तो कुछ भी हानि होनेवाली नहीं थी। सरोजिनी नायडू

---

[1] "Genius is one who does not commit the same mistake twice."

[2] "Infinite capacity to go into the minutest detail."

प्रणौम्यर्कस्यास्ताद्भुतमपि तथेन्दो रुचिरतां
यदात्मा मे स्रष्टुः प्रसरति तदभ्यर्चनविधौ ।
यते द्रष्टुं तं तन्निखिलजनिसर्गेषु करुणां
रवेरस्ता एतेऽपिपरमुदया विघ्नसदृशाः ॥
भयेपुर्मेचेत्ते विभुमननकार्ये न गुरवो
यदात्मोत्पाते च स्फुरति परिपन्थीव किमपि
ध्रुवं मायाजालं भवति खलु पुंसस्तनुरिव
मुहुः प्रत्यूहत्वं वहति पथि मुक्तेरनुभवात् ॥७७॥

सत्यं यत्प्रथमं गवेषणपदं वस्त्वस्ति तद्वतंते
सत्यं सुन्दरता ततः समधिके स्यात्ताम्रवाप्ते च वः
कूटोपत्यंनुशासने सुकल्पिता किस्ततस्य शिक्षा हि सा
सत्यं सुन्दरमेतदेव मम यल्लिप्सायुरन्ताग्रभूः ॥७८॥

ही चाहिए।" मैंने कहा, "बा, ऐसे नहीं लिखा जा सकता। मां को न लिखने की इच्छा का संयम आसान बात नहीं। मगर तय किया है कि नहीं लिखना तो नहीं ही लिखना।"

२४ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "मीराबहन वगैरा को मेरा घर पत्र न लिखना एक हास्यास्पद चीज लगती है। शायद ऐसा भी लगे कि मैंने अपना महत्व बढ़ाने के लिए ऐसा किया है। बा भी रात को कहती थीं कि घर पर पत्र क्यों नहीं लिखती। मैंने तो ऐसी किसी भावना से न लिखने का सोचा नहीं। आपको मेरा न लिखना ही ठीक लगा, सो न लिखने का निर्णय किया। मगर बा के कहने से मैं ऐसा समझी कि आप चाहते हैं कि मैं लिखूं।" इसपर बापू ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि मेरे कहने के कारण तुम न लिखो। मगर तुमने मुझसे पूछा कि मुनासिब क्या है, तो मैंने बताया कि तुम्हें नहीं लिखना चाहिए। तुम्हें यहांपर मैंने थोड़े रखनेवाले थे। यहां रखा सो मेरे कारण। तो तुमको लगना चाहिए कि जब मेरा स्थान ही बापू के कारण से है, तो जो हक बापू नहीं लेते, उसे मैं कैसे ले सकती हूं। सरोजिनी नायडू को यह चीज लागू नहीं होती। वह कोई आश्रमवासी तो है नहीं; बहुत चीजों में मेरा विरोध भी कर लेती है। मैं तो गुणों को ही देखता हूं। मैं खुद कहां दोषरहित हूं कि किसीके दोष देखूं! वह तो अपना स्वतन्त्र स्थान रखती है। उसने अपना मार्ग निकाल लिया है। मीराबहन तो आश्रमवासी रही। घर-बार, माता-पिता का त्याग करके आई। उसको तो जो चीज प्यारेलाल को लागू होती है, उससे भी ज्यादा लागू होती है। वह यद्यपि अपनेको मेरी लड़की कहती है, मगर उसका भी तो अपना स्वतन्त्र स्थान बन गया है। अपने-आप उसको लगता कि उसे नहीं लिखना चाहिए, तो अलग बात थी। तुमने मुझसे पूछा, तो मैंने तुम्हें तुम्हारा धर्म बताया। पहले तो मैंने तुमसे यही कहा कि मेरे सरकार को लिखे पत्र का उत्तर आ जाने दो। बाद में यह तय बताया कि बापू न लिख सके तो तुम भी नहीं लिख सकतीं। मगर तुम उसे समझ गईं हो तो तुम्हें अपने-आप ऐसा लगना चाहिए कि मैं नहीं लिख सकती। फिर किसीकी हँसी की परवा नहीं होनी चाहिए, नहीं तो बूढ़े, उसके लड़के और गधे की ईसप-वाली कहानी-जैसा हाल होगा। तुम्हारे मन में इस बारे में अगर शंका है तो मैं कहता हूं कि लिखो। कटेली को कल जो लिखा है, वह वापस लिया जा सकता है। मगर मेरा कहना दिल में बैठ गया हो कि बापू न लिखें तो मैं भी नहीं लिख सकती, तो फिर शंका का स्थान नहीं रहना चाहिए। जब मैंने यह पोशाक अख्तियार की, तब मुझे तो हँसी का काफी डर था। खास करके मुसलमानों से, क्योंकि उनके धर्म में यह है कि शरीर ढकनों तक ढका होना चाहिए। मैं मद्रास जा रहा था, रास्ते में मौलाना मुहम्मद अली को सरकार ने पकड़ लिया। बेगम मुहम्मद अली

सङ्गीतं च पराः कलाश्च सकला मां प्रीणयन्त्येव तु
तादृक्तासु न मे भवत्यभिरुचिः साधारणस्यास्ति या ।
अस्योदाहरणं यथा मम मते तास्ताः निरर्घाःक्रियाः
यासां नास्त्यवबोध एव रहिते ज्ञाने हि वैज्ञानिके ॥
ताराकीर्णं स्तिमितनयनो व्योमपश्यन्यदाहं
तत्सञ्जातामनपसरणां रम्यतामापिबामि ।
सर्वं यच्चद्वितरति कला मानवी तत्परस्तात्
तस्मात्किञ्चित्समधिकमसावस्त्यभिप्रायपूर्णा ॥७९॥

कलायाः कृत्स्नाया गुरुतरमहो जीवनमतः
प्रवर्त्त्यग्रे यस्य व्रजति निकटं जीवनमति ।
प्रकर्षं स श्रेष्ठो भवति हि कलाकृत्सु न कला
चतुष्कोणं हित्वा निहितदृढमूलं सुचरितम् ॥८०॥

२५ सितम्बर '४२

सुबह कलक्टर और डा० शाह आये। शाह पहले आये। बापू का खून का दबाव बढ़ा, यह सुनकर बापू से कहने लगे, "मि० गांधी, मैं समझता था, आप तो बड़े तत्त्वज्ञानी हैं। जिन चीजों के बारे में आप कुछ कर नहीं सकते, उनकी चिन्ता क्यों?"

कलक्टर सबको पूछ जाता है, "कोई खास बात तो नहीं है?" जब वे लोग आये, तब भाई वहां न थे। इनके मिलने के लिए भाई की खोज होने लगी, मगर वह मिले ही नहीं। बापू ने बाद में कहा, "जब ये लोग आते हैं, तब हम सबको एक जगह रहना चाहिए, ताकि उन्हें हमें खोजने की तकलीफ न उठानी पड़े। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम कैदी हैं।"

आज सुबह बापू ४ बजे उठे। मैं तो चार बजे प्रार्थना के समय जाग उठी थी, मगर बक्त का पता नहीं था। सबको सोता देखकर पड़ी रही। पीछे सो गई। बापू जब उठे और सुना कि मैं प्रार्थना के समय जाग गई थी, मगर वक्त का पता न होने से पड़ी रही, तो नाराज हो गये, "क्यों पड़ी रही थी? यह कोई बात है! नींद खुल जाय तो उठना ही चाहिए।" अपने-आप पर भी वह बहुत नाराज होने लगे कि क्यों प्रार्थना के समय वह उठ नहीं सके। नाश्ते में दूध नहीं लिया। खाली फल का रस लिया।

शाम को घूमते समय मैंने १६, १७, १८ अध्याय गीता के बापूजी सुनाये। मैंने बापू से कहा, "महादेवभाई बताते थे कि एक बार जेल में वह आपसे अलग रखे गये थे। तब वह घूमते-घूमते सारी गीता का पारायण किया करते थे। करीब डेढ़ घण्टा लग जाता था। ऐसा करते-करते उन्हें गीता याद होगई थी। उन्होंने तय किया था कि जबतक आपसे अलग रहूँगा, तबतक रोज गीता का पारायण करूँगा।" बापू ठंडी सांस लेकर बोले, "हां, उसने मुझे सब बताया था और अब हमेशा के लिए अलग होगया।"

२६ सितम्बर '४२

आज सरोजिनी नायडू का जन्म-दिन है। उसके लिए उन्होंने शाम को आइसक्रीम बनवाई थी। दोपहर के खाने के समय बापू के लिए सलाद अच्छी तरह सजाई। नास्टर्शम[1] के पत्ते और फूल, बीच में टमाटर, मूली, खीरे के टुकड़े बहुत सुंदर दीखते थे। बापू को भी आइसक्रीम खिलाई। बकरी के दूध की बनाई गई थी। कल मुझसे गाजर का हलवा बनवाया था, रामनाथ (रसोइया) ने बालाई बनाई। वह हलवे पर लगाई गई। मटर का पुलाव बना, भाई ने जिन्जर केक और कहीं

[1] एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल और पत्ते का स्वाद राई की तरह तीखा और चरपरा होता है।

अन्ते या हृदयस्थिता विमलता सत्या हि सा रम्यता
न स्याद्वास्तवतः कला ननु कला या सान्त्वने न क्षमा ।
तामेवाभिलषामि वास्तवकलां साहित्यमेवं तथा
यद्वक्तुं बहुसङ्घमानवगणान् शक्नोति किंचिद्धृदि
॥८१॥

नित्यमेव मम जीवितमार्गं
सत्यमाग्रहधृतं स्वयमेव ।
मामशिक्षयदिदं ननु साम-
व्यापृतिर्वहति हृद्यतमत्वम् ॥८२॥

का खात्मा हो जाय।" मैंने कहा, "आपने जिस प्रकार आज कहा है, उस प्रकार कहें, तब तो घबराहट नहीं होती, मगर जब आप चिढ़ जाते हैं, तब मैं परेशान हो जाती हूं। मेरी ग्रहण-शक्ति कुंठित हो जाती है। गुस्से में मैं कभी कुछ सीख ही नहीं सकी हूं, और हर किसीसे भी मैं नहीं सीख सकती।" बापू ने कहा, "यह तो बच्चों की-सी बात हुई। उन्हें रिझा करके सिखाना पड़ता है। तू कबतक बच्ची-सी रहेगी ? कान पकड़कर तुझे क्यों नहीं बताया जा सकता ? अगर तू इस चीज को अपना गुण मानती है तो यह भी तेरी भूल है। मैं चाहता हूं कि हरएक से सीखने की शक्ति रख। दत्तात्रेय के २४ गुरु थे। उन्होंने पवन, पानी, वृक्ष आदि हरएक गुरु से कुछ-न-कुछ सीख लिया था। तुझे बताता रहता हूं। जबतक तू सुनेगी, बताऊंगा।" मैंने कहा कि मैं सुधारने की कोशिश तो करती ही हूं। बापू बोले, "तभी तो मैं बताता हूं। जो बताना ही चाहिए, उतना कहकर सन्तोष मान लेता हूं। काफी छोड़ भी देता हूं।" मैंने कहा, "आप छोड़ देते हैं तो उससे मन में धोखा-सा पैदा होता है कि अब सीखने-जैसा कुछ रहा नहीं, हमने सब सुधार लिया है।" बापू बोले, "अगर ऐसा हो, तो वह होने देना ही चाहिए। मैं अभी बाइबिल में जॉब का वर्णन पढ़ रहा हूं। वह ईश्वर का परम भक्त था। ईश्वर ने शैतान को बुलाकर कहा, 'तू उसकी परीक्षा कर सकता है; पर एक बात है, सबकुछ करना, मगर उसे मार न डालना।' शैतान एक बार हारकर भागता है। ईश्वर उसे दुबारा भेजता है। जॉब की 'किस्मत से राम मिला जिसको' इस भजन में बताई तीनों जगह मिलती हैं। पीछे वह चिल्ला-चिल्लाकर ईश्वर की शिकायत करता है। लोग उसे समझाने जाते हैं तो भिड़ता है, 'मेरे पास एक वाचा रह गई। मैं ईश्वर के पास चिल्लाकर शिकायत करता हूं तो उसमें तुम्हारा क्या जाता है ?' जब जॉब-जैसा भक्त भी कड़ी परीक्षा सहन नहीं कर सका तो साधारण लोगों की तो बात ही क्या है ?" मैंने कहा, "मैं प्रयत्न तो करती ही रहती हूं कि मैं छुई-मुई न बनी रहूं। यद्यपि कई बार असफल हो जाती हूं, तो भी कुछ तो सुधार होगा ही। माताजी ने तो कुछ नहीं कहा, मगर कई और कहा करते हैं कि बापू के पास आकर तुझे इतना तो फायदा हुआ है कि तेरा गुस्सा बहुत शान्त हो गया है।"

बापू हंसने लगे, "तो उसका यश भी मुझे मिलता है, तुझे नहीं।" फिर गम्भीर होगये और कहने लगे, "यह हम लोगों की विशेषता है। अच्छा होता है, तो यश मुझे देंगे, किन्तु बुरा होता है, तो दोष नहीं देंगे। अंग्रेजों का इससे उलटा है। वे अब मुझे सबसे अलग करके सारे तूफान की जड़ मुझे ही साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानते हैं।"

मैंने कहा, "ये भी एक दिन समझेंगे, इसमें शक नहीं है।"

बापू बोले, "यह तो है, मेरे जीते-जी नहीं समझें तो मेरे पीछे जोन ऑव आर्क जैसा होनेवाला है। और मेरी मृत्यु से लोगों की शक्ति तो बढ़ने ही

सामसन्तति-विधानमन्तरा
मानवस्य खलु जीवनं कुतः ।
नास्ति तच्च चरिते सदा सुखं
सत्वतोऽपि यदहो यथातथम् ॥८३॥

अस्तितत्त्वनिवहो ह्यनश्वरो
यो न सामपथसंश्रयोऽस्ति तम् ।
आचरंश्च मनुजो विहातुम-
प्यस्तुबद्धकटिरात्मजीवितम् ॥८४॥

मैंने उन्हें लिटाया। कम्बल ओढ़ाया। बा के लिए ऐसे दर्द के लिए जो दवा आई हुई थी, उसका असर देखने के लिए मैंने वह उन्हें सुंघा दी। बाद में भी उन्हें छाती में कुछ खिंचाव-सा लगता रहा। मगर दर्द चला गया। मैं काफी डर गई थी, मगर हृदय को मजबूत करके सब करती रही। सोचती थी, ईश्वर अब और क्या करनेवाला है!

प्रार्थना के बाद बापू फिर सो गये। सुबह घूमते समय गीता पढ़ी। भाई को बहुत कहा कि आज आराम कर लें, मगर वह नहीं माने। कहने लगे, "अब तो कुछ है ही नहीं। मैं तो भूल भी गया हूं कि कुछ हुआ था।"

डा० शाह आये। भाई से कहने लगे, "मैंने जवान-तन्दुरुस्त आदमी समझकर छोड़ दिया था। डाक्टरी परीक्षा तक नहीं की थी। मगर अब तुम परेशान करने लगे हो।" उन्होंने अच्छी तरह परीक्षा की, मगर कुछ मिला नहीं।

शाम को समाधि-स्थान के लिए फूल इकट्ठे कर रही थी, इतने में बापू निकल गये। मैंने उन्हें जाते नहीं देखा। समाधि पर पहुंचकर थोड़ी देर उन्हें मेरी राह देखनी पड़ी। समाधि की दीवार सजाने के लिए भी फूल ले गई थी। मीराबहन नाराज होगईं। बोलीं, "क्यों इतने फूल लाती हो? बापू का भी समय जाता है।" फूल सजाने की सारी खुशी मारी गई।

शाम को कुछ जुकाम-सा लग रहा था। मीराबहन ने गले पर मालिश की। सोने को कुछ देर से गई। सरोजिनी नायडू से बातें हो रही थीं कि बापू के जन्म-दिन को क्या करना है।

गरमी बहुत पड़ने लगी है। दोपहर को तो दम-सा घुटता है।

२१ सितम्बर '४२

सुबह समाधि-स्थान से लौट रहे थे, तब धूप थी। उसमें दूर के आधे छिपे वृक्ष देखकर भाई बोले, "यह चित्रकारी में कितना अच्छा लगेगा। अब तुम फिर चित्र-कारी शुरू कर दो। उससे पहले ड्राइंग अच्छी तरह सीख लेना।" मैंने कहा, "मेरे पास इतना समय कहां है?" इसपर कहने लगे कि हार मान बैठने की तेरी मनो-वृत्ति बन गई है। हँसी की बात थी। इतने में हम बापू के पास पहुंच गये। मैंने उनसे कहा, "भाई कहते हैं, ड्राइंग सीखो, चित्रकला, संगीत व साइन्स का गहरा ज्ञान हासिल करो, भाषाएं सीखो। मैं कहती हूं, यह सब नहीं हो सकता, तो नाराज होते हैं। या तो मैं चुपचाप सुनती रहूं, उत्तर न दूं, यह समझकर कि यह सुनने की बात है करने की नहीं, या साफ कह दूं कि आप जो कहते हैं, वह मेरे-जैसा तो कर नहीं सकता, कोई विलक्षण शक्तिवाले लोग भले कर सकें।"

बापू कहने लगे, "वह जो कहना चाहता है, वह यह है कि सच्ची शिक्षा में बच-पन से ही संगीत सिखाया जाना चाहिए। इससे कंठ का विकास होगा। चित्रकला, ड्राइंग इत्यादि ही से हाथ का विकास कराया जायगा, इसका अर्थ यह नहीं कि हर

अध्यर्ययेस्वो न हि दोष शून्य-
स्तथापि सत्यस्य गवेषणायाम् ।
गाढ़ानुरक्तिर्मम सत्यमीश-
स्यान्याभिधानं मम निग्रहोऽयम् ॥८५॥

अहिंसास्मज्जातेर्भवति खलु धर्मो न च पुनः
पशूनां हिंसेव स्वपिति स च भावः पशुगणे ।
न तद्धर्मः शक्तेरपर, उचितो धर्म इतरो
नरौदार्यात्पाल्यो भवतु ननु चेतोबलदृढ़ः ॥८६॥

करती हूं। मैंने इस किस्म की सेवा किसीसे नहीं ली।" वह बोलीं, "तब तो और भी जरूरी है कि तुम ऐसी सेवा लो।" बहुत प्यारसे मुझे चादर ओढ़ाई। दो-चार मिनट छोटे बच्चों की तरह थपकी देकर कहने लगीं, "अच्छी, नन्हीं बकरी!" सब हँस पड़े। मीराबहन बकरियों को इतना प्यार करती हैं कि कोमलतम भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें बकरियों का सहारा लेना पड़ा।

३० सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से मीराबहन की बकरीवाली बात कही। कहने लगे, "मीराबहन में एक बड़ा गुण है। उसके निकट मनुष्य, पशु, वृक्षों और फूलों में कोई फर्क नहीं है। उसे बकरियों से बातें करते तो तूने सुना होगा। फूल-पत्तों से भी वह बातें करती है और कल रात उसने बिना किसीके कहे वह सब तेरे लिए किया।" मैंने कहा, "उनमें गुण तो भरे ही हैं, नहीं तो अपने राजा-समान पिता के घर को छोड़कर वह यहां भागकर क्यों आतीं?" बापू बोले, "हां, यह बात तो है।"

: १३ :

जेल में बापू का पहला जन्म-दिन

आज हम सबने काफी समय यह सलाह करने में खर्च किया कि बापू के जन्म-दिन को हमें क्या करना है। सरोजिनी नायडू ने बात शुरू की। पीछे सब अपने-अपने सुझाव देने लगे। रात को मैं आई, तो आठ बजकर दस मिनट हो गये थे। बापू कुछ समझ गये होंगे। कहने लगे, "तुम लोग क्या हवाई महल बना रहे थे?" वह हँस रहे थे। मैंने हँसी में कहा, "बहुत अच्छी-अच्छी चीजों की बातें कर रहे थे। उनमें बाइबिल भी थी। सरोजिनी नायडू विचार कर रही हैं कि यहां जो लोग हैं, उनके सामान्यज्ञान की परीक्षा ली जाय, इसलिए पर्चा तैयार कर रही हैं। उसमें बाइबिल के उद्धरण भी आयंगे!"

बा की रात अच्छी नहीं गई। बापू को शक था कि कुछ खाने में बदपरहेजी हुई होगी।

१ अक्तूबर '४२

कल बापू का जन्म-दिन है। बापू के घूमने जाने के बाद फूल लटकाने के लिए दीवारों में कीलें लगादी गईं। बापू ने दोपहर को कहा, "देखो, सबसे कह दो, सजावट नहीं होनी चाहिए। सजावट हृदय के भीतर की हो।" मैं हँस दी। सरोजिनी नायडू ने मुझे बापू को यह संदेश देने को कहा था कि वह कल दोपहर तीन बजे

अहिंसा धर्मतत्त्वाना-
मग्रिमं तत्वमस्ति मे ।
तथैवासौ मम श्रद्धा-
जातस्यान्तेऽपि वर्तते ॥८७॥

आत्मत्यागो ह्येकमात्रस्य पुंसो
निर्दोषस्यास्त्यब्जवारं बलीयान् ।
आत्मत्यागादब्जसंख्याकनॄणा-
मन्येषां ये घातकार्ये म्रियन्ते ॥८८॥

दूसरी तरफ सीढ़ी पर उसी तरह—'असतो मा सद्‌गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतंगमय' यह मंत्र भाई ने लिखा। इसका आगे का मुख बाहर की ओर था और प्रथम मंत्र का भीतर की ओर। विचार था कि एक ओर से बापू को घूमने के लिए नीचे ले जायंगे और दूसरी ओर से वापस लायंगे, ताकि एक मंत्र उतरते समय सीधा सामने हो, दूसरा चढ़ते समय। दोनों तरफ की सीढ़ियों की बीच की जगह पर रांगोली से चित्र बनाये थे। बरामदे में 'सुस्वागतम्' लिखा। यह सब लिखते-लिखाते मुझे रात के १२ बज गये। मुझे डर लगा और भाई भी डरे कि कहीं बापू उठ गये तो नाराज होंगे। कहने लगे, "अब जो रह गया है, सो छोड़ दो। सुबह देखा जायगा।"

सुबह उठी तो देखा रांगोली सतम होगई थी। अतः जो रह गया था, रह ही गया। सरोजिनी नायडू ने रात को साढ़े ग्यारह बजे चाय बनाकर पिलाई। कहने लगीं, इससे ताजा हो जाओगी। जिस टोकरी में मैं महादेवभाई की समाधि पर रोज फूल ले जाती थी, उसमें फल, बादाम, टाफी की बोतल, शहद की बोतल आदि सामग्री रखी गई। उसे फूलों से मीराबहन ने सजाया। उनमें कला-वृत्ति स्वाभाविक रूप में है। सब जगह फूल सजाने का भार उन्होंने लिया था। सरोजिनी नायडू के जिम्मे सामान्य देखरेख थी। वह बैठी-बैठी कल के लिए रात के साढ़े बारह बजे तक मटर के दाने निकालती रहीं।

मीराबहन ने सवेरे खाने के समय बकरी के बच्चों को बापू से प्रणाम कराने का विचार किया था। भाई ने सलाह दी कि उनके गले में 'सहनाववतु'[1]-वाला मन्त्र लिखकर लटका दिया जाय। मीराबहन को यह विचार अच्छा नहीं लगा।

पर रात को मेरे सो जाने के बाद वह अपने-आप भाई के पास आईं और बकरी के बच्चे के लिए 'सहनाववतु'-वाला मंत्र लिखने का अनुरोध किया। वह साबुन का एक खाली डिब्बा लाईं। उसमें से पान की शकल के गत्ते काटकर भाई ने उनपर 'सहनाववतु' मंत्र लिखा और नीचे लिखा—'मोटा भाई घणु जीवो' (बड़े भाई आपकी बड़ी उम्र हो)। ये गत्ते बकरी के बच्चे के गले में लटकाये जायंगे। बापू बकरी का दूध पीते हैं तो बकरी के बच्चों के बड़े भाई हुए न! मैं रात बारह-साढ़े बारह बजे बिस्तर पर पड़ी थी, आंखें जलती थीं। भाई ने मिट्टी की पट्टी आंख के लिए बना दी थी। आंख पर रखकर सोई; पर नींद नहीं आई। एक बजे के बाद सो सकी। नींद ही उड़ गई थी। ३-२० पर बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मिट्टी की पट्टी से आंख को बहुत आराम मिला।

---

१ आश्रम में भोजन करते समय इस मंत्र से आरम्भ किया जाता था। मंत्र यह है :
सहनाववतु, सहनौभुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

संवृत्ते दुरिताक्षमे मयि तया
कामं क्षणान् कांश्चन
चेतो विश्वमनागते च पश्ये
किंवोद्धते मामकम् ।
तत्कालं न तु पूर्वमस्य मम सा
ऽहिंसा नराणां हृदः
सर्वस्मिन्भुवनेऽखिलानि
विचलीकर्तुं भविष्यत्यलम् ॥८९॥

यद्यन्मे परिशीलितं तदखिलैरभ्यासयोग्यं जनै-
रप्ययोऽस्ति यतोहमस्मि मनुजोऽतीवाल्पसाधारणः।
तैरेव प्रविलोभनैः परिवृतस्तैर्निर्बलत्वैरपि
येषामामिषतां व्रजन्ति सुजना अस्मद्वरिष्ठा अपि
॥९०॥

के चले जाने के घाव पर भी लागू होती है।" यद्यपि बापू अपना दुःख व्यक्त नहीं करते, मगर महादेवभाई के जाने से उन्हें बहुत गहरा घाव लगा है।

साढ़े दस बजे कलक्टर और डा० शाह आये। डा० शाह तो अच्छी तरह बातें करते रहे। कलक्टर ने तो इतना ही कहा, "अपनी वर्षगांठ के दिन आप कैसे हैं?" बापू कुर्सी पर बैठे थे, ताकि उसके आने पर खड़े होकर हाथ मिला सकें। नीचे गद्दी पर बैठकर उठना उनके लिए कठिन रहता है। कलक्टर के आने पर खड़े हुए, हाथ मिलाया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा, बापू क्यों कलक्टर की खातिर खड़े हों? मगर बापू तो मर्यादा की मूर्ति हैं। जो करना चाहिए, उसमें कभी नहीं चूकते। वह दूसरा कर नहीं सकते थे। कैदी की हैसियत से उन्हें कलक्टर का मान रखना चाहिए था। नाश्ता करते हुए बापू ने कहा कि मैं जन्म-दिन पर उपवास किया करता हूं और दूसरों से भी उनके जन्म-दिन पर करवाता हूं। आज मुझे फल और सब्जी पर ही रहने दें। मैंने कहा, "नहीं, फल और दूध लीजिये।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "साग तो खाना ही होगा।" आखिर एक रोटी को छोड़कर बाकी सबकुछ लिया। खाने के बाद पैर के तलवों पर मालिश करवाकर बापू सो गये। बा भी आज उत्साह में थीं। उन्होंने कल आज की तैयारी में सिर धोया था। आज नया टीका लगाया, बालों में फूल लगाये। खाया भी अच्छी तरह। मैं और मीराबहन दोपहर काफी सोये, बा भी। सब थक गये थे।

सरोजिनी नायडू ने दोपहर को आराम नहीं किया। सिपाहियों और कैदियों के लिए दाल, सेव, पेड़े, जलेबी और केले मंगवाये थे। सबका हिस्सा करके उन्होंने रखा। ये सब अपने, मीराबहन के और मेरे पैसे से मंगाये थे। तीन बजे सब कैदी आकर कतार में बैठ गये। बापू ने आकर उन्हें दर्शन दिये—नमस्कार किया। बा ने सबको खाने का सामान बांटा। वह बहुत खुश थीं। बापू भी कैदियों को खाते देखकर बहुत खुश हुए। आज सुबह सब सिपाही बापू को प्रणाम करने आये थे। सबको बापू ने कुछ-न-कुछ फल दिये थे। घूमते समय बापू कह रहे थे, "सिपाहियों को तो फल दिये, मगर कैदियों को तो कुछ दिया ही नहीं।" मैंने कहा, "देंगे। आप देखते रहिये।" दोपहर को कैदियों को खाने की चीजें मिलती देखकर वह बहुत खुश हुए। जेल में कैदी लोग मामूली-मामूली चीजों के लिए भी तरस जाते हैं। कटेली-साहब ने सबके लिए आइसक्रीम बनवाई। बापू के लिए तो बकरी के दूध की बनाई और अपने हाथ से मशीन चलाई। आज बापू ने आम को खाने के समय तीस वर्ष के बाद थोड़ी आइसक्रीम सरोजिनी नायडू के आग्रह के वश होकर खाई। हम सबने पेट भरकर खाई। सब सिपाहियों और कैदियों को भी दी। बापू खुश हुए। बोले, "इन लोगों को जेल में ऐसी चीजें देखने को भी नहीं मिलतीं।" शाम को महादेव-भाई की समाधि पर नये फूल रखे।

शाम को प्रार्थना में 'वैष्णवजन' भजन गाया। प्रार्थना के बाद मैं बापू को

द्यूतानुरागो ह्यखिलायुरोघे
श्रद्धामहिंसास्पदमप्रमत्तः
सत्यं सकामश्च गवेषमाणः
मन्ये स्म कामप्यपजातिभूमिम् ॥९१॥

यथाह जैनो मुनिरेकदोचितं
प्रियं यथा सत्यमभून्न तावतो ।
प्रियास्त्यहिंसा मम चैतयोर्मया
मताप्रिमा सान्यतरा तयावरा ॥९२॥

जरूरत हो, तो भाई शायद जल्दी न उठें, मैं तो उठ ही जाऊंगी; इसलिए मुझे बापू के पास से नहीं हटने देतीं। बा आज बहुत अच्छी तरह सोईं। आधी रात के समय बापू ने मुझे जगाकर पूछा कि क्या बा सो रही है? उसकी आवाज ही नहीं आती। मैंने कहा, "सोती नहीं तो आप क्या समझते हैं?" बापू ने कहा, "कौन क्या कह सकता है?" मैं देख आई। बा गहरी नींद में सो रही थीं। बापू के मन में खटका हो गया है कि कहीं बा को भी न यहां खोना पड़े।

६ अक्तूबर '४२

सरकार ने मि० फटेली को लिखा था कि वह शर्तों के बारे में मेरा सन्देश मेरे मरणालों को नहीं पहुंचा सकती। मैं इस बारे में खुद लिखूं। मेरे पत्र का मसविदा भाई ने बनाया। बापू ने उसे नापसन्द किया। कहने लगे, "बिलकुल सामान्य और संक्षिप्त होना चाहिए।"

आज माताजी आदि के पत्र मिले। बापू घूमते समय कहने लगे, "बम्बई सरकार के दफ्तर में तेरी साख जम गई मालूम होती है।" मैं समझी नहीं। पूछा, "कैसे?" कहने लगे, "इस मनस खत जल्दी दे दिये हैं, कुछ काटा-छांटा भी नहीं। उन्हें लगता होगा कि यह तो ठीक चलती है, हमारा काम भी कर लेती है। तेरे बिना बा को वे लोग यहां रख नहीं सकते।" बा बीमार रहती हैं। डाक्टर साथ है, इसका सरकार को बहुत सहारा है।

७ अक्तूबर '४२

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्म-दिन था। सवेरे प्रार्थना में बा उठीं। बापू ने आज केवल अनपका खाना खाने का निश्चय किया था। नाश्ते में संतरे-मौसम्मी का रस लिया। सवेरे प्रार्थना से पहले गरम पानी और शहद लिया, दोपहर को भी। ११ बजे टमाटर का रस, बादाम-काजू, गाजर-मूली पीसकर व किश-मिश भिगोकर साफ करके सामने रखीं। सब चीजें संतरे के छिलके की कटोरियां बनाकर उनमें सजाकर रखी थीं। सुन्दर लगती थीं। खाने की जगह पर राष्ट्रीय पताका और 'भारतमाता की जय' फूलों में लिखा बहुत सुन्दर लगता था।

मीराबहन, बा, भाई और मैंने बापू को सूत के हार पहनाये। बा के कहने से मैंने बापू को टीका भी लगाया। दोपहर अाध घंटे तक कताई का दंगल हुआ। बापू, भाई, मीराबहन और मैं चार कातनेवाले थे। मेरा नम्बर पहला आया।

शाम को बापू ने फल, काजू, बादाम और टमाटर का रस लिया। फलों की तश्तरी बहुत सुन्दर सजाई थी। बा ने भी आज दूध और फल ही खाये।

शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने 'प्रेमल ज्योति'[1] भजन गाया। सरोजिनी नायडू ने 'संध्याकालीन प्रार्थना का आह्वान'[2] नाम की अपनी कविता पढ़ी। मैंने और भाई

---

[1] Lead kindly light. [2] Call [illegible] Evening Prayer.

अहिंसाशीलो यः प्रभुबलदयाहीनकरणो
न कर्तुं किञ्चित्स प्रभवति विनालम्बनमिदम् ।
अनामयं मृत्युं विगतभयमासादयितुम-
प्रतीकारं धैर्यं न खलु नियतं तस्य भविता ॥९३॥

आकाशे सर्वविश्वं निजजनिजनकेनातपेनांशुमाली
पुष्णन्नास्ते परन्तु स्वनिकटमखिलं भस्मशेषं विदध्यात् ।
ईशत्वं तत्तथैव प्रभुसहतुलनां तावदेवाभ्युपेमो
यावत्सिद्धास्त्यहिंसा, न हि सकलविधामीशता-
माप्नुमस्तु ॥९४॥

बापू कहने लगे कि यदि नियमित करे तो बहुत हो जाय, मगर तू कभी तो करती है और कभी नहीं करती। मैंने कहा, "समय मिले, तो कर लेती हूं, पर कोई बात करनेवाले आपके साथ घूमते हों तब कैसे हो सकता है?" बापू कहने लगे, "हम अपने लिए बचाव कभी न ढूंढें। दूसरे के दृष्टि-बिन्दु को देखने की कोशिश करें। ऐसा करने से एक तरह की सरलता आ जाती है। ग्रहण-शक्ति बढ़ती है। यह चीज आ जाय, तो तेरे बहुत ऊंचा चढ़ने के रास्ते में से रुकावट निकल जाय।"

दोपहर को बापू के कमरे के कालीन वगैरा निकालकर सफाई करवाई। बहुत धूल निकली। बापू सफाई से बहुत खुश हुए।

बा की तबीयत थोड़ी अच्छी है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने बाहर के जगत के साथ कोई संबंध नहीं रखा। इसमें से मैं तो रस के घूंट ले रहा हूं।"

९ अक्तूबर '४२

चार-पांच रोज से सख्त गरमी पड़ती है। आज शाम को खूब बादल आये। ऐसा लगा, जोरों से पानी बरसेगा। मगर दो-चार छींटे आने के बाद बादल चले गये।

भाई रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। बापू ने उसमें मुझे चौपाइयां लिखने को कहा था। आज मैंने लिखना शुरू किया, मगर मेरी व्याकरण की किताब अभी पूरी नहीं हुई। इसलिए बापू ने रामायण लिखना छोड़ने को कहा। मैंने कहा, "पंद्रह मिनट की तो बात है। मुझे लिखना अच्छा भी लगता है, लिखने दीजिये।" बापू बोल उठे, "क्या तेरे पास पंद्रह मिनट की कोई कीमत ही नहीं है? और तुझे बहुत चीजें अच्छी लगती हैं। इसका अर्थ क्या? रस तो मैं भी बहुत चीजों में रखता हूं। मगर मैं अपने मन को रोक लेता हूं। इसके बिना आदमी कुछ भी कर नहीं पाता।"

१० अक्तूबर '४२

शाम को महादेवभाई की समाधि पर थोड़े फूल ले गये। स्वस्तिक बनाने को कम पड़े। मगर एक क्रॉस बन गया। बापू को वह बहुत अच्छा लगा। बापू ने ही बनाया था।

शाम को 'तस्मादपरिहार्येऽर्थे' न त्वं शोचितुमर्हसि' वाले श्लोक का मनन करने को कह रहे थे। अपने लोगों में जो दोष हैं, उन्हें हमें बिना रामता खोये खूबसूरती से सहन करना है, ऐसा बता रहे थे।

११ अक्तूबर '४२

सरोजिनी नायडू ने बापू से कल ईद की सेवैयां खाने को कहा था। बापू ने कहा, "मुझे खजूर खाने दो। हजरत मुहम्मद की तो वही खुराक थी न!" वह मान गईं। बा को पता लगा, तो पूछने लगीं, "आप कल फलाहार क्यों कर रहे हो?" बापू सोमवार का मौन ले चुके थे। लिखकर बताया, "ईद के कारण।" बा ने कहा,

धर्मोऽहिंसा भवति परमो वर्ष-पंचाशदन्ते
प्राप्तावस्था न मदनुभवे भावितव्यं ममासीत् ।
यत्रेदं मेऽस्ति परवशता विद्यते मत्सकाशे
नोपायोयं परिगणितवानस्म्यहिंसास्वरूपम् ॥९५॥

अहिंसा मदीया द्रुतिं संकटेभ्यः
प्रियाणामरक्षावतामुज्झितं च ।
विधातुं ह्यनुज्ञां न दत्ते कदाचिद्
वरं भीतिर्हिंसाद्वये मेऽस्ति हिंसा ॥
अहिंसा गुणाध्यापनं निष्फलं स्याद्
भयग्रस्तवृत्तेः पुरस्तान्मदीयम् ।
यथा दर्शनानि प्रकृष्टानि पश्ये-
रिति प्रोत्सहे लुप्तदृष्टिं न वक्तुम् ॥९६॥

: १५ :

सत्याग्रह में आत्महत्या ?

१३ अक्तूबर '४२

बा खत लिखना चाहती थीं। बापू ने उनके लिए कनु के नाम एक पत्र का और धनुष तकली पर लगानेवाले राल का मसाला मंगवा देने के बारे के पत्र का मसविदा बनाकर दिया। मैंने उसकी साफ नकल करके बा के दस्तखत लिये और पत्र भेजे। बा बहुत खुश थीं कि अब उत्तर में और पत्र आयेंगे।

१४ अक्तूबर '४२

ऋतु एकदम बदल गई है। गरमी बढ़ी है। फूल एकाएक मानो झुलस ही गये हैं, सैकड़ों एक साथ सूख रहे हैं।

बापू बा को आज दोपहर गीता सिखा रहे थे। रात को एक घंटा गुजराती सिखाते हैं, गाना भी। बा कह रही थीं कि पहले से मैंने इस तरह सीखा होता तो कितना सीख लेती। मगर बापू ने कभी इस तरह उन्हें समय दिया ही नहीं। अब भी वैसे रहें, तो अच्छा है।

घूमते समय बापू अपने जीवन की बातें बता रहे थे। कहने लगे, "किसीपर ही ईश्वर का इतना अनुग्रह होता होगा, जितना मुझपर हुआ है, नहीं तो वेश्या के घर जाकर कौन बच सकता है ? मगर मुझे तो वहां मन में किसी तरह का उद्वेग, शरीर में किसी तरह का संचार तक नहीं हुआ।"

मि० कटेली ने बाहर की हरी बाड़ में से निकलकर सामने की तरफ जाकर घूमने का रास्ता बड़ा करवा दिया है। उधर छाया रहती है, तो सबेरे उधर घूमने जाते हैं। बापू को कटेलीसाहब का अपने-आप उनके आराम का इतना ध्यान रखना अच्छा लगा। सिपाही लोग बगीचे की पगडंडियां भी अच्छी बना रहे हैं।

१५ अक्तूबर '४२

घूमते समय, जेल में उपवास की नौबत आये और जेल-अधिकारी जबरदस्ती खाना खिलायें, तो मनुष्य क्या करे, इस प्रश्न की चर्चा उठी। बापू बोले, "बाह्य उपायों को सोचना ही क्यों ? जिसकी सचमुच जीने की इच्छा उठ गई है, उसका शरीर अपने-आप गिर जायगा। अलंकार में कहूं, तो वह योगाग्नि पैदा करके उसमें भस्म हो जायगा। इतना प्रतिरोध करेगा कि उसमें टूट जायगा।" भाई ने कहा, "सिद्धांत में यह ठीक है, मगर कहांतक मैं खुद यह कर पाऊंगा, इसमें मुझे शंका है। तब बाह्य उपाय भी सोच रखना चाहिए न ?" बापू बोले, "जो बाह्य उपाय का ही विचार करता रहता है, वह अन्दर की अग्नि पैदा कर ही नहीं पाता। मगर कोई बाह्य उपाय का आश्रय ले और ऐसी हालत में आत्महत्या भी करे तो मैं उसे दोष नहीं दूंगा।"

चिराय तुल्यो ननु भीरुणाहं
हिंसामकुर्वं हि निजान्तरस्थाम
तदैव क्लृप्ता गुणभागहिंसा
यदारभे कातरतां स्म हातुम् ॥९७॥

विनीतभावोऽहमस्म्यहिंसा-
शास्त्रानुसन्धानपथानुसारः ।
तस्य प्रगाढानि विकम्पयन्ते
गूढानि मां मत्सहकारिणोऽपि ॥९८॥

भी पढ़ने का शौक खूब रखती हैं। इसका एक उपयोग यह भी है कि बा को सिखाते समय बापू के लिए थोड़ा दिल-बहलाव हो जाता है।

'टाइम्स' ने राजाजी के भाषण पर आज एक अग्रलेख लिखा है। ऐसा अखबार ऐसी चीज से फायदा उठाने का मौका भला क्यों छोड़नेवाला था!

: १६ :

बा की पहली सख्त बीमारी

१८ अक्तूबर '४२

आज बा को बुखार है। मलेरिया हो या शायद ब्रान्को निमोनिया। फेफड़ों में पुराने ब्रॉन्काइटिस (खांसी) वगैरा के निशान हैं। नया कुछ नहीं सुनाई देता। मगर इस तरह के ब्रॉन्काइटिसवाले फेफड़ों में नये निशान छुपे रहते हैं। नई बीमारी ढूंढनी कठिन हो जाती है। मि० कटेली ने डा० शाह को बुलाने को पूछा। मैंने और बापू ने पहले तो कह दिया कि आवश्यकता नहीं है। मगर बाद में मैंने कहा, "आपको लगे कि उन्हें बताना चाहिए तो भले बताइये।" मि० कटेली ने शाह को टेलीफोन किया। रात आठ बजे डा० शाह आये और तबीयत कैसी है, यह पूछकर चले गये। मुझसे कहने लगे, "मुझे लगा कि मुझे देखने आना चाहिए। मैं जानता हूं, मेरे लिए कुछ करने को रहता नहीं, मगर न आता तो मुझे चिन्ता लगी रहती। इसलिए आ गया।" मैंने कहा, "आप आ गये, यह अच्छा हुआ। बा इतनी कमजोर हैं कि उनके बारे में चिन्ता होती ही है।"

आज दशहरा है। सब कैदियों के लिए सब्जी बनाई। बाकी उन्हें कच्चा सामान दिया। उन्होंने अपना पकाकर खाया।

शाम की प्रार्थना में सरोजिनी नायडू ने कालीदेवी के बारे में अपनी लिखी एक कविता पढ़ी। अच्छी थी।

बा को सुबह १००.२ बुखार था तो भी बापू से पढ़ा। बाद में खाट पर जा लेटीं। उनके सिर में बहुत दर्द था। खांसी-जुकाम तो है ही।

दोपहर खाने-पीने में विधि-निषेध की बातें हो रही थीं। मैंने बापू से कहा, "आदमी कोशिश करे तो धीरे-धीरे काफी चीजें पचा सकता है; आदत पड़ने में थोड़ा समय लगता है सही। मिसाल के तौर पर अब मैं घर जाऊं या घर से आश्रम आऊं तो खाने के बारे में आदत बदलने में कुछ समय लगता है। दोनों जगह का खाना अलग किस्म का रहता है। मगर कुछ दिन पीछे उस खाने से कुछ तकलीफ नहीं होती।" बापू कहने लगे, "जल्दी से आदत बदल सकना गुण है। ऋतु बदलती

तर्केण विश्वं न समग्र-दिक्षु
प्रशास्यते, जीवनमन्तरस्थाम्
बिभर्ति हिंसा-प्रकृति ततोऽस्या
प्रद्योयतां ह्रस्वतमोऽहि पन्थाः ॥९९॥

हननबलमयात्मत्राणकार्येऽनवश्यं
मरणबलमपि स्यान्मानवे स्वप्रणाशे।
भवति च मनुजो यः सर्वथा मृत्युधीरो
प्रतनितुमपि नेच्छेदेष हिंसेङ्गितानि ॥१००॥

●